Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोभा

॥ ओ३म् ॥

मुरारि-दर्शन

अर्थात्

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध महान् नेता स्वर्गीय श्री पं० मुरारिलाल शर्मा का जीवन चरित्र

लेखकौ

स्व० श्री पं०
हरिशंकर शर्मा डी॰ लिट
आगरा

तथा

स्व० श्री पं०
श्रीराम शर्मा
आगरा

प्रथम संस्करण]

[अक्तूबर १९७२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पण

जिस प्रभु के लीलामय अनन्त सामर्थ्य के एक बिन्दु से समस्त ब्रह्माण्ड सञ्चालित हो रहा है और जिस करुणावरुणालय के न्याय नियम द्वारा कर्मवीर तपस्वी ब्राह्मण पं० मुरारिलाल शर्मा को जीवन में तप, त्याग, निर्भीकता और निष्काम कर्मयोग की शक्ति प्राप्त हुई उसही प्रभु के चरणों में यह तुच्छ भेट प्रस्तुत है।

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मवीर तपोनिष्ठ

श्री पं० मुरारिलाल शर्मा का जीवन व्रत

(कविवर श्री पं० जगन्नाथ के शब्दों में)

सपदि विलयमेतु राज्यलक्ष्मीः
उपरि पतन्त्वथवा कृपाण धाराः
परिहरतुतरां शिरः कृतान्तो
ममतुमतिर्न मनागपैतु धर्मात् ।

कविता—धन विभवरहे या नष्ट हों सम्पदाएँ
यम रुधिर कृपाणें पी रही हों घनेरी
यम परशु भले ही शीश मेरा उड़ा दे
विचलित न कभी हो धर्म से बुद्धि मेरी

अर्थ—राज्य लक्ष्मी, ऐश्वर्य और वैभव भले ही यकायक नष्ट हो जावें, अथवा तलवार की धाराएं ऊपर पड़ रही हों, यमराज भले ही सिर से धड़ को पृथक् कर दे, किन्तु मेरी बुद्धि कभी भी धर्म से विमुख न हो ।

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलम्ब के लिये क्षमा प्रार्थना

यद्यपि ऐसे कर्मवीर, तपस्वी की जीवनी आज से ४० वर्ष पहले ही छपजानी चाहिये थी अनेक कारणों से जिनमें उपेक्षा और प्रमाद ही को मुख्य मानकर हम यह समझते हैं, यह कार्य न हो पाया। वास्तव में ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों के जीवनों को छापने की ज़िम्मेवरी तत्तत्-प्रान्तीय आर्य-प्रति निधि सभाओं तथा सार्वदेशिक सभा की ही होनी चाहिये और इन सभाओं में एक ऐसा विभाग होना चाहिये जो महापुरुषों के जीवनों का संकलन करता रहे किन्तु आर्य समाज में इसका कोई प्रबन्ध नहीं है इसका खेद है। इस विलम्ब के कारण ही शर्मा जी की पूर्ण जीवनी छापने में, हम असमर्थ रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन में सैकड़ों ही शास्त्रार्थ भिन्न-भिन्न धर्मावलम्बियों से किये और हजारों ही व्याख्यान दिये। यदि इन सबका संग्रह किया होता तो १ बड़ा ग्रन्थ प्रकाशित हो सकता था। जिससे पाठकों को बड़ा ज्ञान होता और आर्य समाज के सिद्धांतों से परिचिति होती,-तथा आर्य समाज के साहित्य का संवर्धन होता। हमने बड़ा प्रयत्न किया, अनेक स्थानों को पत्र भी लिखे, समाचार पत्रों में सूचना भी छपाई कि जो सज्जन श्री० शर्मा जी के व्याख्यानों, शास्त्रार्थों, उनके लिखे ग्रन्थों तथा चित्रों को हमें भेजने का कष्ट करेंगे उनका हम [illegible]खित रूप में हृदय से आभार प्रदर्शन करेंगे किन्तु इसका थोड़ा [illegible]ी फल निकला, जिसे हमने चरित्र में भिन्न-भिन्न स्थानों पर समा-[illegible]ट कर दिया है। हम फिर भी आर्य जनता से तथा आर्य समाजों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अनुरोध करेंगे कि वो यथा शक्ति शर्मा जी के द्वारा किये गये शास्त्रार्थों का संक्षिप्त विवरण, उनके व्याख्यानों के विशेष सार, अथवा किसी भी दशा में लिया गया उनका कोई चित्र, हमें भेज सकेंगे तो हम परिशिष्ट प्रकरण में उसको अब भी सम्मिलित कर देंगे। इस प्रकार यह भी उन व्यक्तियों की आर्य समाज के प्रति बड़ी सेवा समझी जावेगी। दुःख इस बात का है कि अधिक समय बीतने के कारण उस समय के वृद्ध महानुभाव दिवंगत हो चुके जिनसे स्मृति रूप में ये बातें मालूम की जा सकती थीं किन्तु अब भी हम प्रयत्न शील होते हुए सबसे यह प्रार्थना करते हैं कि जितना जल्दी हो सके वृद्ध महानुभाव इस कार्य में हमें पूर्ण सहयोग देने की कृपा करें।

शर्मा जी के ऊपर गुरुकुल सिकन्दरावाद के संचालन का पूर्ण भार था, वे अकेले ही उसके स्तम्भ रूप थे, अतः प्रायः उनको उत्सवों में जाना पड़ता था, और उनका जीवन बड़ा व्यस्त रहता था जिससे जितना लिखना चाहते थे उतना न लिख पाते थे, फिर भी उन्होंने बहुत सी पुस्तकें लिखीं। इस्लाम धर्म पर उनका बहुत सा साहित्य है, वह भी पूर्ण रूप से हम एकत्रित नहीं कर पाये हैं। किन्हीं भी सज्जनों के पास उनकी लिखी कोई भी पुस्तकें हों तो हमें भेजने की कृपा करें। समय अनुकूल आने पर सम्भव हुआ तो पुस्तकों का एकत्रीकरण कर उनका प्रकाशन भी कर दिया जावेगा।

—:०:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री शर्माजी की विशेष गुणावली

१—अत्यन्त संयमी—सदाचार की मूर्ति इस गुण की विरोधी भी सदा प्रशंसा करते रहे।

२—अत्यन्त निर्भीक वक्ता—६ः ६ः हजार मुसलमानों में अकेले ही सिंह गर्जना के साथ शास्त्रार्थ करने वाले।

३—अद्भुत तार्किक तथा प्रत्युत्पन्न मति—प्रत्येक प्रश्न का तत्क्षण प्रतिपक्ष को युक्ति युक्त उत्तर देने वाले।

४—अत्यन्त स्वाध्यायशील—जो यात्रा के समय भी पढ़ते ही रहते थे।

५—कर्मयोगी—अकेले ही सारे जीवन गुरुकुल जैसी संस्था को चलाते रहे।

६—शास्त्रार्थ महारथी—मुसलमान, ईसाई, पौराणिक तथा सभी धर्मावलम्बियों को मुँहतोड़ उत्तर देकर यश श्रीः के प्राप्त करने वाले।

७—अत्यन्त ईश्वर भक्त—ईश्वर के भरोसे पर ही बड़ी २ आपत्तियों पर जिन्होंने विजय प्राप्त की।

८—अत्यन्त ऋषि दयानन्द भक्त—उन्हीं के प्रदर्शित मार्ग को सर्व श्रेष्ठ मानने वाले।

९—पूर्ण तपस्वी—जिन्होंने सारा जीवन ही तपश्चर्या में बिताया।

१०—निर्लोभ तथा त्यागी—जिन्होने लोक सेवा, जनहित तथा राष्ट्र सेवा के लिए सारी सम्पत्ति को तिलाञ्जलि देकर सारा जीवन ही अत्यन्त सादगी और त्याग के साथ बिताया।

११—अदम्य साहसी—जो कभी किसी भी विरोधी के सामने न झुके और साहस के साथ जिनका डंडा हमेशा पुजता ही रहा।

१२—हँसमुख—अपने प्रसन्न चेहरे और वाणी से व्याख्यान देते समय सर्व साधारण को मन्त्र मुग्ध करके प्रसन्न करने वाले।

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

भूमिका-प्राक्कथन-प्रकरण क्रम

(प्रथम परिच्छेद) किशोर काल

(द्वितीय परिच्छेद) खोज काल

(तृतीय परिच्छेद) प्रचार काल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(चतुर्थ परिच्छेद) प्रचारकाल

(पञ्चम परिच्छेद) गुरुकुल काल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(षष्ठ परिच्छेद) अभियान काल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राक् कथन

विपदि धैर्यमथाऽभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्-पटुता युधि विक्रमः ।
यशसि चाभि-रुचि र्व्यसनं श्रुतौ
प्रकृति-सिद्धमिदम् हि महात्मनाम् ॥
(राजर्षि भर्तृहरि)

आपत्काल में धीरज, अपने अभ्युदय में क्षमा शीलता, सभा में वाक्-चातुरी, संघर्ष में वीरता और निर्भीकता, कीर्त्ति में रुचि, और वेदाभ्यास का व्यसन, महापुरुषों में यह षट् संपत्ति स्वभाव-सिद्ध होती हैं ।

× × × ×

आर्य जगत् के प्रथम शास्त्रार्थ-महारथी महा मान्य श्री० पं० मुरारिलाल जी शर्मा को दिवंगत हुए (अब सन् १६६६ ई० में) चालीस वर्ष हो गये हैं । इतना अधिक समय बीतने पर उनका यशस्वी जीवन चरित्र अब प्रकाश में आ रहा है । हमारी ऐसी उदासीनतापूर्ण परिस्थिति अवश्य ही शोचनीय है ।

'शर्मा जी के सुयोग्य पुत्र श्री० पं० महेन्द्र देव शास्त्री अपने स्व. पितृवर्य की कीर्ति-कथाएँ अवश्य सञ्चित करते रहे, उसी सद्प्रयत्न का यह सुपरिणाम है कि शर्मा जी का जीवन चरित्र ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत हो रहा है ।

चरित्र के समुचित संकलन के लिए शास्त्री जी की दृष्टि रही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। शास्त्री जी ने अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आगरा के ख्यातिलब्ध साहित्य स्रष्टा पद्म-भूषण डा० हरिशंकर शर्मा कविरत्न का सहयोग आवश्यक समझा, इस निमित्त चरित्र की पाण्डुलिपि सामग्री उनको सौंपी। कविरत्न जी ने इस कार्य में मेरा सहयोग आवश्यक समझा अतः उनकी प्रेरणा स्वीकार करनी पड़ी। उनके निर्देशन में मैंने भी क़लम पकड़ी और उक्त सामग्री संकलन में मैंने भी सहयोग दिया। इन सब प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप ग्रन्थ का यह रूप पाठकों के सामने समुपस्थित हो रहा है।

स्वर्गीय शर्मा जी का पवित्र सत्संग मैंने विशेषकर सन् १९०६ई० और १९०७ ई० अर्थात् दो वर्ष किया। जब कि मैं सिकन्दराबाद गुरुकुल में उपदेशक श्रेणी का विद्यार्थी था, शर्मा जी का प्रचार-भ्रमण कभी बन्द तो होता ही न था, उनके साथ एक दो उपदेशक विद्यार्थी प्रायः रहते ही थे, मैं भी कई बार उनके साथ दौरों में गया हूँ। प्रेम की मात्रा उनके हृदय में विशेष थी। इस अध्ययन काल के आगे पीछे भी मैंने उनकी प्रेरक अमृतवाणी का रसपान किया है। मेरे जन्म स्थान बदायूँ गुरुकुल के उत्सवों पर वे प्रायः पधारा करते थे, स्वा० दर्शनानन्द जी सरस्वती का प्रेम उन्हें वहाँ खींच लाता था।

उस ज़िले के उझियानी आदि क़स्बों में उनकी तर्क युक्तियां खूब सुनी हैं। आम जनता का अज्ञान मिटाने के लिए या उसे तृतीय नेत्र देने के लिए वे एक सूत्र बताते थे, "सामने वालों से पूछो यह क्यों, यह कैसे, यह किसलिये।" मनोरञ्जन और मंद मुस्कान-यह दो गुण उनसे कभी जुदा न होते थे।

प्रसिद्ध पादरी ज्वालासिंह से विनोद में कहते थे, "अजी ठाकुर साहब! घर में वापस आ जाओ, क्यों बाहर भटक रहे हो?" शर्मा जी की ऐसी ज्वलन्त कथायें सैकड़ों हैं। जहाँ वे संघर्ष-वीर थे, वहाँ आनन्द-प्रिय भी उतने ही थे।

लगभग सन् १९१२ ई० की बात है कि शर्मा जी बम्बई जाते हुए बड़ौदा रुके, मैं वहाँ राज्य के शिक्षा विभाग में था, प्रसिद्ध वक्ता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी और मैं एक ही जगह रहते थे। श्री शर्माजी उस प्रसंग पर जिस स्नेह से मुझसे मिले, उनकी उस स्वभाव-सिद्ध प्रेममुद्रा का चित्र मेरे नेत्रों में अब भी कभी कभी झाँकी मार जाता है।

आज से लगभग ८ वर्ष पूर्व मैं प्रातः स्मरणीय दर्शनानन्दजी का जीवन चरित्र 'दर्शनानन्द-दर्शन' लिख रहा था, भक्ति प्रेरित होकर तब उसमें स्व० शर्माजी का चित्र देने की मेरी विशेष इच्छा हुई, चित्र सहज में मिल सके—इसके लिये स्वर्गीय के सुपुत्र पं० महेन्द्र देव शास्त्री का मैंने याद किया और उन्हें देहली पत्र लिखा। वे आगरा भी आया करते थे, उन्होंने अपने कारखाने में ब्लॉक बनवा कर भेजने की कृपा की। प्रेम की मात्रा स्वर्गीय शर्मा जी की दूसरी पीढ़ी में भी पर्याप्त आई है।

लगभग सन् १९३१ की बात है—मैं दिल्ली गया था, तब अकस्मात् शर्माजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री देवेन्द्रनाथ शास्त्री से मेरी भेंट हो गई, वे आग्रह-पूर्वक मुझे अपने बन्धु परिवार में ले गये और बड़े ही प्रेम भाव से मेरा आतिथ्य किया। जब देवेन्द्र जी की आयु १०-१२ वर्ष की थी तब वे गुरुकुलीय ब्रह्मचारी थे, मैं उन्हीं दिनों उपदेशक श्रेणी में था तभी से यह स्नेह सूत्र जुड़ा हुआ था। इस प्रकार शर्मा परिवार से मेरा थोड़ा बहुत सम्पर्क चला आ रहा था।

महर्षि दयानन्द के बाद की पीढ़ी में अनेक उच्चकोटि के विद्वान् थे जिनमें 'शर्मा' संज्ञा से ६: विद्वान् प्रसिद्ध थे। १—पं० भीमसेन शर्मा (ऋषि दयानन्द के शिष्य), २—पं० कृपाराम शर्मा (जगरानवी) ३—पं० भूमित्र शर्मा उपदेशक, ४—पं० मुरारिलाल शर्मा, ५—पं० भीमसेन जी शर्मा आगरा वाले (पीछे से स्वा० भास्करानन्द सरस्वती) और ६—कविता कामिनी कान्त श्री पं० नाथूराम जी शर्मा 'शंकर'।

पं० मुरारिलाल जी की 'शर्मा' संज्ञारूढ़ हो गई थी। केवल 'शर्माजी' कहकर ही समकालीन मित्र मंडली और अनेक आर्य बन्धु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें संबोधन देते थे, अतएव इस चरित्र चित्रण में उनका नामोल्लेख 'शर्मा' ही किया है।

स्व० शर्माजी का यह चरित्र ग्रंथ कहता है कि वह कितना सर्वस्व अर्पण करने वाले, कितने निर्भीक, कितने धर्म परायण और किस श्रेणि के कर्मवीर योद्धा थे।

उदयाचल को भासित करता और हँसता हुआ—वह जीवन प्रभात इतनी तीव्र गति से संध्या में विलीन हो जायेगा यह कौन जानता था, वह रवि-रश्मि जहाँ से गतिमती बनी थी वहीं को लौट जायेगी यह किसे खबर थी। विधाता के खेलों का पार किसने जाना है, जो होना होता है वह होकर ही रहता है।

कीर्त्तिमान् शर्माजी की जो वेगवती कार्यावली इस ग्रंथ में ग्रथित की गई उसे मग्नध्यान से पढ़ने वाले स्वाध्याय शील व्यक्ति के मन में नव-स्फूर्ति जागृत हुए बिना न रहेगी। उसे कर्मक्षेत्र में उतरने का उत्साह अवश्य मिलेगा। भारतोत्थान के लिये ईश्वर ऐसे नररत्न बारंबार उत्पन्न करे इस आश्वासन के साथ हम लेखनी को विराम देते हैं।

स जातो येन जातेन, याति देशः समुन्नतिम्।

आगरा, द्वितीय
श्रावणी, पूर्णिमा
संवत् २०२३ वि०
३०-८-१९६६

निवेदक :
विदुषां वशंवदः श्रीराम शर्मा "वैदिक"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री० पं० नरदेव जी शास्त्री के शब्दों में

आज से लगभग ५७ वर्ष पूर्व स्व. श्री० पं० नरदेव जी शास्त्री वेद तीर्थ ज्वालापुर ने "आर्य समाज का इतिहास" लिखा था। उसके दूसरे भाग में स्व. श्री० पं० मुरारिलाल जी शर्मा का संक्षिप्त जीवन भी छापा है। पिष्ट पेषण के भय से लेख की कुछ विशेष बातें ही लिख रहे हैं। श्री० पं० नरदेव जी शास्त्री के हृदय में स्वर्गीय श्री० पं० मुरारिलाल जी शर्मा के प्रति अगाध श्रद्धा थी और वे उनकी सम्पूर्ण जीवनी ही लिखना चाहते थे किन्तु लिख नहीं पाए।

उनके लेख का सार इस प्रकार है

१—पं० मुरारिलाल शर्मा तपस्वियों के प्रसिद्ध वंश में पैदा हुए थे। वंश परम्परा से घर का एक पुरुष सदा तप ही किया करता था।

२—आर्य समाज के प्रचार के कारण जो क्लेश और यातनाएँ आपने सही हैं उनका इस छोटे से चरित्र में वर्णन होना सम्भव नहीं है इस लिये वे अद्‌भुत कथाएँ बड़े चरित्र में लिखी जावेंगी।

३—शर्मा जी के प्रचार कार्य से ज़िला बुलन्द शहर में इतनी जागृति हुई कि केवल आर्य समाज सिकन्दरा बाद के ही २४०० सदस्य बन गये थे। जो भारत की किसी भी समाज के नहीं थे।

४—आपके ही धर्मोपदेश और तपस्वी जीवन से हज़ारों पापलिप्त मनुष्य तथा हज़ारों चोर डांकू आज आपके शिष्य बनकर धार्मिक बन गये।

५—सिकन्दराबाद, देहली, सहारनपुर, किरठल, थाना भवन, मुंगेर, बुलन्द शहर, अलीगढ़, फ़रख़ना, ख़ुर्जा आदि के प्रसिद्ध सैकड़ों शास्त्रार्थ आपने ही किये हैं और विजय श्रीः प्राप्त की है।

६—इसमें कुछ अत्युक्ति नहीं कि आपने ६:-६: हज़ार मुसलमानों के बीच में बैठकर एकान्त जंगल में निर्भय शास्त्रार्थ किये हैं, जिनका लोहा दूर-दूर तक के मुसलमान अब-तक मानते हैं।

७—आप आर्य प्रति निधि सभा के प्रधान रह चुके हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

मुरारि-दर्शन

अर्थात्

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध महान् नेता स्व० श्री पं० मुरारिलाल शर्मा

का

जीवन-चरित्र

× × × ×

जयन्ति ते सुकृतिनो रस सिद्धाः कवीश्वराः,
नास्ति येषां यशः काये जरा मरणजम् भयम्।

× × × ×

प्रथम परिच्छेद

जन्म-भूमि और जन्म-वृत्त

पं० मुरारिलाल शर्मा का जन्म सन् १८६२ के श्रावण मास में, सप्तमी के दिन, ग़ाज़ियाबाद में हुआ था। इनके पिता श्री पं० रामशरण जी उक्त नगर में एक समृद्ध पुरुष माने जाते थे। पण्डित मुरारिलाल शर्मा के प्रपितामह अर्थात् परबाबा इस नगर के एक मान्य तपस्वी व्यक्ति थे। उन्होंने हरनद के किनारे १२ वर्षों तक एकान्त में तप किया था और समाधि द्वारा अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था। इसीलिये अब भी यह वंश 'तपस्वी वंश' कहा जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० मुरारिलाल शर्मा के पिता का नाम पण्डित रामशरणजी और माता का नाम श्रीमती हरदेवी था, जो सिकन्दराबाद के चौधरी लक्ष्मण दास की पुत्री थीं। इस पुत्री के अतिरिक्त चौधरी जी के और कोई सन्तान न थी, इसलिये उन्होंने अपने दौहित्र (धेवते) मुरारिलाल जी को गोद ले लिया। अतः वे बाल्यावस्था से ही अपने नाना के पास सिकन्दराबाद रहने लगे। ग़ाज़ियाबाद में अब इस वंश का कोई व्यक्ति नहीं है।

अध्ययन और वह वातावरण

दस वर्ष की अवस्था में, मुरारिलाल जी को एक मुसलमानी मक़्तब में पढ़ने भेजा गया। उस समय सिकन्दराबाद में न तो संस्कृत की पाठशालाएँ थीं और न अँग्रेज़ी के स्कूल खुले थे। मुसलमानी शासन का अन्त और अंग्रेज़ी राज्य का प्रारम्भ था। भारतवर्ष पर उर्दू फ़ारसी एवम् अरबी की छाप लगी हुई थी। वेद-शास्त्रादि के पण्डित ढूँढने से ही कहीं मिलते थे। हाँ, पुराणों के ज्ञाता और पत्रा देखने वाले ज्योतिषियों के दर्शन अवश्य हो जाते थे। संस्कृत पढ़ना भिक्षावृत्ति का द्योतक समझा जाता था। उर्दू पढ़ने और मौलवियों के सहवास से हिन्दू लोग मुसलमानी रंग में रंग गये थे। भाषा और भाव तो प्रायः बिगड़ ही चुके थे. साथ ही भेष भी मुसलमानी हो गया था। मुल्ला लोग मस्जिदों में या अपने घरों में पढ़ाया करते थे। ग़दर का ज़माना बीता ही था, सिकन्दराबाद खंडहर की दशा में था। क्योंकि ग़दर के समय बुलन्द शहर ज़िले में, सिकन्दराबाद के समान और कोई नगर नहीं लुटा था। लूटने के साथ ही लुटेरों ने मकानों को भी नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। अस्तव्यस्त शासन-सत्ता होने के कारण राज्य की ओर से बच्चों की शिक्षा का कोई प्रबन्ध न था। मुसलमानों के दीर्घ कालीन शासन में संस्कृत की घोर उपेक्षा हो चुकी थी। ब्राह्मणों का ह्रास पराकाष्ठा को पहुँच चुका था, क्योंकि उर्दू फ़ारसी आदि पढ़ने की ओर तो उनकी प्रवृत्ति ही नहीं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। संस्कृत पढ़ाना मुसलमान शासकों ने पहले ही बन्द कर दिया था। ऐसी दशा में कोई पढ़ता तो क्या पढ़ता? फिर भी वंश-परम्परा से कुछ ब्राह्मण वंश पुरोहिताई के साथ संस्कृत का थोड़ा बहुत अभ्यास करते चले आते थे। पूजा पाठ कराने के लिए उन्हें कुछ संस्कृत पढ़नी पड़ती थी। ऐसे व्यक्तियों में एक व्यक्ति पं० भोलानाथ जी थे जो चौधरीजी के घर के सामने ही रहते थे। बड़े साधुस्वभाव के थे। ये पण्डित जी दूर-दूर जाकर पुराणों तथा तुलसीकृत रामायण की कथा कहा करते थे। उनकी वाणी में रस और शैली में माधुर्य था, अत एव कथा आदि कहने से ही उनको पर्याप्त धन प्राप्त हो जाता था। मुहल्ले के बालक उनसे पूजा पाठ एवम् स्नान ध्यान की विधि सीखते थे और बूढ़े लोग पुराण सुनते रहते थे। बूढ़ी स्त्रियां उनसे जन्म-कुण्डलियाँ बनवातीं और अपनी हस्तरेखाएँ दिखातीं थीं, इस प्रकार प० भोलानाथ अपना निर्वाह करते थे ' प्रातःकाल वे पूजापाठ की सामग्री लेकर अपने बच्चों के साथ सामने के चौंतरे पर जम जाते। पहले पूजा करते फिर मिलजुल कर रामायण की चौपाइयाँ गाते थे उनके इस कृत्य से सारे मुहल्ले में आनन्द छाया रहता था।

आज ऐसे लोग सिकन्दराबाद में दिखाई नहीं देते। समय के चक्र से सारी बातें न जाने किस अनन्ताकाश में विलीन हो गईं। पहले कहा जा चुका है कि चौधरी जी ने मुरारिलाल जी को मकतब में पढ़ने बिठा दिया था, वहाँ उर्दू, फारसी के पढ़ने के साथ साथ वे पण्डित भोलानाथ जी से पूजापाठ की विधि भी सीखा करते थे। थोड़े ही समय में उन्होंने सन्ध्यावन्दन की विधि भी सीख ली। शिवजी का मन्दिर समीप ही था वहीं जाकर मुलारिलाल जी प्रतिदिन गायत्री का जप, सूर्य का ध्यान तथा शिव जी का पूजन किया करते थे। घन्टों खड़े रह कर जप और भक्ति पूर्वक शिवार्चन करना उनका दैनिक कार्यक्रम था। खाली समय में वे पं० भोलानाथ जी से पुराणादि सुना करते थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौधरी लक्ष्मणदास जी भी बड़े शिवभक्त थे। अपने दत्तक पु[illegible] की धर्म कर्म में ऐसी भक्ति देख कर उनको परम हर्ष होता था। इस प्रकार पढ़ते लिखते मुरारिलाल जी की बाल्यावस्था बीती और वे १७-१८ वर्ष के हो गए।

यौवन काल

'ग़दर' के अनन्तर जब चारों ओर तथाकथित शान्ति स्थापित हो गई, शासन यथापूर्व चलने लगा, तब बुलन्दशहर में अंग्रेजी भाषा का एक स्कूल खुला। चौधरी जी ने विचारा कि मुरारिलाल को यदि थोड़ी अंग्रेज़ी भी आजाय तो बहुत अच्छा हो, यह विचारकर उनको उस अंग्रेजी स्कूल में प्रविष्ट करादिया गया किन्तु मुरारिलाल जी को अंग्रेजी पढ़नेकी ओर रुचि न हुई क्योंकि उस समय अंग्रेजी पढ़ना महत्व की बात नहीं समझी जाती थी। सरकारी पदों पर भी उर्दू पढ़े लोगों की ही नियुक्ति होती थी। उर्दू का पर्याप्त मान था। फलतः अंग्रेज़ी पढ़ने में मुरारिलाल जी का मन नहीं लगा। वे प्रायः सिकन्दराबाद आते जाते रहते और उर्दू फ़ारसी के साहित्य का ही अध्ययन करते थे।

यौवनावस्था में ही मुरारिलाल शर्मा का विवाह ज़िला बुलन्दशहर के क़स्बे शिकारपुर के निवासी चौधरी लच्छूसिंह जी के परिवार में हुआ था। चौधरी जी की धर्मपत्नी का नाम महतोदेवी था। चौधरी जी की चार सन्तानें थीं। दो पुत्र तथा दो पुत्रियाँ। पुत्रों में से एक का नाम परशादीलाल तथा दूसरे का बलदेव सिंह था। बड़ी पुत्री का नाम जानकी देवी था। जिनका विवाह पं० मुरारिलाल जी के साथ हुआ था। चौधरी जी बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे किंतु आर्थिक दृष्टि से साधारण स्थिति के थे। ७० बीघे ज़मीन में ही उनकी काश्त होती थी। उनकी मृत्यु ७० वर्ष की अवस्था में हुई। अब इस परिवार में उनके प्रपौत्र तथा उनकी संतानें हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

ऋषि दयानन्द का बुलन्द शहर में पदार्पण

मुरारिलाल जी सत्यार्थ प्रकाश की खोज में—

उन्हीं दिनों ऋषिदयानन्द बुलन्द शहर की ओर पधारे। उन्होंने 'कर्णवास' आदि स्थानों में अधिक भ्रमण किया, जिससे उनकी ख्याति सारे ज़िले में फैल गई। कट्टर पौराणिक लोग स्वामी जी के दर्शन करके आते तो बड़ी विचित्र बातें सुनाते, वे कहते—साधु क्या है दानव मूर्ति है: वह बोलता है तो मानो गरजता है। चार वेद छः शास्त्र, अठारह पुराण सब उसके जिह्वाग्र हैं। बेहद खाता है, बेहिसाब बोलता है, पुराणों का कट्टर दुश्मन है, छिपा हुआ ईसाई है, मल्का विक्टोरिया का जासूस है, दुनिया को भ्रष्ट करता फिरता है। कहता है—पुराण मिथ्या हैं, राम, कृष्ण, शिव, पार्वती आदि की मूर्तियों का पूजन पाखण्ड है। मृतक श्राद्ध करना ......भूल है। उससे कोई पूछे कि पूजा पाठ, श्राद्ध आदि तो सब मिथ्या हैं। तब सत्य क्या है। दूसरा कहता—अरे आखिर तो कलियुग है न, कलिमहाराज का भी तो कुछ प्रभाव होना ही चाहिये, अब ऐसे ही मनुष्य पैदा होंगे जो धर्म कर्म को पाखण्ड बतायेंगे। तीसरा कहता—भाई चाहे कुछ हो—है बड़ा मोटा, उसकी तरफ देखने में भी बड़ा डर लगता है, उससे बोलने में बुख़ार सा चढ़ने लगता है। उस जैसा भयंकर आदमी गंगा यमुना के बीच में हमने तो देखा नहीं। बड़े-बड़े पण्डित, मौलवी, अंग्रेज, किरानी पुरानी सभी लोग लट्ठ लेकर उसके पीछे पड़े हैं, पर वाहरे साधु, किसी को कुछ समझता ही नहीं। क्या ईंट, क्या पत्थर, क्या लाठी, क्या धूल, सभी कुछ खाने को तय्यार है परन्तु अपने मत से तनिक भी विचलित नहीं होता। उसका नाम सुना है 'दयानन्द स्वामी' है। उन दिनों आबाल वृद्ध इसी प्रकार स्वामी जी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की चर्चा किया करते थे। पन्डे, पुजारी, मुल्ला-मौलवी, ज्योति
आदि रात-दिन स्वामी दयानन्द को कोसते थे।

सिकन्दराबाद के पौराणिक पण्डितों में 'आर्य समाज'
क्रिस्टान कहा जाता था, क्योंकि आर्य समाज के प्रचार से इन्हीं लो
की अपनी जीविका का बन्द होने का डर रहता था। मूर्ति पूजा
खण्डन से पुजारियों की आजीविका जाती थी, श्राद्ध के खण्डन
क्वार के १५ दिनों के माल छकने बन्द होते थे, पोथी-पत्रे के खं
से ज्योतिषी का पाखण्ड खुल जाता था। भला अपनी खेती उजड़
कौन देख सकता है। इन सभी को स्वामी जी के नाममात्र से
आ जाता था। यदि कोई भूला भटका आर्यसामाजिक पुरुष कहीं
यहाँ आ निकलता था तो उसके पीछे शहर की भीड़ ऐसे लग जा
थी जैसे रीछ के तमाशे को देखने को लड़के पीछे लग जाते हैं
सिकन्दराबाद में उस समय न तो कोई आर्यसमाजी था और
कोई आर्य समाज की पुस्तक ही मिलती थी।

एक दिन की बात है कि पं० भोलानाथ जी तुलसीकृत रामाय
की कथा सुना रहे थे। प्रसङ्गवश पण्डित जी ने हनुमान् का व
किया और कहा कि वह बड़ा बलवान् ब्रह्मचारी था, उसको चा
वेदों का ज्ञान था, वह नीति का ज्ञाता था परन्तु बन्दर था। उस
लम्बी पूँछ थी, वह पवनसुत था और वायु में उड़ जाता था।
वर्णन को सुन कर दो तीन श्रोताओं ने जो स्वामी दयानन्द जी
सत्संग कर चुके थे—कहा कि पण्डित जी, यह तो असम्भव बात
कि बन्दर होकर कोई चार वेद पढ़ा हो, पशु होकर वह चारों
कैसे पढ़ गया? बिचारे भोलानाथ जी पहले तो चुप हो गये,
बोले—कैसे पढ़ गया यह तो गोस्वामी जी ने लिखा नहीं है, उनसे
पूछो मैं तो चौपाइयों का अर्थ करता हूँ। युवक मुरारिलाल शर्मा
इस चर्चा को सुन रहे थे, उनके हृदय में भी अनेक शंकाएँ उत्प
हुईं। परन्तु उस समय कुछ नहीं बोले। कथा समाप्त होने पर एक
में उन्होंने पं० भोलानाथ जी से कहा कि 'पण्डित जी पुराणादि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझको भी अनेक शंकाएँ उत्पन्न होती हैं परन्तु उनका समाधान नहीं होता, इसके लिए क्या करना चाहिये ? पं० भोलानाथ जी बड़े समझदार थे, बोले—भाई अपनी-अपनी श्रद्धा अपने-अपने साथ है। इसीलिए श्रद्धावान् मनुष्य को बहुत-सी असम्भव बातें भी सम्भव प्रतीत होती हैं किन्तु सच पूछो तो इन बातों का पता स्वामी दयानंद ने पाया है। यदि तुमको सत्य की ही खोज करनी है तो स्वामी जी का बनाया 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रन्थ पढ़ लो, तब सत्यासत्य का भेद खुल जायेगा। मुरारिलालजी को पण्डित जी से 'सत्यार्थ प्रकाश' का नाम तो मालूम हुआ किन्तु यह ग्रन्थ कहाँ मिलेगा यह पता न चला। इसलिए इसकी खोज में मुरारिलाल जी उन पण्डित जी को साथ लेकर मेरठ पहुँचे और वहाँ से 'सत्यार्थ प्रकाश' की एक प्रति प्राप्त की। और बड़ी उत्सुकता पूर्वक उसको आद्योपान्त पढ़ डाला। फलतः इस विचित्र पुस्तक ने उनके हृदय में क्रांति उत्पन्न करदी और पौराणिक भावुकता दूर होने लगी।

इस ग्रंथ ने आँखें ही खोल दीं

यह निश्चित है कि कोई कितना ही कट्टर पौराणिक क्यों न हो परन्तु 'सत्यार्थ प्रकाश' के एक बार पढ़ने मात्र से उसके हृदय में परिवर्तन हुए बिना नहीं रहता। दुनिया के मतमतान्तरों की वास्तविकता 'सत्यार्थ प्रकाश में स्पस्ट दीखने लगती है। भले ही कोई इस ग्रन्थ को खण्डन की दृष्टि से पढ़े परन्तु पढ़ने के उपरान्त उसके हृदय में एक सच्ची ज्योति जगे बिना नहीं रहती। ऋषि दयानन्द ने जिन अकाट्य तर्क युक्ति और प्रमाणों से सिद्धांतों को सिद्ध किया है उनका असत्य सिद्ध करना अपनी आत्मा को धोखा देने के समान है। इसीलिए सत्यान्वेषक पं० मुरारिलाल शर्मा ने इसे आद्योपांत पढ़ने के अनंतर निश्चय कर लिया कि मूर्तिपूजन और श्राद्धादि कर्म वैदिक नहीं हैं। इसलिए मूर्ति पूजा से उनकी श्रद्धा हट गई और अपने आसपास इसका प्रचार भी प्रारम्भ कर दिया। प्रारम्भ में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका परिणाम उनके लिए बड़ा कष्टदायक रहा। परन्तु दृढ़ विश्वासी, परोपकार-व्रती शर्मा जी इन आपत्तियों के कारण विचलित नहीं हुए। अपने परिवार पर घोर संकट आने पर भी उन्होंने उसकी रत्ती भर परवाह न की और इसी दृढ़ता ने उनको आदर्श पुरुष बनाया।

सिकन्दराबाद में क़ुरान-पुराण आदि के खण्डन का क्षेत्र

न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

धार्मिक विचारों में भारतवर्ष की आज जो परिस्थिति है वह आज से पचास वर्ष पूर्व न थी। लोग पुराने विचारों से ऐसे जकड़े हुए थे कि अपने विरुद्ध एक अक्षर भी सुनना सहन न करते थे। ऐसे भी मनुष्य विद्यमान थे जो पाखण्ड को पाखण्ड ही समझते थे परन्तु उनकी आत्मा में इतना बल नहीं था, कि वे पाखंड के विरुद्ध आवाज़ उठाते। क्या हिन्दू क्या मुसलमान सभी पाखण्ड के जाल में फँसे हुए थे। सिकन्दराबाद में आधी आबादी हिन्दुओं की और आधी मुसलमानों की थी। मुरारिलाल शर्मा 'सत्यार्थ प्रकाश' का अध्ययन कर मुसलमानों के साहित्य की ओर झुके। उन्होंने क़ुरान शरीफ़ के 'सही बुख़ारी'—'सही मुस्लिम' आदि अनुवादों को देखा और धीरे-धीरे ईसाई-मुसलमानों के मज़हबों का भी खण्डन करना प्रारंभ कर दिया जिससे उनमें भी खलबली मच गई। मुसलमान अपने मज़हब के विरुद्ध सुनने के अभ्यासी न थे। वे इस्लाम और उसके प्रवर्तक को अति पवित्र समझते थे, उन्हें क्या मालूम था कि उनके ही ग्रन्थों में तर्क और प्रकृति के विरुद्ध सैकड़ों 'ऐसी बातें' भरी पड़ी हैं जिनका सत्य सिद्ध करना सर्वथा असम्भव है, इसलिए जब पंडित जी ने मुसलमानों को ललकारा कि इस्लामी मज़हब कोई 'सत्य धर्म

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है और न वेदों की तरह यह परमात्मा का ज्ञान है, तब चारों ओर से मौलवियों के आक्रमण प्रारम्भ हो गये।

रात-दिन सिकन्दराबाद में आलिमों का जमाव होने लगा। मुसलमान बड़े आश्चर्य से शर्मा जी की 'तक़रीर सुनते और जहाँ-तहाँ से अपने आलिमों को बुलाकर शास्त्रार्थ के लिए तत्पर होते थे। परन्तु पंडित जी की अकाट्य युक्तियों के आगे किसी की कोई बात न चलती थी। इधर पौराणिक दल भी अचेत नहीं था, शर्मा जी रात-दिन पुराणों की धज्जियाँ उड़ाते थे जिसके कारण पौराणिकों का विरोध में खड़ा होना स्वाभाविक था। यद्यपि पौराणिक जन पंडित जी से शास्त्रार्थ करने के लिए तैयार न होते थे, तथापि उन्हें तरह-तरह की हानियाँ पहुँचाने के लिए षडयन्त्र रचते रहते थे। अंत में जो घृणित कार्यवाही की गयी उसे स्मरण कर आज भी रोमांच खड़े हो जाते हैं, परन्तु शर्माजी उन कठिन परीक्षाओं में भी पूर्ण रूप से उत्तीर्ण हुए। इन कष्ट-कथाओं को सिकन्दराबाद के लोग आज तक याद करते हैं, एक घटना इस प्रकार है।

विरोधियों द्वारा संकटों पर संकट

नाना धेवतों में फूट डालदी धेवता बेख़बर

पाठक जानते हैं कि चौ॰ लक्ष्मणदास जी बड़े शिवभक्त थे और अपनी वृद्धावस्था में उन्होंने अपने धेवते मुरारिलाल शर्मा को गोद लिया था। उनको अपने इस पुत्र के प्रति बड़ा स्नेह था और शर्मा जी भी बड़े पितृभक्त थे। सदैव अपने पिता (नाना) की सेवा करना और उनकी आज्ञा पालन करना उनका मुख्य कर्तव्य था। पर, विरोधियों ने इन पिता-पुत्र में विरोध कराने का षडयंत्र रचा और एक दिन चौधरी जी से जाकर कहा कि आपका पुत्र ईसाई हो गया है, देवी-देवताओं का खण्डन करता फिरता है, न पिण्डदान मानता है न श्राद्ध। या तो आप इसे रोकिये नहीं तो झगड़ा होने में संदेह नहीं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। चौधरी जी बड़े सरल स्वभाव के थे, उन्होंने इन बातों को सत्य समझ लिया। धीरे-धीरे उनके कानों में ऐसी ही अनेक बातें आने लगीं। चौधरी जी के एक मित्र ने कहा कि आज एक मुसलमान ने बहस में आपके लड़के के मुँह पर थूक दिया। दूसरे ने कहा कि आज उसने एक मुसलमान को हिंदू बनाकर उसके हाथ का मीठा खा लिया, तीसरे ने कहा कि आज वह शहर के पूर्व की ओर बनी चामुण्डा देवी को उखाड़कर फेंक आया। अभिप्राय यह कि जो आता वह इसी तरह की कोई न कोई मनगढ़न्त बात सुनाता जिससे चौधरी जी के हृदय को ठेस पहुँचे।

यद्यपि शर्मा जी के प्रतिदिन के वेदशास्त्रों के स्वाध्याय और नियमपूर्वक संध्या वन्दन करने से चौधरी जी को यह तो विश्वास न हुआ कि मुरारिलाल क्रिस्टान हो गया है तो भी मूर्ति-पूजा मृतक-श्राद्ध आदि के खण्डन से यह बात उनके हृदय में बैठ गई कि वह नास्तिक हो गया है, अतः मेरी मृत्यु हो जाने पर मुझे भी यह जलदान न देगा। फलतः अपने पुत्र के प्रति उनके हृदय में वह अपत्य-स्नेह न रहा जो पहले था। कुछ वृद्धावस्था और कुछ मानसिक चिन्ता ने उन्हें जर्जर कर दिया और वे बीमार पड़ गये। शर्मा जी ने अपने पिता की सेवा करने की प्रबल इच्छा प्रकट की, अनुनय विनय की, बहुत चाहा कि अंत समय में मैं अपने पिता के चरणों में ही रहूँ, परन्तु चौधरी जी ने उन्हें ऐसा करने का अवसर न दिया।

असह्य वियोग में नाना का स्वर्गवास

चौधरी जी ने मुरारिलाल को बुलन्दशहर इसलिये पढ़ने भेज दिया था कि उनका देहांत होने पर क्रिया-कर्म में बाधा न पड़े। पिता की आज्ञा से शर्मा जी रोते हुए घर से विदा हुए। बुलन्दशहर जाकर पढ़ने में मन न लगा और सोचने लगे, कि जिस पिता ने २० वर्षतक बड़े स्नेह से मेरा लालन-पालन किया है अब मैं अभागा उनकी मृत्यु के समय भी उनके दर्शन न कर सकूँगा, ऐसा मैंने क्या

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराध किया है। कभी अपने भाग्य को कोसते, कभी अपनी परिस्थिति पर आँसू बहाते, पर करते क्या विवश थे। शनैः शनैः चौधरी जी का अंतिम समय आ पहुँचा। उन्होंने अपने मित्र और सहचरों को बुलाकर स्नेह से कहा कि शास्त्रों की आज्ञा के अनुसार पुत्र के बिना मनुष्य की सद्गति नहीं होती परन्तु हा! मैं अभागा आज पुत्रवान् होकर भी पुत्र-विहीन जा रहा हूँ। भगवान् की लीला अपार है, ऐसा कहते हुए उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे। जब हृदय शांत हुआ तब उन्होंने सबसे कहा कि मेरी और्ध्व-दैहिक क्रिया सनातन धर्म की विधि से की जावे। मुरारिलाल इसमें हस्ताक्षेप न करे, इतना कहकर उन्होंने सबसे विदा मांगी और प्राण छोड़ दिये, कहना न होगा कि सम्बंधियों ने पिण्ड दान आदि सब क्रिया विधि पूर्वक संपन्न की परंतु शर्मा जी को अपने पिता के दर्शन तक भी न करने दिये। इस प्रकार मुरारिलाल की अनुप स्थिति में पिता चौधरी लक्ष्मणदास जी का स्वर्गवास हुआ।

तृतीय परिच्छेद

प्रचार की अग्नि प्रचण्ड ही होती गई

पिता के परलोक-गमन से पं० मुरारिलाल शर्मा अनाथ के समान हो गए। उनका कोई सगा भाई न था जो ऐसे समय में सहारा देता। सम्बन्धी सब विरुद्ध थे। पड़ौसी उनको भारी क्षति पहुँचाना चाहते थे। ऐसी विकट विवशता में साधारण व्यक्ति यदि वह होते तो प्रचार-कार्य बन्द कर देते किन्तु उन्होंने ऐसा दब्बूपन अपनी आत्मा के विरुद्ध समझा और एक सच्चे ब्राह्मण की भाँति विपत्तियों को सहते हुए उन्होंने प्रबल वेग से प्रचार करना आरम्भ कर दिया। परिवार में अब उनको रोकने वाला कोई न था, सम्बन्धियों और सर्वसाधारण के विरोध की उनको परवा न थी, अब न केवल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिकन्दराबाद में बल्कि उसके आस-पास के ग्रामों में भी उनके उपदेश होने लगे। जगह-जगह शास्त्रार्थ होते, जगह-जगह पौराणिक पण्डित विरोध करते, किंतु उनकी तर्क शक्ति और सदुत्तरों से निरुत्तर हो जाते। धीरे-धीरे पण्डितजी का नाम ज़िले-भर में प्रसिद्ध हो गया। कितने ही ग्रामों में लोग आर्य बन गये, किंतु सिकंदराबाद की दशा में कुछ भी सुधार न हुआ।

अपने स्वतन्त्र व्यवसाय के लिये शर्माजी ने एक दुकान खोल ली किन्तु उससे लाभ के बदले, हानि होने लगी क्योंकि शर्माजी जब उपदेश के लिये बाहर चले जाते, तो पीछे नौकर लोग दुकान को हानि पहुँचाया करते थे। भला बिना मालिक के व्यापार कैसा? यद्यपि शर्माजी यह सब जानते थे। तथापि वैदिक धर्म के प्रचार की लगन उनको वहाँ न टिकने देती थी।

इस प्रकार दिनों दिन आर्य समाज का प्रचार बढ़ता ही जा रहा था, चारों ओर पौराणिक ईसाई और मुसलमान आर्य समाज को अपने नाश का कारण समझने लगे थे। इसलिये अपनी सम्मिलित शक्ति द्वारा समाज का प्रचार रोकने के लिये प्रत्येक प्रकार का प्रयत्न करते थे। यद्यपि मुसलमान हिन्दू धर्म के स्वाभाविक शत्रु हैं तथापि आर्य समाज को मिटाने के लिये दोनों दल मिल गये थे। अतएव जब हिन्दुओं ने देखा कि पं० मुरारिलाल शर्मा से शास्त्रार्थ में विजय पाना कठिन है तब उन्होंने पण्डितों की एक पञ्चायत बुलाई जिसके द्वारा पण्डितजी को जाति से बहिष्कृत कर दिया गया और उनके परिवार से किसी प्रकार का भी सम्बन्ध न रखा।

पंचायत का प्रपंची महामेला और बवंडर

यह पंचायत सन् १८८२ के लगभग सिकन्दराबाद में हुई थी, शर्माजी के घर के सामने ही एक शिवजी का मंदिर है, उसी में इसका आयोजन किया गया था। दूर-दूर से पौराणिक पण्डित एकत्रित हुए थे। सबसे प्रथम नगर-भर में यह प्रसिद्ध किया गया कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं॰ मुरारीलाल शर्मा ईसाई हो गए हैं, इसलिए इनको जाति से बहिष्कृत कर देना चाहिये। बहिष्कार करने वालों में अधिक संख्या उन लोगों की थी जिन्होंने पीढ़ियों से कभी कोई अक्षर न पढ़ा था— जो महामूर्ख थे और भांग, चरस, गाँजा, अफ़ीम आदि के नशे करते थे। कुछ वेश्यागामी भी थे, और वे भी जो छिप-छिपकर व्यभिचार करते थे। कुछ रसोइये, कुछ इक्के जोतने वाले और कुछ निठल्ले थे। सारे शहर में एक तूफान-सा आ रहा था। जहाँ सुनिये वहाँ यही चर्चा थी। हिन्दू और मुसलमान सभी पञ्चायत की प्रतीक्षा में थे। अन्त में पञ्चायत का दिन निश्चित हुआ और धूम-धाम से उसकी तैयारी होने लगी।

एक दिन पण्डित भोलानाथ जी ने शर्मा जी से कहा कि 'मुरारि लाल! पञ्चायत की तैयारी बड़े वेग से हो रही है। उसमें मूर्ति पूजा और श्राद्ध के विषय में ही तुमसे पूछा जायेगा। सो उस समय तुम कह देना कि इन दोनों विषयों में मेरा कोई मतभेद नहीं है, क्योंकि तुम अकेले हो और उधर सारा शहर है। सम्भव है, ये लोग कुछ भला-बुरा कर गुजरें। शर्मा जी ने कहा—'महोदय ! यह पञ्चायत तो मुझे इसी जन्म में जाति च्युत कर सकती है, किन्तु उस ईश्वर के विषय में जो सब पञ्चायतों का स्वामी है झूठ बोलने से तो मैं जाति ही क्या—मनुष्यत्व से भी च्युत हो जाऊंगा, दूसरे-आपने जो-कहा कि ये लोग संभव है, क्रोध में कुछ भला बुरा कर गुज़रें सो अधिक से अधिक ये मुझे मार सकते हैं किन्तु मैं आपसे ही पूछता हूँ कि क्या ये लोग कभी न मरेंगे ! जब मरना सबके लिये अनिवार्य है तब मैं अपनी आत्मा के विरुद्ध क्यों बोलूँ। इस उत्तर को सुनकर पण्डित भोलानाथ जी अत्यन्त प्रसन्न हुए और बोले—मुरारि लाल ! मैंने तुम्हारी परीक्षा के लिये ही यह बात कही है, सचमुच अपनी आत्मा के विरुद्ध कहना महा पाप है। तुम अपने सिद्धान्त पर दृढ़ हो यह देख कर मुझे परम प्रसन्नता हुई--कैसी भी आपत्ति आवे,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्वाह न करना मैं छिपे-छिपे तुम्हारा साथ दूँगा, पंचायत तुम्हारा कुछ न कर सकेगी।

कट्टर पन्थियों से मनोरञ्जक प्रश्नोत्तर

वह पञ्चायत बड़े ठाठ की थी, बाहर से बहुत से पंडित बुलाए गये थे। ये पंडित मस्तकों में लाल, पीले, सफेद टीके लगाये, राम-नाम के दुपट्टे ओढ़े, पुरानी चाल के अंग रखे पहिने और सफेद पीली पगड़ियाँ बांधे थे। सिकन्दराबाद के ब्राह्मण बड़े हर्षोल्लास से डटे हुए थे, पास-पड़ौस के क्षत्रिय, वैश्य और इतर जाति के लोग भी एकत्रित थे। कहना न होगा कि उस दिन वहाँ एक मेला सा लगा हुआ था। सबके यथा स्थान बैठ जाने पर पंडित जी को पञ्चायत में बुलाया गया। एक बाहर के पंडित जी ने पूछा—आपका ही नाम मुरारिलाल है ?

मुरारिलाल—'जी हाँ'।

पं०—तुम ही हमारे आराध्य देवी-देवताओं का खंडन करते हो ?

मुरा०—जो वस्तुतः देवता हैं उनका खण्डन भला कौन कर सकता है !

पं०—अच्छा, तुम पितरों को जल-दान देना मानते हो ?

मुरा०—जलदान क्या—मैं तो अन्नदान, वस्त्रदान, मिष्टदान और जो कुछ पितरों के योग्य हो सभी देना मानता हूँ।

पं०—क्या तुमने अपने पिता को पिण्डदान दिया था ?

मुरा०—क्यों नहीं, जबतक जीवित रहे मैंने सभी प्रकार उनकी सेवा की।

पं०—नहीं, नहीं हमारा यह अभिप्राय नहीं है। उनकी मृत्यु के पश्चात् की बात पूछता हूँ।

मुरा०—मृत्यु के पश्चात् जब उनका शरीर ही न रहा तब देता किसे ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं०—देता किसे ? अरे ! और भी तो देते हैं या नहीं, तुम्हारे बाप-दादे भी देते आए हैं या नहीं।

मुरा०—बाप-दादे कोई वेद नहीं है जो उनका प्रत्येक कार्य प्रमाण माना जाये।

पं०—तो तुम यह कहो कि मृत पितरों का श्राद्ध नहीं मानते यही बात है न ?

मुरा०—हाँ, यही बात है।

दूसरे पं०—और ईसाई कैसे होते हैं ? वे भी तो पिण्डदान नहीं करते। ठीक है, अच्छा अब यह बताओ कि सामने जो ठाकुर जी की मूर्ति है उसे क्या समझते हो ?

मुरा०—अपने प्रश्न को स्पष्ट कीजिए।

पं०—इनको भगवान् मानते हो या नहीं ?

मुरा०— भगवान् तो चेतन हैं।

पं०—और यह मूर्ति ?

मुरा०—यह मूर्ति तो जो कुछ है उसे आप भी जानते हैं, आप ही धर्म से कह दीजिये कि यह क्या है ?

पं०—हम तुमसे यहाँ शास्त्रार्थ करने नहीं आये हैं। शास्त्रार्थ के लिये ईसाई, मुसलमान पड़े हैं उनसे करो, हम तो तुमसे जो बात पूछते हैं, उसका उत्तर दो।

मुरा०—यदि आप मुझसे ही पूछते हैं तो मेरी दृष्टि में तो यह पत्थर के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। मुरारिलालजी के मुख से ये शब्द निकलते ही चारों ओर कोलाहल मच गया। निकालो इस नास्तिक को, इस ईसाई को बिरादरी में से पृथक् करो। एक पंडित जी ने खड़े होकर उच्चस्वर से कहा कि हम व्यवस्था देते हैं कि अब इनके परिवार से किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखा जाये, ये आज इस पंचायत द्वारा जाति च्युत कर दिये गये। कहिये आप लोग स्वीकार करते हैं ? तब सबने एक स्वर से अनुमोदन कर दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहिष्कार के कारण भयंकर कष्टों का ताँता, फिर भी मुँह तोड़ उत्तर

मार डालने तक का मनोरथ, फिर भी प्रचार के मैदान में

संपत्सु महतां चित्तम्, भवत्युत्पल कोमलम् ।
आपत्सु च महाशैलाशिला संघात कर्कशम् ।।

अब मुरारिलाल शर्मा ने भी खड़े होकर कहा कि उपस्थित सज्जनो, आपने आज मुझे जातिच्युत किया है इसका मुझे लेशमात्र भी दुःख नहीं है। दुख तो पाप करने से होता है, मैंने ऐसा कोई कार्य नहीं किया है जिसका मुझे पश्चात्ताप हो। आपने चार चीजें बन्द की हैं, प्रथम रोटी, सो मैं न आपकी खाता हूँ और न इनकी। दूसरी बेटी, सो जब मैं आपके सम्मुख हाथ जोड़कर प्रार्थना करूँ कि आप इसे स्वीकार कीजिये तब आप निषेध कर देना। तीसरा हुक्का, सो मैं पीता नहीं और चौथा पानी, सो वह परमात्मा का दिया हुआ है। आपका उसमें क्या चारा है। आप मुझे जाति-च्युत करते हैं, जाइये मैंने आप सबको अपनी बिरादरी से च्युत कर दिया। स्मरण रखिये, धार्मिक विषय में मैं या मेरा परिवार आपकी इन धमकियों से डरने वाला नहीं है। इतना कहकर शर्मा जी अपने गृह को चले गए। पञ्चायत के पश्चात् नगर निवासियों ने शर्मा जी के परिवार को कष्ट देने आरम्भ कर दिये। इसके मुखिया स्वयं शर्माजी के सम्बन्धी पं० बालकराम जी थे, जिन्होंने शर्माजी के सम्बन्धियों को लिखकर भेजा कि मुरारिलाल ईसाई हो गए हैं अतः इनके साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखा जाये। पासपड़ौस के मनुष्य शर्माजी को कत्ल करने का विचार करते थे। उन्होंने कई बार ऐसी चेष्टाएँ भी की थीं किन्तु वे सफल न हो सके। भृत्यवर्ग ने पण्डित जी के परिवार का काम करना छोड़ दिया था। उस दशा में बड़ी दृढ़ता के साथ पण्डित जी अपने कुए से जल न लेकर दूर के कुए से लाते थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस प्रकार वे कष्टों की परवा न करते थे उसी प्रकार उनकी धर्मपत्नी भी उनका साथ दे रहीं थीं। ऐसी सुशीला दृढ़व्रता पत्नी के कारण ही शर्माजी इस घोर विरोध के बवंडर को सहन कर सके, इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है। इतना भयङ्कर विरोध होने पर भी शर्मा जी के हृदय में किसी के प्रति तनिक भी द्वेष-भाव या घृणा नहीं थी। वे सबको प्रेम से देखते थे। उनको दृढ़ विश्वास था कि थोड़े समय ही के पश्चात् इन लोगों को अपनी भूल ज्ञात हो जायेगी और तब वे निश्चय ही पश्चात्ताप करेंगे। इस समय तक अपने ज़िले में शर्माजी पर्याप्त प्रचार कर चुके थे। कई जगह आर्य समाज स्थापित हो चुके थे। उनके उत्सवों और दूर-दूर के संस्कारों में भी उन्हें प्रायः जाना पड़ता था। कभी कभी तो वे पन्द्रह-बीस दिनों तक लगातार बाहर रहते थे, जिसके कारण उनके परिवार को बहुत ही कष्ट होता था। घर में शर्माजी की वृद्धा माता, उनकी धर्मपत्नी और एक कन्या थी। चारों ओर विरोधी दल था। हर वक्त चोरी और अन्य कष्टों का डर बना रहता था, कभी-कभी दो-दो रात जागना पड़ता था, शर्मा जी के अनुपस्थित रहने के कारण व्यापार भी चौपट हो गया था, उत्सवों में जाते किन्तु प्रायः मार्गव्यय भी स्वयं ही वहन करते थे। ऐसी दशा में शर्मा जी की आर्थिक दशा और भी बिगड़ गई। उधर विरोध बहुत बढ़ गया, किन्तु इतने पर भी शर्माजी न तो प्रचार कार्य से विरत हुए और न इन कष्टों से घबराये। अचल पर्वत के समान निरन्तर अपना कार्य करते ही रहे। इसी समय उन्होंने अपनी एकमात्र कन्या कलावती का विवाह सम्पन्न किया जिसका वर्णन पाठक आगे पढ़ेंगे।

कलावती की शिक्षा की जटिलता

उसके विवाह का विचित्र महोत्सव

शर्माजी के कलावती नाम की एक ही कन्या थी, जिस समय उसका जन्म हुआ, उस समय भारतवर्ष में कन्याओं के पढ़ाने का कोई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबन्ध न था। लोग कन्याओं को पढ़ाना वेद-विरुद्ध और पाप समझते थे। इसलिए कलावती के पढ़ाने में बड़ी कठिनता पड़ी किन्तु पं० जी ने निश्चय कर लिया कि जब तक 'कला' को नहीं पढ़ाया जायेगा स्त्रियों में विद्या का प्रचार होना कठिन है। इसलिये उन्होंने एक पण्डित द्वारा उसे पढ़ाने का प्रबन्ध किया, जिंन्होंने कुछ समय में ही कलावती को शिक्षिता बना दिया। सिकन्दराबाद के वृद्ध पुरुषों का कहना है कि कलावती जितनी रूपवती थी, उतनी ही वह नारी सुलभ गुणों की खान थी। उसका उज्ज्वल मुख और सुन्दर शरीर प्रत्येक मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करता था। शुद्ध उच्चारण, धर्मप्रेम, लज्जा, नम्रता उसके विशेष गुण थे, वह नगर-भर में प्रसिद्ध थी।

पुत्री के विवाह के विघ्न निवृत्यर्थ,

७०० संरक्षक जमा

विरोधियों ने मुँह की खाई

जब कलावती की अवस्था १५ वर्ष की हो गई तब शर्मा जी ने उसके लिए वर के वरण का उद्योग करना प्रारम्भ किया, किन्तु उसके योग्य गुणी, विद्वान् और आर्यवर शीघ्र न मिल सका। कुछ दिनों पश्चात् बुलन्दशहर निवासी पं० गंगासहाय जी मुख्तार का वरण किया गया। नहीं कहा जा सकता कि ऐसी गुणवती कन्या के लिये कैसा वर उपयुक्त होता किन्तु निश्चय ही श्री गंगासहाय जी से उत्तम उस समय और कोई वर न मिल सका। विवाह के निश्चित होते ही फिर नगर में विरोधी पञ्चायतें होने लगीं। शर्मांजी के सभी सम्बंधियों को सूचना दी गई कि विवाह में सम्मिलित होने वाले जातिच्युत किए जावेंगे। पं० बालकराम जी और अन्य ब्राह्मण मण्डली ने कोई बात उठा न रखी, किन्तु फिर भी उनका सब भेद प्रकट हो गया और बन्धु-बान्धव बड़े आनन्द से विवाह में सम्मिलित हुए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोधियों ने अपने को कृत-कार्य होता न देख कर और उग्रता धारण करली, उन्होंने बरात के चढ़ते समय उपद्रव करने का निश्चय किया। पण्डित मुरारिलाल शर्मा को जब उनके इस कुविचार का पता लगा तो उन्होंने अपने समीपवर्ती मित्रों को सूचना देदी। सूचना पाते ही सात सौ के लगभग आर्यजन एकत्र हो गए। इतने विशाल जन-समूह को देख कर सिकन्दराबाद का पौराणिक दल स्तब्ध और चकित हो गया। बिघ्न करना तो दूर रहा, उन लोगों को अपने-अपने घरों से निकलना तक कठिन हो गया। उधर आगन्तुक ग्रामीण आर्यों ने नगर-निवासियों को चुनौती दी कि जो अपने को शक्तिशाली समझता तो वह बारात में बिघ्न डाले, किन्तु किसी की हिम्मत न पड़ी। विवाह बिना किसी बिघ्नबाधा के सानन्द सम्पन्न हो गया।

विवाह में कृपाराम शर्मा भी उपस्थित

विवाह में स्वामी दर्शनानन्द जी (भूतपूर्व पं० कृपाराम शर्मा जगरानवी) तथा पं० नन्दकिशोरदेव शर्मा जी आदि बड़े बड़े आर्य विद्वान् सम्मिलित हुए। यह घटना सन् १६०० ई० के निकट की है। विवाह के समय ही पौराणिक दल ने समझा कि पं० मुरारिलाल शर्मा को दबाना सहज नहीं है। जिनके शिष्य सहस्रों की संख्या में सिकन्दराबाद के चारों ओर विद्यमान हैं, वह मनुष्य कैसे दबाया जा सकता है, यह समझ कर बहुत से मनुष्य तो विरोध त्याग साथी हो गए, बहुतों के विचारों में परिवर्तन हो गया और बहुत से उदासीन हो बैठे। इस प्रकार उस विरोधाग्नि की शांति हो गयी।

चतुर्थ परिच्छेद

फिर प्रचार अभियान, सिकन्दराबाद की ख्याति

अल्लाहो अकबर के नारे, पादरी भी सामने

प्यारी पुत्री कलावती के विवाह से निबट कर पण्डित जी ने पुनः प्रबलवेग से प्रचार कार्य प्रारम्भ किया। बुलन्द शहर, मेरठ,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहली, गुड़गावां, अलीगढ़ आदि पश्चिमी ज़िलों में ग्राम के प्र
आर्य बनने लगे। सिकन्दराबाद का आर्य समाज तो .खूब विख
हो गया। उस समय वहाँ समाज के १५०० के लगभग सदस्य
जो पीछे बढ़कर २४०० तक हो गए। शर्मा जी जब सिकन्दराब
रहते तब आनंद का स्रोत बह निकलता था। बड़े-बड़े विद्वान्, मौल
और पादरी उनसे शास्त्रार्थ करने आया करते थे। बरेली के प्रसि
फिलासफ़र पादरी ज्वालासिंह तथा अहमद मसी के साथ शर्मा
के कई बार शास्त्रार्थ हुए। सिकन्दराबाद के वयोवृद्ध लोग कहते
कि शर्मा जी के कारण ही यह छोटा सा नगर सिकन्दराबाद, शा
चर्चा और शास्त्रार्थों का केन्द्र बन गया था। यदि कोई विद्व
इधर होकर गुज़रता था तो वह शर्मा जी से बिना मिले कभी
जाता था। चाहे वह किसी धर्म का मानने वाला क्यों न हो।

एक दिन एक मौलाना ने सिकन्दराबाद में आकर हिन्दू ध
और आर्य समाज पर बड़े भद्दे आक्षेप करने आरम्भ किये, मौला
के वाज़ (व्याख्यान) में हजारों मुसलमान एकत्रित हो गये, हिन्दू ध
पर बुरे से बुरे आक्षेप सुन कर भी किसी को यह साहस न हुआ
वह उनका कुछ उत्तर दे या इस्लाम पर आक्षेप करे। फलतः उस सम
सारे नगर को शर्माजी याद आने लगे। जब शर्माजी को मौला
के वाज़ का पता लगा तो वे अविलम्ब वहाँ पहुँचे। इतना होने
भी भय के कारण हिन्दू वहाँ एकत्रित न हो सके पर निर्भय औ
साहसी पं० मुरारिलाल शर्मा मुसलमानों के दल को चीरकर मौला
के सामने पहुँच गये।

जब मौलाना वाज़ समाप्त कर चुके तब शर्माजी ने उनके प्रश्
का उत्तर देना प्रारम्भ किया और कहा कि जो आक्षेप हिन्दुओं
ग्रन्थों पर आप करते हैं उनसे कहीं ज्यादा घृणित तो हज़रत मुहम्
साहब के आचरण हैं, जिनको आप .खुदा का नबी समझते हैं। ऐसे
कहकर जब शर्माजी ने हज़रत की जीवन-घटनायें हदीसों से नि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनी आरम्भ कीं तो मौलाना घबरा गये। उन्होंने मुसलमानों को उकसाना प्रारम्भ किया, और चारों ओर से अल्लाहो अकबर के नारे बुलन्द होने लगे। झगड़ा होने में देर नहीं थी फिर भी शर्माजी बड़ी निर्भयता से मौलाना से कह रहे थे कि "आप घबराते क्यों हैं ? जो कुछ मैंने कहा है यदि वह आपकी पुस्तकों में न निकले तो मैं आज ही इस्लाम ग्रहण कर लूँगा। नहीं तो आप आर्य बन जाइये" परन्तु मौलाना को इन बातों से क्या, उन्होंने कहा कि आपने हज़रत के ऊपर बिल्कुल झूठे इल्ज़ाम लगाये हैं. हम इनको सहन नहीं कर सकते। झगड़ा बढ़ता ही गया, अकेले वीर-पुङ्गव शर्माजी को सताने की तो मुसलमानों की हिम्मत हुई नहीं किन्तु उन्होंने पुलिस को ख़बर दी। उस समय पुलिस में मुसलमानों का एक छत्र राज्य था। कान्स्टेबिल से लेकर थानेदार तक सभी मुसलमान थे। शर्माजी के इस्लाम पर आक्षेप सुनकर थानेदार साहब पहले ही सुर्ख़ हो रहे थे, उन्होंने सबको तहसील में बुलाकर शर्माजी से बहुत क्रुद्ध होकर पूछा कि आप इस्लाम का खण्डन किसके हुक्म से करते हैं ? शर्माजी ने नम्रता से कहा कि मैं तो बहुत पीछे पहुँचा था पहले मौलाना से पूछिये ये हिन्दु धर्म, आर्यसमाज और स्वामी दयानन्दजी महाराज पर किसके हुकम से 'वाज़' कर रहे थे उसी के हुक्म से मैं भी इनका खण्डन कर रहा था। शर्माजी के युक्ति युक्त एक ही उत्तर से थानेदार साहब का क्रोध उतर गया। और वे बोले—अच्छा मैं आप दोनों को हुक्म देता हूँ कि "शहर की हद में आप में से कोई भी शास्त्रार्थ न करे"। शर्माजी ने कहा कि यदि मौलाना छेड़ेंगे तो मैं उत्तर अवश्य दूँगा। मौलाना भी जो शीले थे, बोले-अच्छा पण्डित साहब चलिये,शहर से बाहर हम दोनों मुबाहिसा करें। साराजन-समूह शहर से एक मील दूरी पर पड़ाव में पहुँचा। शर्माजी तथा मौलाना साहब बीच में बैठे और चारों ओर मुसलमान बैठ गये। तब शर्माजी ने कहा—मौलाना साहब अब आप सिद्ध कीजिये कि इस्लाम सच्चा है और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक धर्म झूठा है। मौलाना ने कहा—वेद बिल्कुल रद्दी किता
है, शर्माजी ने कहा—कुरान रद्दी ही नहीं, दुनिया में सबसे मदू
किताब है, शर्माजी के मुख से इस निर्भय वाक्य को सुनकर वृ
मुसलमान कहने लगे, "मौलाना—चलो भी, नमाज़ का वक़्त हो गय
किस झंझट में फँस गए।" इस प्रकार के शास्त्रार्थ पण्डितजी
प्रायः रोज़ ही होते थे। यद्यपि वे अकेले थे तथापि बड़ी निर्भयता
उत्तर दिया करते थे। सच तो यह है कि विधाता ने उस तत्व में भ
का अंश रहने ही नहीं दिया था जिससे शर्माजी बने थे। ऐसे ही
निर्भय और साहसी पुरुषों की छत्र-छाया में उस समय आर्यसमा
का प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ता चला जा रहा था।

पुत्री कलावती देवी के स्वर्गवास का दृश्य

फिर भी लाहौर जाना अटल

अभी कलावतीदेवी के विवाह को दो वर्ष भी पूरे न हो पा
थे कि वह बीमार हो गईं। शर्मा जी का अपनी पुत्री पर अत्यन
स्नेह था, इसलिए बुलंद शहर से उसको सिकंदराबाद बुलालिय
गया, जहाँ उसके ८ महीने का बच्चा हुआ। बच्चे के होते ही
उसकी आँखें और मुँह बंद हो गए, बहुत प्रयत्न करने पर भी कोई
वैद्य इनको न खोल सका, और ठीक आठवें दिन शिशु का देहांत
होगया और उसके देहावसान के एक क्षणबाद स्वयं ही उसकी
आँख और मुख खुलगए। यह घटना कैसे और क्यों हुई इसको आज
तक कोई न जान सका। ईश्वर की लीला अपार है हजारों रुपयों
का व्यय किया गया, दूर-दूर के वैद्य डाक्टर और हकीमों ने आक
इलाज किया किन्तु सब निष्फल हुआ -

शर्मा जी ने ३ मास तक भूखे मनुष्यों को अन्न वितीर्ण किया,
लगभग तीन हजार रुपया व्यय किए जाने पर भी मृत्यु के मुख से
अपनी इक लौती पुत्री को न बचा सके। उसकी जुदाई का अंतिम
समय समझ कर धीर वीर शर्मा जी ने उसे गायत्री के जाप का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपदेश दिया और कहा—बेटी ! संसार में सब वस्तुएं अनित्य हैं; केवल एक प्रभु का स्मरण ही अंत समय में सब दुःखों से छूटने का उपाय है सो तुम अब भगवान् का ही स्मरण करो ।

कलावती भी समझ गई थी कि उसकी विदाई का समय आ पहुँचा । उसने प्रातः काल के ३ बजे ही नवीन वस्त्र धारण किये । कण मंगाकर भूखों को बाँटा और सब कार्यों से निश्चिन्त होकर संसार की असारता पर हँस पड़ी । अपने माता-पिता से हँसते हुए ही विदा ली । अर्थात् क्षण भर में ही इस क्षणभंगुर शरीर को त्याग दिया । कलावती की अवस्था इस समय १७ वर्ष और एक मास थी (अगहन सुदि पंचमी संवत् १९५६ का दिन था ।) घर में कुहराम मच गया । शर्मा जी जैसे तपस्वी पुरुष भी अपनी परम स्नेहमयी कन्या की मृत्यु के शोक में अश्रु संवरण न कर सके । पुत्री की मधुर स्मृति से विह्वल होने के कारण माता भी मूर्छित हो गयी । अंत्येष्टि संस्कार समाप्त हो जाने पर शर्मा जी लाहौर आर्य समाज के उत्सव पर जाने के लिए तैयार हो गये । उनके मित्रों ने कहा कि ऐसे शोक के समय में आपका बाहर जाना उचित प्रतीत नहीं होता, इसका उत्तर उन्होंने यह दिया कि 'बन्धुओ, जब मृत्यु ने अपने कर्तव्य पालन में एक क्षण की भी देर नहीं की तब हमको भी उसी का अनुगमन क्यों न करना चाहिए, रही शोक की बात सो भाई मैं अपनी ही कन्या के लिए कहाँ तक शोक करूँ, मानवजाति की करोड़ों कन्याएं प्रतिदिन अपना अमूल्य जीवन त्याग रही हैं क्या उनका शोक हमको नहीं करना चाहिये, और उनके उद्धार का उपाय नहीं करना चाहिये । मेरी कन्या का जो कुछ होना था सो हो गया, अब मैं और कन्याओं के उद्धार हेतु जाता हूँ, इतना कहकर शर्माजी उत्सव में सम्मिलित होने के लिये लाहौर चले गए ।

ओह ! समाज-सेवा की कैसी सच्ची लगन थी, आर्यसमाज के प्रचार से उन्हें कैसा अलौकिक प्रेम था । पाठक स्वयं विचारें । कलावती देवी की बनाई "अबला हितैषी" नामक एक पुस्तक है । इसमें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईसाई धर्म की असारता और वैदिक धर्म का महत्व प्रश्नोत्तर रूप में उपन्यास की शैली में दिखाया गया है। यह पुस्तक पंडित गंगासहाय जी मुख्तार बुलन्दशहर से मिलती थी। "अबला-हितैषी" कलावती की मृत्यु के पीछे छपी था इसीलिये उनकी मृत्यु का विवरण भी इसमें छपा है। निःसन्देह यह पुस्तक प्रत्येक हिन्दू के पढ़ने योग्य है।

नैथला ग्राम में यज्ञ-विध्वंसकों की चढ़ाई, और उनका गिड़गिड़ाना।

नैथला ग्राम ज़िला बुलंदशहर में चोला स्टेशन के पास है। इस ग्राम में बड़े कट्टर पौराणिक ब्राह्मण रहते हैं। वहीं पर कंछिदमल एक वैश्य थे। उन्होंने अपने पुत्र का मुण्डन तथा कर्णवेध संस्कार करने की इच्छा प्रकट की। जब यह बात पौराणिकों को मालूम हुई तो उन्होंने कंछिदमल से कहा कि हम यह संस्कार वैदिक रीति से कदापि न होने देंगे। परंतु लाला न माने, उन्होंने पं० मुरारिलाल शर्मा से संस्कार कराने की प्रार्थना की। शर्माजी ने संस्कार का प्रबंध करनें के लिए वहाँ अपने कार्यकर्त्ता भेज दिये। ब्राह्मणों का विरोध बढ़ता ही गया। परन्तु नियत समय पर श्री शर्माजी के साथ पंडित नंदकिशोर देव शर्मा, स्व० शिवसहायजी, पं० धर्मसहायजी, ला० खेमचन्द्रजी आदि नैथला पहुँच गये।

संस्कार प्रारम्भ हुआ ही था कि ग्रामवासियों ने कंछिदमल के घर पर चढ़ाई कर दी। यज्ञकुण्ड नष्ट कर दिया और कई कार्यकर्त्ता पीटे गये। कई के चोटें आईं, यद्यपि अन्य ग्रामवासियों ने शर्माजी को बचा लिया परन्तु जैसा उत्पात और अत्याचार यहाँ हुआ वैसा अन्यत्र नहीं हुआ। शर्माजी अत्याचार सहने वाले व्यक्ति न थे। उन्होंने सोचा कि यहाँ के निवासी हमको अशक्त समझते हैं अतः इस अपमान का बदला लेना चाहिये। यह विचार कर उन्होंने अविलम्ब चारों ओर आर्यों को ख़बर करदी, नियत समय पर ग्रामों के एक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहस्र आर्य 'सकलपुर' नामक ग्राम में इकट्ठे हो गए। भोजनादि का प्रबन्ध करके उन्होंने भी प्रतीकार में नैथला ग्राम पर चढ़ाई कर दी। जब नैथला निवासियों के पास यह ख़बर पहुँची तो उनको अपनी मूर्खता का ज्ञान हुआ, आर्यवीरों ने वहाँ पहुँचकर ग्रामवासियों को चेलेञ्ज दे दिया कि हमारे गुरु और पण्डितों का यहाँ अपमान हुआ है अतः हम इसका बदला लिए बिना वापस नहीं जायेंगे। यह सुनते ही नैथला निवासी मारे भय के काँपने लगे। जो पौराणिक पण्डित यह कहते फिरते थे कि दो-चार ही आर्य उत्पात करते फिरते हैं, उन्होंने भी देखा कि आर्यसमाज में कितनी शक्ति है। तब वे लोग न मालूम कहाँ छिपे बैठे थे। अंत में ग्राम के लोगों ने इकट्ठे होकर बिहारीसिंह नम्बरदार की शरण ली। बिहारीसिंह ने कहा कि आप लोगों ने जो किया है, उसका फल आप भोगें। मैं क्या कर सकता हूँ। किन्तु सभी ने एक स्वर से कहा कि आप शर्माजी से क्षमा प्रदान करा दीजिये। हम वचन देते हैं कि भविष्य में कभी ऐसा न होगा। इस कथन पर केवल शर्माजी को ग्राम में बुलाया गया, यद्यपि उपस्थित लोंगो ने शर्माजी को बिना सहायक के जाने का विरोध किया किन्तु शर्माजी निर्भय होकर वहाँ पहुँच गये। पण्डितजी को देखकर सब लोग खड़े हो गये। ठा० बिहारीसिंह ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि हमसे बड़ा भारी अपराध हो गया है, यहाँ के निवासी मूर्ख हैं, ये आप लोगों को नहीं जानते, आप जो चाहें दण्ड दें, हम स्वीकार करने को तैयार हैं। शर्माजी ने कहा—'यहां के लोगों ने विद्वानों और वेदों का अपमान किया है। शायद हम को कम और असहाय समझ कर ही हम पर हमले किए गए हैं और यज्ञ कुण्ड नष्ट किया गया है, अब हम मौजूद हैं, अब वे लोग आगे आवें और हम पर हमला करें।' बिहारीसिंह नम्बरदार ने कहा—कि आपका कथन सर्वथा सत्य है। मैं आप से विनय पूर्वक क्षमा प्रार्थी हूँ। आप ही इस ग्राम को इस विपत्ति से मुक्त कर सकते हैं। यह कह करउन्हों ने शर्मा जी के चरणों में अपनी पगड़ी रख दी और प्रतिज्ञा की कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्य में ऐसा कभी भी न होगा। यह देखकर अपने सहयोगियों की सलाह से शर्मा जी ने ग्रामवासियों को क्षमा कर दिया और सब आर्यजन अपने-अपने ग्रामों को वापिस चले गये।

पञ्चम परिच्छेद

वैदिक पाठशाला सिकन्दराबाद

इन्हीं दिनों सिकन्दराबाद में वैदिक पाठशाला की स्थापना की गई थी। पं० कृपाराम जी शर्मा भी देहली से यहीं आगए थे। पं० मुरारिलाल जी के साथ पं० कृपाराम शर्मा के मिल जाने से आर्यसमाज में नई स्फूर्ति और नई जान आ गई। सिकन्दराबाद उपदेशकों का केन्द्र बन गया। पं० प्रयागदत्त जी, पं० भूमित्र शर्मा तथा पं० नन्दकिशोर देव शर्मा भी स्थायी रूप से प्रचार के लिए यहीं रहते थे। वैदिक पाठशाला में शहर के बहुत से बालक पढ़ते थे। यहीं पर पं० कृपाराम शर्मा जी की पुस्तकें छपा करती थीं। उपदेशक लोग प्रतिदिन ही प्रचार के लिये बाहर जाते रहते थे। चारों ओर आर्यसमाज के प्रचार की धूम मची हुई थी। ऐसे ही समय में उभय शर्माओं के हृदयों में प्राचीन पद्धति के गुरुकुल खोलने का विचार उत्पन्न हुआ। उन्होंने मित्रों से परामर्श किया और निश्चय हुआ कि नगर से दक्षिण की ओर चार मील की दूरी पर जंगल में गुरुकुल की स्थापना की जावे। इस निश्चय के बाद उसकी तैयारी होने लगी, कुछ दिनों में ही गुरुकुल की स्थापना हो गई।

(संन्यास आश्रम के ग्रहण करने के बाद पं० कृपाराम शर्मा का ही नाम स्वामी दर्शनानंद सरस्वती प्रसिद्ध हुआ। उनका पूरा चरित्र है, 'दर्शनानंद दर्शन' पुस्तक)।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिकन्दराबाद में गुरुकुल

(ब्रह्मचर्य-आश्रम) का नव आविष्कार

ई॰ आई॰ आर॰ प्रधान लाइन में दनकौर स्टेशन (उस समय इस स्टेशन का नाम सिकन्दराबाद ही था) के पास ही सन् १८९८ ई० में गुरुकुल की स्थापना हुई थी। उस समय भारतवासी गुरुकुल शब्द तक को न जानते थे, क्योंकि भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली यवन शासकों के अत्याचारों से सर्वथा नष्ट हो चुकी थी। ८०० वर्ष के निरंतर विप्लवों में आर्य जाति पिसते-पिसते अपनी भाषा, भेष, भाव सब कुछ भूल चुकी थी। संस्कृत के दो-चार अक्षर पढ़े हुए ब्राह्मण कहीं मिल जाते थे—हजारों मनुष्यों में भी एक साक्षर मनुष्य नहीं मिलता था। आर्ष ग्रंथों के नाम तक भी लुप्त हो गये थे, पौराणिक काल में क्षत्रिय, वैश्य, जाट, गूजर, अहीर आदि के वेदाध्ययन के अधिकार हरण कर लिये गये थे। हा! इस महोच्च आर्य जाति की कैसी दयनीय दशा हो गई थी, ऐसे ही घोर अन्धकार के समय आदित्य ब्रह्मचारी ऋषि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक अभूतपूर्व ग्रंथ रचकर मनुष्यों के ज्ञान-चक्षुओं को खोला। ऋषि ने घोषणा की कि भगवान् का ज्ञान मनुष्य मात्र के लिये समान है। उस परम कारुणिक ऋषि ने स्त्रियों और शूद्रों तक के लिये वेद-विद्या का पवित्र द्वार खोल दिया। उस महात्मा ने आदेश दिया कि प्राचीन आर्ष प्रणाली को पुनर्जीवित किये बिना आर्य जाति का जीवन स्थिर नहीं रह सकता, इसलिये गुरुकुलों की स्थापना करनी आवश्यक है।

नवभारत के अनन्यतम दार्शनिक पंडित कृपाराम शर्मा

गुरुकुलों की स्थापना का विचार अन्य प्रांतों के आर्य जनों के हृदय में भी था, परन्तु सन् १८९८ तक कोई भी इस विचार को कार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप में परिणत न कर सका था। यह श्रेय तो इस चरित्र के नायक पं० मुरारिलाल शर्मा और पं० कृपाराम शर्मा को ही प्राप्त है कि जिन्होंने भारतवर्ष में सबसे प्रथम गुरुकुल की स्थापना की। इसके बाद नियम पूर्वक कार्यकारिणी सभा का निर्वाचन हुआ। गुरुकुल-प्रणाली के कैसे नियम होने चाहियें इसके निर्माण का सारा श्रेय नवभारत के अनन्यतम दार्शनिक पं० कृपाराम शर्मा को है। पण्डितजी संस्कृत दर्शन साहित्य के विख्यात विद्वान् थे। काशी में वर्षों तक शास्त्रों का अध्ययन कर चुके थे। यद्यपि आप जगरावाँ नगर (पंजाब) निवासी एक प्रसिद्ध धनिक के पुत्र थे तथापि पं० मुरारिलालजी के पुनीत प्रेम के कारण सिकन्दराबाद रहने लगे थे। आपही ने गुरुकुलों में निःशुल्क शिक्षा प्रणाली को प्रचलित किया था और आपही ने गुरुकुलों में परिष्कृत आर्ष प्रणाली को सर्वोच्च स्थान दिलाया था। गुरुकुल सभा पण्डितजी के सत्परामर्श के अनुसार ही सब काम करती थी। सन् १८९९ ई० में गुरुकुल का प्रथम उत्सव हुआ। प्रत्येक जाति के बालक कुल में प्रविष्ट हुए। हजारों वर्षों के बाद जाट, गूजर, सुनार आदि जातियों के बालकों को यज्ञोपवीत धारण कराके जब पवित्र वेद की ऋचाओं का सस्वरगान कराया गया, तब उपस्थित जनता की आँखों से अविरल अश्रुधारा बह निकली। कितने ही सहस्रों मनुष्यों की तो रोते-रोते हिचकियाँ बँध गईं। जो लोग सहस्रों वर्षों से शूद्रों में परिगणित होते चले जा रहे थे जो लोग वेद से वञ्चित थे, जिनको यज्ञ-सूत्र का अनधिकारी बताया जाता था उस दिन उनके पुत्र ब्राह्मणों के बालकों के साथ समान भाव से वेद माता की गोद में बैठकर अपने को पवित्र मान रहे थे।

कैसा सुहावना समय था, ऋषि दयानन्द की तपस्या चारों ओर फूलती-फलती दीख रही थी। जिसके लिये ऋषि ने हजारों कष्ट सहे थे, उस क्रांति का फल आज साक्षात् दीख रहा था। ऋषि अपनी आँखों से इस पवित्र परिवर्तन को न देख पाए—यदि वे आज इस धराधाम पर होते तो उनकी आत्मा अवश्य संतुष्ट होती। गुरुकुल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के आचार्य पद का भार आर्यसमाज के लब्ध प्रतिष्ठ तार्किक श्री पं० भीमसेनजी शर्मा (बाद को स्वा० भास्करानंदजी) ने ग्रहण किया। कार्य यथावत् चलने लगा, किन्तु जब तक कोई महाव्यक्ति अपने जीवन का उत्सर्ग न करे तब तक इतना बड़ा कार्य कैसे पूर्ण हो सकता है ?

दो त्याग मूर्तियों की भीष्म प्रतिज्ञा और उसके सुफल

एक दिन पं. कृपाराम शर्मा ने पं० मुरारिलाल शर्मा से कहा कि निस्सन्देह आपने गुरुकुल की स्थापना करके बहुत बड़ा कार्य किया है। इससे देश का बहुत बड़ा लाभ होगा । किन्तु किसी तपस्वी मनुष्य के जीवनोत्सर्ग किये बिना यह पूर्ण न होगा। शर्मा जी बोले, 'तब आप क्या चाहते हैं?' पं० कृपाराम बोले, 'आप अपना सम्पूर्ण जीवन इसके लिए दान दे दीजिये। आजन्म समाज की सेवा कीजिये। आपसे अधिक योग्य व्यक्ति मुझे यहाँ नहीं दीखता। शर्माजी ने कहा, 'यदि आपकी यही इच्छा है तो मैं इस व्रत को ग्रहण कर लूँगा किन्तु मुझे आपकी सहायता अपेक्षित है। मैं आपको त्याग मूर्ति देखना चाहता हूँ, पण्डित जी ने हंसकर कहा—और मेरे धन, परिवार, प्रेस आदि का क्या होगा ? पं० मुरारिलाल शर्मा ने कहा जो एक ब्राह्मण के त्याग से होता है वही होगा। फलतः पं० कृपाराम शर्मा ने यह त्याग स्वीकार कर लिया । अर्थात् दोनों व्यक्तियों ने अपने जीवन का पथ बदला, दोनों ने आजन्म सहयोग पूर्वक आर्य समाज की सेवा करने का व्रत लिया और संसार जानता है कि इन दोनों सच्चे ब्राह्मणों ने आर्य समाज की आधारशिला को सुदृढ़ बनाने में कितना तप और त्याग किया। यह अत्युक्ति नहीं है कि इन दोनों के ही प्रबल प्रताप से आज उत्तरी भारत में आर्य समाज का विस्तृत भवन खड़ा हुआ है। चाहे कोई इस रहस्य को जाने या न जाने किन्तु यह एक ऐतिहासिक सत्य है जो छिप नहीं सकता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निःशुल्क शिक्षा—प्रसारक

लक्ष्मीपुत्र पं० कृपाराम शर्मा का ठाठ, पर अब विद्या प्रसार के मैदान में

यह महाव्रत ग्रहण करने के बाद उस लखपति के पुत्र ने जो दो घोड़ों की फिटन में प्रतिदिन सैर करने जाता था. जिसके पास बीसों नौकर सेवा के लिये हर समय रहते थे, जिनके शरीर पर सैंकड़ों रुपए के वस्त्र शोभा देते थे। अपना सर्वस्व दान देकर और अपने सारे कुटुम्ब को त्याग कर भिक्षुकों का मार्ग ग्रहण किया। यह महान् व्यक्ति जो कृपाराम शर्मा के नाम से प्रसिद्ध था वही फिर स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती के नाम से प्रख्यात हुआ।

उधर पं० मुरारिलाल शर्मा ने भी अपने सुखमय जीवन पर लात मारी। .खुर्जा, धामपुर, हापुड़ और सिकन्दराबाद की चारों दुकानों को विना कुछ रुपया लिये हिस्सेदारों को दे डाला। दुकानों से अपना सम्बन्ध त्यागकर गुरुकुल की सेवा के लिये मन्त्रीपद ग्रहण किया। यद्यपि शर्मा जी ने संन्यास ग्रहण नहीं किया तथापि उनका जीवन एक उच्च त्याग का आदर्श रहा। गृहस्थ से उनका नाम मात्र का ही सम्बंध था। रात-दिन प्रचार में संलग्न रहने के कारण महीनों बाहर ही रहते थे, अपने बड़े पुत्र देवेन्द्र को गुरुकुल में प्रविष्ट करा दिया था। उनकी माता का देहान्त हो चुका था, उनकी धर्मपत्नी एक आदर्श तपस्विनी की भाँति अकेले घर में रहती थीं। उनको महा कष्ट अनुभव होता था, कभी कभी डरते-डरते पतिदेव से अपनी कष्ट कथा कहतीं थीं, परन्तु शर्मा जी उन्हें यह कह कर आश्वासन दे देते थे कि 'धर्म का मार्ग ऐसा ही कठिन होता है।' उनकी कष्ट कथा का एक बहुत ही हृदय द्रावक वर्णन यह है—शर्मा जी की कन्या जब अधिक बीमार हो गई तब शर्मा जी घर पर ही थे। बीमारी की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा का अभी कोई प्रबन्ध नहीं हो पाया था कि इतने में लाहौर से शास्त्रार्थ का तार आगया। तार में केवल इतना ही लिखा था कि 'यदि आप कल यहाँ न पहुँचे तो आर्य समाज की बुरी पराजय होगी'। इस तार को पढ़कर शर्माजी ने उसी समय जाने की तैयारी कर ली और कन्या की बीमारी की कोई चिन्ता नहीं की। यह था उस आदर्श पुरुष का आर्य समाज का प्रचार प्रेम। ऐसे ही नरपुंगवों के हाथों से सींचकर आर्य समाज रूपी वृक्ष पल्लवित पुष्पित और फलित हुआ है।

जब मिल बैठे दीवाने दो

स्वामी दर्शनानंद जी और पं० मुरारिलाल शर्मा के स्वभाव में बहुत कुछ समानता थी। दोनों ही अद्भुत वक्ता और लेखक थे। दोनों ही अद्भुत तार्किक और शास्त्रार्थ में विचित्र ऊहावान् थे। दोनों महानुभाव अपने भोगवाद के सिद्धान्त के लिये प्रसिद्ध थे। दोनों ही कहा करते थे कि ईश्वर जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है, जो कुछ भोग हैं वे कभी नहीं टल सकते। इस लिये सुख-दुःख को समान मान कर अपना कर्तव्य-पालन करना चाहिये। दोनों ही ने प्रचार के लिये अपने घर का रुपया स्वाहा कर दिया और इन दोनों ही नररत्नों ने अन्तिम श्वास तक ऋषि दयानन्द के उद्देश्य को पूर्ण करने के लिये अपने जीवन समर्पित किये। दोनों ही महानुभाव आर्य समाज के उज्ज्वल रत्न थे। इनका आदर्श जीवन प्रत्येक आर्य के लिए अनुकरणीय है।

गुरुकुलों की स्थापना का तांता

साहित्य महारथी स्व० पं० पद्म सिंह शर्मा ने गुरुकुलों के जन्म का वृत्त कलकत्ते के 'विशाल भारत' के कार्तिक संवत् १९८५ के अंक में प्रकाशित किया है। देखिये 'दर्शनानन्द' पुस्तक का पृष्ठ १०९ और विशेष देखिए पृ० १२७।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल सिकन्दराबाद की स्थापना के अनन्तर पं० मुरारिलाल शर्मा को गुरुकुल के मन्त्रीपद का समस्त भार सौंप दिया गया जिसको उन्होंने आजन्म निभाया, कहने के लिये वे गुरुकुल मंत्री थे परंतु वास्तव में वे ही इसके कर्णधार थे।

प्रारम्भिक दशा में स्वामी दर्शनानंदजी महाराज भी गुरुकुल के लिये कभी-कभी धन ले आया करते थे किन्तु थोड़े ही दिनों के बाद उन्होंने बदायूँ, विरालसी, पोठोहार और अन्त में महाविद्यालय ज्वाला पुर की स्थापना की, अतएव वे सिकन्दराबाद गुरुकुल की विशेष आर्थिक सहायता न कर सके। वे शर्मा जी जैसे सुयोग्य और कर्मठ मित्र की प्रयत्नशीलता को भली-भाँति जानते थे, इसलिये उनको अब इधर की चिंता नहीं रही। शर्मा-जी के प्रचुर परिश्रम से गुरुकुल ने आठ ही वर्ष में असाधारण उन्नति कर ली।

सन् १९०६ ई० में लगभग १०० ब्रह्मचारी थे और आठ बड़े बड़े विद्वान् अध्यापन का कार्य कर रहे थे। इस समय स्व. श्रीयुत पण्डित नरदेव जी शास्त्री वेदतीर्थ मुख्याधिष्ठाता थे। एक उपदेशक श्रेणी भी चलती थी जिसमें २० छात्र थे, इन पंक्तियों का लेखक भी उनमें एक छात्र था। श्री पं. मधुसूदन जी मैथिल आचार्य थे, महा-वैयाकरण श्री पं. श्यामलाल शर्मा, पहासू निवासी मुख्य अध्यापक थे। शर्मा जी के साथ दो तीन उपदेशक छात्र प्रचार कार्य के लिये बाहर भी जाया करते थे। बाहर जाने वाले छात्रों में (चरित्र लेखक) भी था। और सभी छात्र शर्मा जी की प्रसन्न मुद्रा का आनन्द लेते थे।

उस समय के गुरुकुल कार्यकर्ताओं में श्री पं. गंगा सहाय जी रईस 'डेवटा' का नाम विशेष उल्लेखनीय है। पं. गंगा सहाय जी पं. मुरारि लाल शर्मा जी की दक्षिण भुजा थे। पण्डित गंगा सहाय जी पण्डित जी का प्रेमवश 'शर्मा जी' कहा करते थे। इसलिये उनका शर्मा जी नाम रूढ़ि हो गया था। प्रत्येक मनुष्य पण्डित जी को इसी नाम से पुकारने लग गया था। अगले वर्षों में ब्रह्मचारियों की संख्या बहुत बढ़ गई थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठा० गंगासहायजी महेपा वाले भी गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को श्रद्धा और प्रेमवश अपने गाँव में बुलाकर यज्ञ कराते और गन्ने के रस की खीर बनवाकर खिलाया करते थे तथा एक गाड़ी गन्नों से भरवा कर खड़ी कर देते थे जिससे ब्रह्मचारी गन्नों का रस चूस कर आनन्द लेते थे।

पं० गंगासहाय जी रईस डेवटा, ठा० गंगासहाय जी महेपा, ला० खेमचन्द्र जी सरायवासी, पं० राधेलाल जी व पं० धर्मसहाय जी आढ़ा, पं० बालमुकुन्द जी व पं० मिश्रीलाल जी डेवटा, ला० दुलीचन्द जी चन्द्रावली, चौ० सालिगराम जी मुहाना, पं० सुन्दरलाल जी कतियावली तथा कई सज्जन किशनपुर के, ये सभी लोग शर्मा जी के उपदेशों से ही आर्य हुए थे, इसलिये सभी लोग उनको अपना धर्म गुरु मानते थे। ये सब लोग प्रत्येक समय उनके कार्यों में सहायता करते थे। इनके अतिरिक्त मेरठ, मुज़फ्फ़रनगर, देहली, अलीगढ़, .खुर्जा, ग़ाज़ियाबाद, जहाँगीराबाद आदि के सहस्रों मनुष्य उनको अपना गुरु मानते थे। सर्वसाधारण लोग पण्डित जी को शर्मा जी के नाम से सम्बोधित करते थे। पं० गंगासहायजी और शर्माजी अनन्य मित्र थे। अतएव यह कहना अत्युक्ति नहीं है कि इन दोनों ही महानुभावों ने महान् परिश्रम करके गुरुकुल की नींव को सुदृढ़ बना दिया। पण्डित जी शर्माजी के कथन को बड़ी ही श्रद्धा से सुनते थे। ये दोनों मित्र जिस कार्य को करना विचारते थे वह अनायास ही हो जाता था।

गुरुकुल सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का मिलाप और विच्छेद

सन् १९०६ ई० में सिकन्दराबाद गुरुकुल इतनी उन्नति पर पहुँच गया कि स्थानीय प्रबन्धकारिणी सभा पर अत्यधिक भार आ पड़ा। तब सभा ने यह उचित समझा कि गुरुकुल का सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा उत्तर प्रदेश से कर दिया जावे। उधर प्रतिनिधि सभा में भी एक गुरुकुल खोलने पर विचार हो रहा था। दोनों ओर की आवश्यकताओं ने दोनों सभाओं को एक कर दिया और कुछ आवश्यक शर्तों के साथ गुरुकुल की समस्त सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा के अधीन कर दी गई।

उस समय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० भगवान् दीन मिश्र थे जो बहुत ही विचारशील और कर्मठ आर्यपुरुष थे। कुछ काल के अनन्तर ही प्रतिनिधि सभा ने अनेक परिवर्तन करने चाहे किन्तु स्थानीय समिति ने उन परिवर्तनों को स्वीकार नहीं किया, तब पारस्परिक मतभेद हो गया अतः स्थानीय समिति को अपनी गुरुकुल शाखा पृथक् खोलनी पड़ी।

सन् १९०७ के प्रारम्भ में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश गुरुकुल को पूरे सामान सहित फ़र्रुख़ाबाद ले गई। फ़र्रुख़ाबाद से यही गुरुकुल राजा महेन्द्र प्रताप द्वारा प्राप्त भूमि में सन् १९११ ई० में वृन्दावन लाया गया जो स्थायी रूप से वहीं स्थापित है। देश में सबसे पहला गुरुकुल यही है जिसे १८९८ ई० में पं० कृपाराम शर्मा और पं० मुरारिलाल शर्मा ने स्थापित किया था। उसी समय अर्थात् गुरुकुल के फ़र्रुख़ाबाद जाने पर सिकन्दराबाद नगर से पुनः गुरुकुल को स्थानान्तरित कर पूर्व स्थान में स्थापना करनी पड़ी जो अब तक उसी रूप में विद्यमान है। आर्य प्रतिनिधि सभा ने गुरुकुल के साथ जब खुला विरोध प्रारम्भ किया और प्रसारित किया कि 'जिस संस्था का प्रतिनिधि सभा से सम्बन्ध नहीं है उसको धन की सहायता कभी नहीं देनी चाहिये, उस संस्था का कोई अस्तित्व नहीं है जिसका प्रतिनिधि सभा से सम्बन्ध नहीं है।' इस प्रकार के अनेक लेख 'आर्यमित्र' में भी निकलते रहते थे, परन्तु शर्मा जी ने इन विरोधों की कभी परवाह नहीं की। उनका लक्ष्य तो निःस्वार्थ सेवा करना मात्र था। वे कहते करते थे कि विरोध का सामना करने के लिये अपनी शक्ति का अप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यय करने की अपेक्षा अपना कार्य करना लाख गुना श्रेयस्कर है। विरोध वे लोग करते हैं जिनको कोई काम नहीं है। जिनको गुरुकुल के कार्यों से अवकाश ही नहीं है वे किसका विरोध करें। सुतरां २८ वर्ष निरन्तर शर्मा जी ने अपने इस गुरुकुल को सुचारु रूप से चलाया जो अब भी उसी प्रकार बराबर चल रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्ताओं के साथ शर्मा जी के विरोध का एक विशेष कारण था जिसका उल्लेख करना यहाँ अत्यावश्यक है। शर्मा जी का यह सिद्धान्त था कि गुरुकुलों में शुल्क कभी नहीं लगना चाहिये, क्योंकि शुल्क लगने से उन्हीं के बच्चे पढ़ सकेंगे जो अमीर हों और शुल्कादि व्यय वहन कर सकते हों। भारतवर्ष की निर्धन प्रजा के पास इतता धन नहीं है जो वह १५ रु० या २० रु० मासिक एक बालक के पढ़ाने पर ख़र्च कर सके। मान लीजिये किसी के छः बच्चे हैं और उसे प्रत्येक के लिये १५ रु० या २० रु० मासिक देना पड़ता है तो ९० रु० या १२० रु० मासिक देने पड़ेंगे। अब इस निर्धन देश में ऐसे कितने मनुष्य निकलेंगे जो इतना व्यय सह सकें? इसके अतिरिक्त सबसे बड़ा दोप यह है कि जब गुरुकुलों के अधिकारी साधारण जनता से भी दान लेते हैं, अपितु यह कहने में भी अत्युक्ति न होगी कि ग़रीबों के दान के ऊपर ही गुरुकुल के संचालन का विशेष भार है, तब उनके रुपये से अमीरों के लड़कों को पढ़ाना सरासर अन्याय नहीं तो क्या है?

कोई भी मनुष्य अपने हृदय पर हाथ रखकर बतावे कि शुल्क लेने वाले गुरुकुलों से कितने निर्धन विद्यार्थियों को लाभ हुआ है? जब ग़रीबों को कोई लाभ नहीं पहुँचता तब उनसे दान लेकर अमीरों के बच्चों को पढ़ाना कदापि न्याय संगत नहीं है। सभा के अधिकारियों को कोई अधिकार नहीं है कि वे ग़रीबों से धन की अपील करें। इस पर यह आक्षेप किया जाता है कि १५ रु० या २० रु० में व्यय पूरा नहीं होता, इसलिये इसकी पूर्ति के लिये बाक़ी धन दान लेकर ही पूरा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किया जा सकता है। इसका उत्तर यह है कि यदि इतने से व्यय पू
नहीं होता तो आप उन पर २० रु० से अधिक शुल्क कर दीजिये
किन्तु ग़रीबों से माँगने का तो आपको किसी प्रकार भी अधिकार नह
है। हम पूछते हैं कि अमीर और ग़रीब दोनों के धन से तो अमी
के बालक पढ़ गये, अब निर्धन बालकों को पढ़ाने का क्या प्रबन्
आपने किया ? क्या उनका भी शिक्षा में उतना भाग नहीं है, जितन
कि अमीर बालकों का है ? यदि यह कहा जाये कि गुरुकुलों से समा
सेवक उत्पन्न किये जाते हैं, इसलिए प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि
इसमें सहायता दे तो हम यह कहते हैं कि क्या ग़रीबों के बाल
समाज सेवक नहीं बन सकते।

शर्मा जी का सिद्धान्त तो वस्तुतः यह था कि दान पर चलने वा
शिक्षा संस्थाएँ सर्वसाधारण के लिये समान रूप से खुली हो
चाहियें। गुरुकुलों में बड़ी बड़ी इमारतों की आवश्यकता नहीं है अ
न मंहगे शिक्षकों से गुरुकुल चल सकते हैं। ब्रह्मचारियों का खा
पान साधारण हो और वे सभा के अधीन नहीं होने चाहियें। उन
शुल्क न लगाया जावे। प्रत्येक ज़िले में आवश्यकतानुसार गुरु
खोले जावें। उनका प्रबन्ध ज़िले के आर्य समाज मिलकर क
अपने ज़िले के गुरुकुलों को ही ज़िला धन दे और वहीं के बा
उसमें पढ़ें। प्रतिनिधि सभा केवल निरीक्षण करती रहे। ऐसा क
से सभा इस चिन्ता से मुक्त हो जायगी और गुरुकुल भी ठीक
सकेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य कार्य तो प्रचार और वै
साहित्य सृजन, प्रकाशन और वितरण होना चाहिये। इसके अ
रिक्त गौण कार्य सर्वसाधारण के हाथ में हो। ऊपर कहा गया है
गुरुकुलों का आदर्श निःशुल्क शिक्षा देना है, सो जब प्रतिनिधि स
ने गुरुकुल में शुल्क लेना आरम्भ किया तो एक ऐसे गुरुकुल की आ
श्यकता हुई जो निःशुल्क हो जिसमें ग़रीब-अमीर सब वेदाध्ययन
सकें, तदनुसार इस गुरुकुल की पुनः स्थापना हुई और विरोध
कारण यही मतभेद बना।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल सिकन्दराबाद में कर्मवीर तपस्वी श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा को सभी ब्रह्मचारी, उपदेशक कक्षा के छात्र तथा कर्मचारी पिता के नाम से ही सम्बोधित करते थे क्योंकि सभी को उनसे पितृस्नेह से भी अधिक प्यार प्राप्त होता था। सबके लालन पालन तथा शिक्षा में इतना प्रेमपूर्ण सद्भाव रहता था कि वो अपने गुरुकुलीय ब्रह्मचारियों और उपदेशक कक्षा के छात्रों को सर्वोपरि देखना चाहते थे। वास्तव में यदि शर्मा जी को अपना जैसा सहयोगी दूसरा मिल गया होता तो यह संस्था भारत में अपने ढंग की अद्वितीय होती।

कार्तिक मास के गंगा स्नान पर गढ़मुक्तेश्वर में गुरुकुल का प्रचार कैम्प प्रतिवर्ष लगा करता था, गुरुकुल के ब्रह्मचारी भी इस कैम्प में सम्मिलित हुआ करते थे क्योंकि कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर गढ़-मुक्तेश्वर में बड़ी भीड़ इकट्ठी होती है। इसमें ५-६ लाख व्यक्ति एकत्रित हो जाते हैं। इनमें प्रायः अधिक संख्या में ग्रामीण ही होते हैं। शर्मा जी ने उनमें प्रचार के हेतु ही कैम्प लगाना प्रारम्भ किया था, इससे थोड़े खर्च पर आर्य समाज का बड़ा प्रचार होता था, गुरुकुल की ख्याति भी बढ़ती थी और गुरुकुल को दान भी प्राप्त हो जाता था। अच्छे-अच्छे आर्य समाज के उपदेशक तथा प्रसिद्ध प्रसिद्ध भजनीक शर्माजी के प्रति श्रद्धा और प्रेम के कारण इसही कैम्प में आकर विश्राम करते थे। पहिले तो शर्मा जी हापुड़ आर्यसमाज की तरफ़ से जो प्रचार कैम्प लगता था उससे ही प्रचार कार्य करते थे किन्तु फिर शर्मा जी ने गुरुकुल की तरफ़ से ही प्रचार कैम्प लगाना शुरू कर दिया था, जहाँ गुरुकुल के बड़ी कक्षाओं के छात्र भी उपदेश कार्य में संलग्न रहते थे और ब्रह्मचारियों को बोलने के अभ्यास के लिये सुअवसर भी प्राप्त हो जाता था। गुरुकुल कैम्प से घोषणा होती थी कि कोई भी अन्य धर्मावलम्बी अपनी शंकाओं का समाधान कर सकता है अथवा शास्त्रार्थ कर सकता है। मेले में यदि कोई पाखण्डी दल अपना कैम्प लगाकर प्रचार कार्य आरम्भ करता था तो शर्माजी अपने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचारियों को लेकर उनके कैम्प में ही जाकर सिंह गर्जना के स
उस पाखण्ड का खण्डन करते थे जिससे कभी-कभी तो उनके
ही उखड़ जाते थे।

एक वर्ष गढ़मुक्तेश्वर के मेले पर देहरादून के प्रसिद्ध
श्री बलदेव सिंह जी ने अपना लम्बा चौड़ा कैम्प लगाया। उ
पुत्र मोहन था, उसका देहान्त हो गया था अतः वे सबको
उपदेश देते थे कि "तू तो मेरा प्यारा बेटा मोहन है" इसका ही
जप करें। बहुत से सनातनी पण्डित माला लेकर कैम्प में यही
करने बैठ गए थे। पं० मुरारिलाल जी शर्मा को जब इस पाखण्ड
पता लगा तो वो भी गुरुकुल कैम्प से कुछ बड़े ब्रह्मचारियों को
लेकर उस कैम्प में जा धमके और कहा कि यह क्या अजब पा
है। पण्डितों से कहा कि तुम रुपयों के प्रलोभन से भगवान् के
के स्थान पर मरे हुए लड़के मोहन का जप करने लगे हो, या तो
पाखण्ड को बन्द करो अन्यथा शास्त्रार्थ करो। सेठ जी ने इस
के लिये बड़ा रुपया खर्च किया था और मानव धर्म नाम की
मोटी पुस्तकें छपवाकर बाँटी थी किन्तु शर्मा जी की ललकार से पं
मण्डल घबड़ा उठा और फिर माला का जाप ही समाप्त हो गया
कैम्प उखड़ गया। इस प्रकार शर्मा जी किसी भी प्रकार के पाख
को बर्दाश्त ही नहीं करते थे। शर्मा जी के शिष्य पं० गंगाशरण
पं० बालमुकुन्द जी आदि उपदेशक तथा चौधरी तेजसिंह जी पार
वाले और पं० बस्तीराम जी (प्रज्ञाचक्षु) आदि प्रसिद्ध भजनीकों
भजनों से लोग बड़े प्रभावित होते थे। गुरुकुल की भजन मण्ड
जिसमें मुन्शीसिंह जी फरकना वाले, दूसरे मुन्शीसिंह जी बहोरा
वाले, अमीचन्द जी महेपा वाले तथा गंगाराम जी माय भटौना व
शामिल थे, गुरुकुल के प्रचार कार्य में बड़ी सहायता करते थे इस प्र
गंगा की रेती में आठ दिन तक मेले के अवसर पर मंगल रहता थ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह प्रचार कार्य शर्मा जी के जीवन पर्यन्त निरन्तर चलता रहा किन्तु उनके जीवन के वाद उनके जीवन के साथ समाप्त भी हो गया।

शास्त्रार्थ शिक्षण

श्री शर्मा जी के आदेश से गुरुकुल में वाग्वर्धनी सभा की भी स्थापना की गई थी जिसमें उपदेशक कक्षा के छात्रों और ब्रह्मचारियों को व्याख्यान की शैली तथा शास्त्रार्थ करने के कौशल की शिक्षा भी दी जाती थी, शर्मा जी का विचार था कि गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को कोरा पण्डित ही नहीं होना चाहिये, पाण्डित्य के साथ व्याख्यान चातुरी और शास्त्रार्थ की कला भी जाननी चाहिये जिससे गुरुकुल से स्नातक होने के वाद ब्रह्मचारी सफलतापूर्वक सामाजिक क्षेत्र में कार्य कर सकें और यशो लाभ करें, इस ही दृष्टि से वे गुरुकुल के बड़े ब्रह्मचारियों को कभी-कभी शास्त्रार्थों में जोत दिया करते थे। इसका लाभ यह होता था कि ब्रह्मचारी संस्कृत में भाषण, तथा हिन्दी में भाषण और शास्त्रार्थ करने में प्रवीण हो जाते थे। इन सबमें भाग लेने के लिये स्वाध्याय भी काफी करना पड़ता था जिससे वैदिक सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञान भी हो जाता था।

दूदाहेड़ी मुज़फ़्फ़रनगर का शास्त्रार्थ

दूदाहेड़ी अच्छी जनसंख्या का १ ग्राम है जिसमें जाटों की संख्या अधिक है। यहाँ जाटों के यज्ञोपवीत को लेकर विवाद खड़ा हो गया। सनातनी पण्डित कहते थे कि जाटों को यज्ञोपवीत लेने का कोई अधिकार नहीं है और आर्य समाज के विद्वान् कहते थे कि जाट क्षत्रिय हैं इसलिये इनको यज्ञोपवीत लेने का अधिकार है इसही आधार पर दोनों तर्फ से शास्त्रार्थ की तैयारियाँ होने लगीं यह १९१८ के लगभग की वात है। दूदाहेड़ी ग्राम निवासियों ने आर्य समाजके प्रचार तथा शास्त्रार्थ के लिये श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा को बुलाया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्माजी कतिपय ब्रह्मचारियों तथा पं० गंगाशरणजी महोपदेशक को साथ लेकर ग्राम पहुँच गए। उधर पं० छाजूरामजी शास्त्री तथा उनका शिष्य मण्डल तथा और पौराणिक पंडित भी पहुँच गए पहिले तो दोनों तर्फ से कुछ समय तक संस्कृत में पत्र व्यवहार चलता रहा फिर शास्त्रार्थ के लिये दोनों तर्फ से मेजें लग गईं। चारों तर्फ के ग्रामीणों की बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई और मुज़फ्फ़रनगर से भी आये सज्जन शास्त्रार्थ में सम्मिलित हुए।

आर्य समाज की तर्फ से श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा थे और सनातन धर्म की तर्फ से श्री पं० छाजूरामजी शास्त्री। दोनों तर्फ से उत्तर प्रत्युत्तर चल रहे थे यज्ञोपवीत के अधिकार के सम्बन्ध में प्रमाण भी दिये जा रहे थे, इतने में अहंकारवश पं० छांजूरामजी शास्त्री ने शर्माजी को मुन्शीजी कहकर सम्बोधित किया उसही समय शर्माजी ने अपने द्वितीय पुत्र महेन्द्रदेव शास्त्री (जो मेज के पास शर्माजी के नज़दीक ही बैठे थे) को इशारा किया कि पं० छाजूरामजी शास्त्री के घमण्ड को दूर करने के लिये संस्कृत में उत्तर दो। शास्त्री जी ने खड़े होकर धारा प्रवाह संस्कृत की जो झड़ी लगाई उससे पं० छाजूराम शास्त्री और उनका शिष्य मण्डल अवाक् ही रह गया। शास्त्री जी की अवस्था २० वर्ष के लगभग ही थी, इस अवस्था में ऐसे वाक्पटुत्व को देखकर जाटों के हर्ष का कोई ठिकाना न रहा और उन्होंने शास्त्रीजी को कंधों पर बिठाकर हर्षोल्लास का प्रदर्शन किया और आर्य समाज की जय के गगनभेदी नारों से आकाश गूंज उठा। आर्य समाज के प्रचार के साथ जाटों के यज्ञोपवीत किये गए और दूसरे दिन प्रातःकाल सनातनी पंडित अंधेरे में ही अपने २ बिस्तर बांधकर गाँव से रवाना हो गए। इस प्रकार शास्त्रार्थों के अवसर पर भी गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को भेजा जाता था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथरस का शास्त्रार्थ

सन् १९१६ के लगभग की बात है। आर्य समाज हाथरस का उत्सव था। उत्सव के अवसरों पर प्रायः आर्य समाजों की तर्फ़ से अन्य धर्मावलम्बियों को शंका-समाधान अथवा शास्त्रार्थों के लिये चेलेञ्ज दिया जाया करता था। यहाँ भी ऐसा ही हुवा। सनातनधर्म की तर्फ़ से श्री० पं० ताराचन्द्रजी शास्त्री शास्त्रार्थ को तैयार होकर आ गए। आर्य समाज के अधिकारियों ने गुरुकुल वृन्दावन सूचना भेजी किन्तु वहाँ से कोई पण्डित न आया तो आर्य समाज के कार्य-कर्ताओं ने श्री० पं० मुरारिलालजी शर्मा से प्रार्थना की कि सनातनी पण्डितों से शास्त्रार्थ करने के लिये हमें कोई पण्डित चाहिये। शर्मा जी ने गुरुकुल की बड़ी कक्षाओं के २-३ छात्र उनके साथ भेज दिये और ब्रह्मचारियों की पीठ थपक कर और आशीर्वाद देकर कहा कि जाओ मोर्चा फ़तह करके आओ। ब्रह्मचारियों को संस्कृत बोलने का बड़ा अच्छा अभ्यास था। शास्त्रार्थ में भी यह नियम रखा गया कि पहिले ५ मिनट संस्कृत में बोलना होगा और फिर ५ मिनट हिन्दी में पं० ताराचन्द्रजी शास्त्री के मुक़ाबले पर गुरुकुल के ब्रह्मचारी पं० भूदेवजी शास्त्री थे। शास्त्रार्थ का विषय "धार्मिक ग्रन्थों में वेद विरुद्ध बातें प्रक्षिप्त एवं अमान्य हैं" यह था, क्योंकि सनातनियों का मत यही रहा है कि वेदों से लेकर पुराण, रामायण, मनुस्मृति, महाभारत आदि ग्रन्थों में जो कुछ निर्दिष्ट है वह सभी मान्य है। जब भूदेव शास्त्रीजी ने रामायण मनुस्मृति आदि में मांस भक्षण तथा सुरापान आदि के प्रसंग दिखाये तो पं० ताराचन्द्र शास्त्री जी को निरुत्तर होना पड़ा। आर्य समाज के जयघोष के साथ शास्त्रार्थ समाप्त हुआ। आर्य समाज के अधिकारियों ने गुरुकुल की भूरि २ प्रशंसा की—और गुरु-कुल के भक्त बन गए, उस समय गुरुकुल को अच्छा दान भी दिया। इस प्रकार श्री० पं० मुरारिलालजी शर्मा अपने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को सभी प्रकार की कला सीखने के लिये प्रेरणा देते रहते थे। शर्माजी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की यह भी इच्छा थी कि संस्कृत के साथ गुरुकुल के ब्रह्मचारी फ़ारसी, अरबी तथा उर्दू भाषा को भी सीखें क्योंकि मुसलमानों से शास्त्रार्थ करने के लिये इन भाषाओं का ज्ञान अत्यावश्यक है।

उन्हीं दिनों की बात है, दो बड़े मौलवी आर्य समाज में दीक्षित हो गए थे। उनमें से एक पं० सत्यदेवजी के नाम से और दूसरे पं०शान्ति स्वरूपजी के नाम से पुकारे जाते थे। शर्माजी पं०सत्यदेवजी को गुरुकुल में ही अरबी और फ़ारसी पढ़ाने के लिये ले आए थे जो गुरुकुल में रहकर ब्रह्मचारियों को अरबी और फ़ारसी पढ़ाते थे। डा० छदम्मीलालजी उर्दू पढ़ाते थे। इससे पाठक यह अनुमान लगा सकते हैं कि शर्माजी अपने ब्रह्मचारियों को क्या बनाना चाहते थे, वे कहा करते थे जब तक कई भाषाओं का व्यक्ति विद्वान् न होगा तब तक वह मिश्नरी नहीं बन सकता क्योंकि उसका वास्ता अनेक धर्मावलम्बियों से पड़ता है।

समस्त गुरुकुलों में केवल गुरुकुल सिकन्दराबाद ही ऐसी संस्था थी जहाँ उपदेशक कक्षा थी। इन कक्षाओं से वाग्मी तथा शास्त्रार्थ निपुण व्यक्ति निकाले जाते थे। श्री० पं० हरिदयालुजी महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा श्री० पं० मंगलदेवजी आदि श्रेष्ठ वक्ता इन्हीं कक्षाओं से निकले रत्न थे। इस प्रकार श्री० पं० मुरारि लालजी शर्मा के अनथक परिश्रम, महती कृपा तथा उनके तपोमय जीवन के द्वारा ही सैंकड़ों शास्त्री, आचार्य, तीर्थ, परीक्षोत्तीर्ण प्रकाण्ड पण्डित तथा सुयोग्य वक्ता और भजनोपदेशक आर्य समाज की सेवा के लिये प्रस्तुत हुए। प्रसिद्ध भजनोपदेशक तथा वक्ता कुँवर सुखलाल जी ने भी प्रारम्भ में गुरुकुल से ही योग्यता प्राप्त की थी।

श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा को उनकी तपोनिष्ठा, कर्मशीलता तथा प्रेम के कारण बड़े-बड़े विद्वानों, गुरुकुल प्रेमियों तथा ऋषि दयानन्द के भक्तों का समय-समय पर पूरा पूरा सहयोग मिलता रहा जिन्होंने बड़ी लगन और तन्मयता से गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षित करके आर्य समाज की पूरी-पूरी सेवा की। श्री पं० श्यामलाल जी पहासू वालों ने तो अपने समय में यह नियम ही वना दिया था कि गुरुकुल भूमि में कोई भी ब्रह्मचारी संस्कृत के अतिरिक्त किसी भाषा का प्रयोग नहीं कर सकता। इसका परिणाम यह हुआ कि छोटे-छोटे ब्रह्मचारियों के अतिरिक्त गुरुकुल के रसोइये, भंडारी तथा कहार तक भी साधारण संस्कृत समझ लेते थे और टूटी फूटी संस्कृत बोलने भी लगे थे। वास्तव में बोलने से भाषा का ज्ञान बड़ी जल्दी होता है। यदि सभी गुरुकुलों में व्यवहार की भाषा संस्कृत हो जावे तो हिन्दी की तरह संस्कृत भी बोली जा सकती है। जिन विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ उनकी पूरी नामावली तो हमको प्राप्त नहीं हो सकी किन्तु पूर्ण प्रयत्न करने पर जिनके नाम हम प्राप्त कर सके उनकी नामावली नीचे दी जा रही है। यदि कोई सज्जन गुरुकुल की विशेष सेवा करने वाले अन्य व्यक्तियों के नाम भी हमें लिख भेजेंगे तो हम उनके नाम भी द्वितीय संस्करण में प्रकाशित कर देंगे। हमारी अज्ञता के कारण जिनके नाम रह गए हों उनसे हम क्षमा प्रार्थी हैं।

(१) श्री गुरुवर आचार्य पं० मधुसूदन जी वाराणसी वाले।
(२) श्री पं० भीमसेनजी शर्मा आचार्य (लेखक संस्कार चन्द्रिका)।
(३) ,, श्यामलाल जी शर्मा वैयाकरण पहासू निवासी।
(४) ,, दिलीपदत्तजी शर्मा उपाध्याय (लेखक मुनिचरितामृत, संस्कृतालोक आदि)।
(५) श्री पं० देवेन्द्रनाथजी शास्त्री सांख्यतीर्थ (उपनिषद् भाष्यकर्ता तथा लेखक नास्तिकवाद)।
(६) ,, तृषाराम जी शर्मा व्याकरणाध्यापक।
(७) ,, नरदेव जी शास्त्री वेदतीर्थ (कुलपति महाविद्यालय ज्वालापुर)।
(८) ,, गणपति शर्माजी प्रकाण्ड विद्वान् तथा प्रसिद्ध वक्ता।
(९) ,, कपिलेश्वर जी झा शास्त्री नैयायिक।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१०) श्रीपं० शिवरत्न जी शर्मा आचार्य ।
(११) ,, गोपाल प्रसाद जी (विहार) ।
(१२) ,, महामहोपाध्याय जी (श्री पं० गोपालप्रसाद जी के पिता) ।
(१३) ,, नन्दलाल जी व्यास पंजाव ।
(१४) ,, शिवचरण जी व्याकरणाध्यापक ।
(१५) ,, भूमित्र शर्मा जी वेदाध्यापक ।
(१६) ,, वालकृष्ण जी दाक्षिणात्य ।
(१७) ,, त्रिलोकीनाथ जी साहित्याध्यापक ।
(१८) ,, दिवाकर जी साहित्याध्यापक ।
(१९) ,, रघुवरदयाल जी गणिताध्यापक ।
(२०) ,, ब्रह्मानन्द जी कार्यालयाध्यक्ष ।
(२१) ,, मिहीलाल जी आफ़िस कार्यकर्ता ।
(२२) ,, मटरूमल जी गणिताध्यापक ।
(२३) ,, कुँवर कर्ताकृष्ण जी इंग्लिशाध्यापक ।
(२४) ,, श्रीराम जी शर्मा ,,
(२५) ,, विष्णुमित्र जी ,,
(२६) श्री मास्टर दुर्गाप्रसाद जी ,,
(२७) ,, ,, धर्मसिंह जी ,,
(२८) श्रीपं० हरिश्चन्द्र जी
(२९) ,, त्रिपाठी जी गणिताध्यापक ।
(३०) ,, सत्यदेव जी अरवी के अध्यापक ।
(३१) डाक्टर छदम्मीलाल जी डाक्टर तथा उर्दू के अध्यापक ।
(३२) श्रीपं० गोपालप्रसाद जी वैद्य ।
(३३) ,, वेणीप्रसाद जी मुख्याधिष्ठाता ।
(३४) ला० भगवानदास जी मुख्याधिष्ठाता ।
(३५) श्रीपं० यज्ञदत्त शर्मा जी अजमेर ।

आदि आदि सभी विषयों के अध्यापक शर्मा जी की छत्रछाया में बड़े प्रेमपूर्वक गुरुकुल में कार्य करते रहे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल सिकन्दराबाद जिला बुलन्दशहर के कुछ प्रतिष्ठित विद्यार्थियों की नामावली—

१—डा० मंगलदेवजी शास्त्री पी० एच० डी० भूतपूर्व उपकुलपति बाराणसेय, संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी।

२—श्री रत्नाकर जी शास्त्री एम० ए० एल एल० बी० मजिस्ट्रेट राज्य भरतपुर।

३—डा० धर्मेन्द्रनाथजी शास्त्री तर्क शिरोमणि भू० पू० अध्यक्ष संस्कृत विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय।

४—पं० द्विजेन्द्रनाथजी शास्त्री तर्क शिरोमणि मेरठ।

५—पं० देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री सांख्ययोग तीर्थ।

६—पं० यज्ञदत्त जी शर्मा अजमेर।

७—पं० गंगाशरण जी जिला बुलन्द शहर।

८—प्रो० भूदेवशर्मा शास्त्री एम.ए. प्रो०क्रिश्चियन कालेज कानपुर.

९—पं० महेन्द्रदेव जी शास्त्री, मालिक मुरारि फ़ाइन आर्ट वर्क्स देहली।

१०—पं० सूर्यकान्तजी शास्त्री बी० ए० अध्यक्ष संस्कृत विभाग डी० ए० वी० हा० सै० स्कूल दरियागंज, देहली।

११—पं० शुक्रराजजी शास्त्री नैपाल राज्य।

१२—पं० वाक्पतिराजजी शर्मा नैपाल राज्य।

१३—पं० विश्वभानुजी शास्त्री कविराज कतियावली।

१४—पं० बालकृष्णजी शास्त्री कविराज, अलीगढ़।

१५—पं० सुखदेवजी शास्त्री अध्यक्ष संस्कृत विभाग डी० ए० वी० हा० स्कूल मुज़फ़्फ़र नगर।

१६—पं०गुरुदत्तजी शास्त्री, मुख्याध्यापक स्कूल खैर जिला अलीगढ़।

१७—पं० मूलचन्द्रजी शास्त्री एम० ए० एम० एल० ए०।

१८—पं० लेखरामजी शास्त्री आचार्य गुरुकुल डोरली (मेरठ)।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९—पं० रामचन्द्र जी शास्त्री पुरोहित आर्य समाज विरला लाइन्स देहली।

२०—पं० धर्मेन्द्रनाथजी आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि देहली।

२१—पं० रामेश्वरदयाल जी वैद्यराज वेगमाबाद।

२२—पं० हरदयालुजी महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब।

२३—पं० कृपाशंकर जी शास्त्री वैद्य ग़ाज़ियाबाद।

२४—पं० हरिशंकर जी शास्त्री अध्यक्ष संस्कृत विभाग डी० ए० वी० स्कूल बुलन्द शहर।

२५—पं० मुरारिलालजी शास्त्री अध्यक्ष संस्कृत विभाग डी०ए०वी० हा० सै० स्कूल हिसार।

२६—पं० यज्ञदत्तजी शास्त्री अध्यक्ष संस्कृत विभाग हिन्दू हाई स्कूल सोनीपत।

२७—पं० कर्णदेव जी शास्त्री पुरोहित आर्य समाज सब्जी मंडी देहली।

२८—कुँ० सुखलालजी आर्य मुसाफ़िर प्रसिद्ध भजनोपदेशक।

२९—पं० रामस्वरूपजी शास्त्री काव्य तीर्थ अध्यक्ष संस्कृत विभाग हाई स्कूल रेवाड़ी।

३०—पं० मथुराप्रसादजी शास्त्री मु० अ० सं० वि० हाई स्कूल शिकोहाबाद।

३१—पं० राजपालजी शास्त्री बी० ए० मु० अ० संस्कृत हा० सै० स्कूल दिल्ली।

३२—डा० हरिदत्तजी शास्त्री षोडश तीर्थ अध्यक्ष संस्कृत विभाग डी० ए० वी० कालिज कानपुर।

३३—पं० बृहस्पति जी शास्त्री तर्क शिरोमणि, भूतपूर्व उपकुलपति गुरुकुल वृन्दावन।

३४—श्री ब्रह्मचारी सत्यपाल जी धनुर्धर बम्बई।

३५—श्रीआचार्य विभुदेवजी शास्त्री सम्पादक—संस्कार पथ बम्बई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३६—श्री पं० लक्ष्मीशंकर जी शास्त्री लखनऊ।

३७—श्री पं० रामचन्द्र जी शास्त्री ग़ाज़ियाबाद।

३८—श्री पं० कान्तिचन्द्रजी वैद्यराज दनकौर आदि आदि। ऊपर की नामावली जितनी हमें मालूम हो सकी लिख दी है किन्तु इससे बहुत अधिक संख्या प्रतिष्ठित विद्वानों की है जो गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करते रहे हैं।

चौधरी छज्जनसिंह अजायबपुर जिला बुलन्द शहर के रहने वाले थे वे शर्मा जी को अपना गुरु मानते थे। एक समय वे शर्मा जी को यज्ञ कराने को ले गए। यज्ञ के पश्चात् जब शर्मा जी को छज्जनसिंह भोजन कराने लगे तो उन्होंने कहा कि छज्जनसिंह! हमें तो तुम भोजन करा रहे हो किन्तु गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के तो भोजन का इस समय कोई प्रबन्ध नहीं है। छज्जनसिंह जी ने अगले ही दिन जितना भी घर में अन्न था गाड़ी में भर कर गुरुकुल पहुँचा दिया लड़कों ने कहा पिता जी आपने सारा अन्न तो भर कर गुरुकुल भेज दिया अब हम क्या खावें। चौधरी जी ने उत्तर दिया कि वहाँ अनेक ब्रह्मचारी भूखे मर रहें हैं तुम्हारा भी परमात्मा प्रबन्ध करेगा।

श्री पं० श्रीधरजी प्यावलीवाले जो बड़े विद्वान थे जिन्होंने १२ वर्ष तक नदिया में रहकर न्याय शास्त्र का अध्ययन किया था उनकी कथा नयागंज सिकन्दराबाद में हो रही थी कथा के पूर्ण होने पर एक वैश्य महोदय ने पं० जी से कहा कि ऋषि दयानन्द भी एक हो गए हैं इस वाक्य को कहने से उनका तात्पर्य यह था कि पं० जी ऋषि दयानन्द के विचारों का खण्डन करें किन्तु पं० श्रीधर जी ने उत्तर में कहा कि बात तो ऋषि दयानन्द की ही ठीक है किन्तु कोई उन पर आचरण तो करे। पं० मुरारिलाल जी शर्मा के कानों में जब एक सनातनी विद्वान् के मुख से निकले ये शब्द पड़े तो ऋषि दयानन्द के प्रति अत्यन्त श्रद्धा उत्पन्न हुई और उस ही समय उन्होंने दुकान को ताला

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा दिया और उस ही समय से आर्य समाज के प्रचार में तन्मय होकर लग गए।

सुहाना जिला बुलन्द शहर में माघ मास में बूढ़े बाबू का बड़ा विशाल मेला होता है उसमें प्रचार करने के लिये गुरुकुल के कुछ ब्रह्मचारियों को लेकर शर्मा जी जाया करते थे। एक वर्ष उस मेले पर श्री पं० अखिलानन्द जी भी पहुँचे क्योंकि सनातन धर्मी लोग जिनमें पं० लक्ष्मीनारायण जी तथा पं० चोखेलाल जी प्रमुख थे उन्हें शास्त्रार्थ करने के लिये मेले के अवसर पर ले गए थे। पं० अखिलानन्द जी ने ऋषि दयानन्द पर आक्षेप करते हुए कहा कि यदि ऋषि दयानन्द नैष्ठिक ब्रह्मचारी और योगी थे तो बिना अनुभव के उन्होंने गृहस्थ सम्बन्धी बातें कैसे लिख दी हैं। शर्मा जी ने उत्तर दिया कि आयुर्वेद के ग्रन्थों में जो मल, मूत्र, विष आदि के गुण दोष लिखे हैं क्या उन्हें खाकर और पीकर ही लिखा गया है। ये सभी बातें प्रामाणिक ग्रन्थों के अध्ययन तथा समाधि द्वारा मालूम हो जाती हैं इसको सुनकर पं० अखिलानन्द जी चुप हो गए।

चौ० नत्थूसिंह जी नयागाँव बसन्तपुर के गुरुकुल के भक्तों में से थे और सदैव गुरुकुल की सहायता करते रहते थे शर्मा जी के कारण ही यह गाँव आर्य बना हुआ था।

एक वर्ष गर्मियों के दिनों में जबकि शर्मा जी भी गुरुकुल में ही थे एक मुसलमान सज्जन गुरुकुल में आए और उन्होंने पूछा कि क्या पं० मुरारिलाल जी शर्मा यहीं रहते हैं ? हाँ में उत्तर मिलने पर उन्होंने कहा कि मैं उनसे वैदिक धर्म के सम्बन्ध में कुछ जानना और आर्य समाज में दीक्षित होना चाहता हूँ।

जब वो शर्माजीसे मिले तो उन्होंने कहा जो कुछ आप जानना चाहें जान सकते हैं और जो कुछ पूँछना चाहें बड़ी प्रसन्नता से पूँछ सकते हैं। वास्तव में यह व्यक्ति शर्मा जी के प्राण लेने के लिये ही गुरुकुल आया था। कुछ बातों से कुछ लोगों को उस पर सन्देह होने लगा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और यह बात सर्वत्र फैल गई। अतः वह चुपके से बिना किसी को कुछ कहे गुरुकुल से खिसक गया, अन्यथा यह एक भयानक काण्ड हो जाता और आर्य समाज की बड़ी क्षति होती।

सन् १६१८ में शिवरात्रि के अवसर पर गुरुकुलोत्सव में ५ स्नातक निकाले गए थे। १.पं०भूदेवजी शास्त्री २.पं०महेन्द्रदेवजी शास्त्री ३.पं० शुक्रराजजी शास्त्री ४.पं०सूर्यकांतजीशास्त्री व पं०विश्वभानुजीशास्त्री। इन पाँचों स्नातकों को "विद्या भूषण" की उपाधि से विभूषित किया गया था। ये पाँचों ही स्नातक बड़े प्रतिभा शाली विद्वान् लेखक तथा वक्ता थे।

पं० शुक्रराज जी शास्त्री नैपाल राज्य के निवासी थे। इनके पिता श्री माधव राज जी जोशी ने अपने ३ पुत्रों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराया था। सबसे बड़े पुत्र अमर राजजी द्वितीय पुत्र शुक्रराज जी तथा तृतीय पुत्र वाक्पतिराज जी थे। श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा ने इन तीनों भाइयों को बड़ी प्रसन्नता के साथ गुरुकुल में इस सद्भावना से प्रविष्ट किया था कि ये तीनों भाई विद्वान् होकर नैपाल में वैदिक धर्म का प्रचार करेंगे, किन्तु कुछ वर्ष अध्ययन करने के बाद बड़े भाई अमर राज जी और छोटे भाई वाक्पतिराजजी तो अधूरी शिक्षा प्राप्त कर ही गुरुकुल से चले गये केवल शुक्रराज शास्त्री जी ने ही स्नातक होने तक गुरुकुल में पूर्ण शिक्षा प्राप्त की और श्री शर्मा जी की आज्ञा आशीर्वाद तथा उनके दिये हुए अन्तिम विचारों को लेकर पितृतुल्य श्री. पं० मुरारिलाल जी शर्मा के चरणों का स्पर्श कर नैपाल राज्य को चले गए। नैपाल पहुँचने के कुछ समय बाद शुक्रराज शास्त्री जी ने यह चेष्टा की कि नैपाल में आर्य समाज का प्रचार किया जावे और राज घराने के विचारों में भी आर्य सिद्धान्तों के प्रति प्रेम पैदा हो, किन्तु वहाँ के राज पण्डितों ने अपनी प्रतिष्ठा को ठेस लगते देखकर भयानक विद्रोह शास्त्री जी के विरुद्ध खड़ा कर दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि शुक्रराज शास्त्री जी को एक पेड़ पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लटका कर राजा की आज्ञा से फांसी दे दी गई। पूर्ण विवरण पढ़ने के लिए पं० शुक्रराज शास्त्री का जीवन पढ़िये।

इतने कट्टर और पवित्र विचार तथा आर्य समाज़ के लिये बलिदान देने की शक्ति पं० शुक्रराज शास्त्री को वीतराग़ तपस्वी तथा ऋषि दयानन्द के भक्त श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा के द्वारा ही प्राप्त हुई थी।

श्री पं मुरारिलाल जी शर्मा के जीवन काल में सिकन्दराबाद शास्त्रार्थों का अखाड़ा बना रहा—पौराणिक मुसलमान तथा ईसाइयों से शास्त्रार्थ होते ही रहते थे। सिकन्दराबाद का प्रसिद्ध शास्त्रार्थ जो मुसलमानों से हुआ था जिसके करने वाले श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी तथा श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा ही थे पृथक् "सिकन्दराबाद का शास्त्रार्थ" इस नाम से छपा है जिसे सज्जन लेकर पढ़ सकते हैं। हम उसे यहाँ देना उचित नहीं समझते।

एक शास्त्रार्थ पौराणिक पण्डितों से मूर्ति पूजा तथा अवतारवाद के ऊपर सिकन्दराबाद की अनाज की मंडी (गंज) में हुवा था जिसमें अनेक सनातनी पण्डित पधारे थे। इनमें शास्त्रार्थ करने वाले पण्डित गंगा विष्णु जी शास्त्री मुख्य थे। जो सनातनियों की तरफ़ से नियुक्त हुए थे। आर्य समाज की तर्फ़ से भी अनेक पण्डित उपस्थित थे किन्तु शास्त्रार्थ कर्ता आर्य समाज की तरफ़ से श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा ही थे। शर्मा जी ने कहा परमात्मा सर्वव्यापक और निराकार है, इस लिये सर्वव्यापक होने से वह एकदेशी नहीं हो सकता और निराकार होने से वह साकार नहीं हो सकता, किन्तु सनातनधर्मी परमात्मा को साकार और निराकार दोनों ही मानते हैं ये दोनों विरोधी बातें हैं जो एक में नहीं रह सकतीं पं० गंगा विष्णु जी ने कहा हम तो परमात्मा को साकार, निराकार, नीराकार, चीराकार सभी कुछ मानते हैं इस ही लिये परमात्मा सर्व शक्ति सम्पन्न होते हुए सभी कुछ कर सकता है वह पत्थर में भी है इस लिये मूर्ति की पूजा कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। शर्मा जी ने कहा फिर तो परमात्मा कीराकार, पीराकार, घटाकार, पटाकार, कुछ भी हो सकता है फिर राम कृष्ण की मूर्तियों की ही पूजा क्यों की जावे, आप अपने किसी पूर्वज की ही पूजा करने लग जाइये क्योंकि परमात्मा सभी में व्यापक है। यदि परमात्मा सर्व शक्ति सम्पन्न होते हुए सभी कुछ कर सकता है तो क्या वह अपने जैसे दूसरे ईश्वर को भी बना सकता है? वह अपना विनाश भी कर सकता है? इस पर बड़ी चहल पहल हुई तब शर्मा जी ने कहा अच्छा आप भी वेद को प्रमाण मानते हैं और हम भी वेद को स्वतः प्रमाण मानते हैं, आप मूर्ति पूजा का कोई वेद मंत्र पेश कीजिये क्योंकि हम तो स्पष्ट वेद मन्त्र यह पेश करते हैं कि '**नतस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः**' इसमें स्पष्ट ही यह कहा है कि उसकी कोई मूर्ति नहीं है तब पं० गंगा विष्णु जी शास्त्री ने वेद पुस्तक उठा कर एक मन्त्र बोला जिसमें स्पष्ट ही मूर्ति पूजा का वर्णन था। इसको सुनकर आर्य समाज के विद्वान् चकित होकर बोले हमने तो कभी यह मन्त्र वेद में नहीं पढ़ा। तब सनातनी पण्डितों से वेद पुस्तक मंगाकर अपनी वेद पुस्तकों से मिला कर देखा गया तो पता लगा कि अपना मन घड़न्त मन्त्र बनाकर और छपवा कर वेद पुस्तक में लगाया गया है। तब श्री गंगा विष्णु जी से कहा गया कि लीजिये इन वेद पुस्तकों में इस मन्त्र को दिखाइये तब सभा में बड़ा भारी हंगामा मच गया और सनातनियों ने अपनी हार होती देख बड़े शोर शराबे के साथ उत्सव को ही समाप्त कर दिया। दूसरी तर्फ पण्डित मुरारिलाल जी शर्मा की जय और आर्य समाज की जय के नारे लगने लगे और उत्सव लगभग रात्रि के ११ बजे समाप्त हुआ।

श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा में आर्य समाज के प्रचार की ऐसी लगन थी कि जो अच्छे से अच्छे मिश्नरियों में भी नहीं पाई जाती वे उसकी धुन में ही मस्त रहते थे। उस समय के अनेक विद्वान् तपस्वी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्यागी और धुन वाले ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें हम देवता ही कह सकते हैं। उनकी तपस्या के कारण ही आर्य समाज की नींव सुदृढ़ बनी और भारत में ही नहीं सारे संसार में उसका उज्ज्वल प्रकाश फैला। पं० मुरारिलाल शर्मा का सारा जीवन व्याख्यान देते और शास्त्रार्थ करते तो बीता ही किन्तु उन्होंने गुरुकुल सिकन्दराबाद के ज़बर्दस्त बोझ को ढोते हुए भी जीवन में प्रचार के निमित्त ऐसी अनेक योजनाएँ बनाई थीं जिनको देखकर उनके जीवन को धन्य ही कहना पड़ता है। "पहली योजना" वो एक पत्र प्रकाशित करते थे। जिसका नाम था "अनुपम" इसमें विधर्मियों के समस्त आक्षेपों के उत्तर होते थे और आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रतिपादन होता था। "दूसरी योजना" थी "मुरारि ट्रैक्ट सोसाइटी" जिसके द्वारा अनेक प्रकार के छोटे छोटे ट्रैक्ट निकाले जाते थे जिनका मूल्य भी)। या)॥ ही होता था। इन ट्रैक्टों द्वारा आर्य समाज का बड़ा प्रचार होता था। "तीसरी योजना" बड़े बड़े मेलों में कैम्प लगाकर आर्य सिद्धान्तों का प्रचार तथा शास्त्रार्थ किये जाते थे। "चौथी योजना" थी गड़बड़ ग्रन्थ माला की इसके द्वारा मुसलमानों के समस्त आक्षेपों के उत्तर देकर मज़हबे इस्लाम की गड़बड़ों का भंडा फोड़ किया जाता था। इस प्रकार के प्रचार को करने वाले उस समय ये दो तपस्वी महानुभाव ही थे एक स्वा० दर्शनानन्द जी तथा दूसरे श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा।

अपने अत्यन्त व्यस्त समय से भी कुछ समय निकाल कर शर्मा जी पुस्तकें लिखने का कार्य करते ही रहते थे। उन्होंने बहुत से ट्रैक्ट और पुस्तकें लिखी हैं किन्तु वो समस्त हमें उपलब्ध नहीं हो सकी हैं फिर भी जो हमें प्राप्त हुई हैं उनकी नामावली नीचे दी जाती है। जो सज्जन इनके अतिरिक्त उनकी लिखी हुई अन्य किसी पुस्तक की प्रति हमें भेजेंगे तो हम उनके आभारी होंगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) रूह की माहियत में उल्माए इस्लाम की गड़वड़ ।
(२) मज़हवे इस्लाम में साइंस की गड़वड़ ।
(३) मज़हवे इस्लाम में सभ्यता की गड़वड़ ।
(४) मज़हवे इस्लाम में पवित्रता की गड़वड़ ।
(५) फल्सफा मुहम्मदी ।
(६) इस्लामी दर्पण ।
(७) इस्लाम की दुर्गति ।
(८) आइना इस्लाम ।
(९) इस्लामी ढोल की पोल ।
(१०) मुसलमानी के बानी की कहानी ।
(११) तहारत ।
(१२) वारह मासा "विधवा विलाप" ।
(१३) इस्लामी तौहीद का नमूना ।
(१४) इस्लामी मज़हब की छानवीन ।
(१५) वारह खड़ी—"कक्का कमाल करके आर्यों ने दिखाया" आदि ।
(१६) भजन पचासा ४ भाग ।
(१७) गान्धी वारह खड़ी आदि आदि

इस प्रकार अनेक विधियों से प्रचार के कार्य को करने वाले निराले ही व्यक्ति होते हैं ! जो कभी रेल में थर्ड क्लास के डब्वे के अलावा सेकेण्ड क्लास में बैठना ही पसन्द नहीं करते थे । उनको हमेशा ध्यान रहता था कि समाज के पैसे को बचाकर उसे प्रचार कार्य में लगाया जावे । जो कन्धे पर खुर्जी और कम्बल डाल कर पद यात्रा करते थे तथा चना चबैना चाब कर धार्मिक शान्ति का आनन्द लेते थे । ऐसे त्यागी महात्मा अब देखने को भी नहीं मिलते ।

सन् १९१३ में स्वर्गीय श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा ने आर्य समाज चावड़ी बाज़ार देहली में एक अंग्रेज की शुद्धि की थी। उस समय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज के मन्त्री राय साहब लाला गिरधारीलाल जी वकील थे इस शुद्धि की शहर में बड़ी धूम रही और इस शुद्धि में बड़ा जन समुदाय इकट्ठा हुआ। इस शुद्धि का विशेष विवरण प्राप्त न हो सका कि उस अंग्रेज का शुद्धि के बाद क्या नाम रखा गया और वह फिर कहाँ क्या काम करता रहा। बड़े परिश्रम के बाद केवल शर्मा जी के साथ अन्य महानुभावों के सहित उस अंग्रेज का ओ३म् का ध्वज हाथ में लिये रद्दी सा पुराना चित्र मिला है जिसे हम जीवन चरित्र में यथा स्थान दे रहे हैं।

बम्बई से "संस्कार पथ" नाम की एक पत्रिका निकलती है उसमें शर्मा जी के सम्बन्ध में एक रोचक तथा प्रेरक प्रसंग छपा है, उसे हम पाठकों के अवलोकनार्थ तथा प्रेरणाप्राप्त्यर्थ यहाँ छाप रहे हैं। उससे शर्मा जी के जीवन की उच्चता पर गहरा प्रकाश पड़ता है।

मैं सबका पिता हूँ केवल तुम्हारा ही नहीं

आर्य समाज के उत्थान काल में जिन महारथियों का सुसहयोग रहा है उनमें श्री० पं० मुरारिलाल जी शर्मा अग्रगण्य रहे हैं, व्यापारी परिवार में जन्मे, आढ़त की दुकान करने वाले इस महारथी ने न जाने कैसे आर्य समाज को अपना सर्वस्व सौंप दिया और जब सब कुछ दे दिया तो ये यह भी भूल गये कि मेरे स्वयं के भी बच्चे हैं जिनकी समूची जिम्मेवारी केवल उन्हीं के ऊपर है।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज का जो प्रभाव अनेकानेक कुलीन परिवारों पर पड़ा और वे प्रभावित व्यक्ति जिस निःस्वार्थ भावना से वैदिक विचारों के प्रसार में जुट गये, ऐसे त्याग बलिदान का संसार में कहीं समानता नहीं मिलती, ब्रह्ममुहूर्त से लेकर शयनपर्यन्त बस एक ही धुन लगी रहती थी इनको कि 'ऋषिराज का त्याग बलिदान व्यर्थ न जावे' जैसे भी हो वेदों की गरिमा की बातें गाँवों से लेकर नगरों तक पहुँचानी ही होंगी, शस्त्रार्थ किये, शास्त्रास्त्रों के व

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहे, पोंगापन्थी समाज का पूर्ण जाति बहिष्कार सहा, पारिवारिक मृत्यु पर किसी भी जाति वाले की अनुपस्थिति सही, समाज के नक्कुओं के भीषण अत्याचार सहे पर अपने ऋषिऋण को चुकाने में ही लगे रहे, उत्तर भारत से लेकर ठेठ पठानों, बलूचियों सिन्धियों के मुल्कों में भी मुस्कराते चुटकियाँ बजाते, हाज़िर जवाबी की नज़रें जमाते हुए जिस योग्यता को पूज्य शर्मा जी ने उभारा, आज भी उसकी याद आया करती है। उर्दू फारसी अरबी और हिन्दी के प्रकाण्ड पण्डित होते हुए भी संस्कृत नाम मात्र को ही जानते थे, प्रायः पौराणिक विद्वान् स्वर्गीय श्री कालूरामजी शास्त्री (अन्धे) कविवर्य आशुकवि श्री पं० अखिलानन्द जी शर्मा आदि विद्वान् तो चिढ़कर श्री शर्मा जी को मुन्शी जी कह कर ही पुकारा करते थे पर शास्त्रार्थों में ग़ज़ब के व्यक्ति थे, हाज़िरजवाबी की तो हद कर दी थी, बस जिस शास्त्रार्थ में पूज्यतार्किकशिरोमणि महामान्य वीतराग स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज के साथ कर्मवीर तपस्वी पूज्य शर्मा जी जा पहुँचे वहाँ हल्ला मच जाता था, विरोधियों की शामत आ जाती थी।

त्याग और वैराग्य की भावना इनके तो रग रग में भरी थी। क्या मजाल जो किसी से मात खाई हो, आर्य-प्रतिनिधि सभा उ० प्रदेश से मतभेद होने पर भी विश्व के सर्वप्रथम गुरुकुल को सिकन्दराबाद (बुलन्द शहर) से हटने न दिया। कहते थे, 'भला ब्राह्मण किसी सरस्वती के मंदिर को बन्द करते हैं ?' बाबू लोगों से कम बनती थी, प्रायः शिकायत किया करते थे स्वयं से ही 'क्या करूँ ? ये बाबू लोग वैदिक धर्म को मारकर ही दम लेंगे' और आज तो उस महात्मा की बात सच्ची लग रही है, गुरुकुल क्या था एक नन्हा सा नालन्दा और तक्षशिला की याद दिलाने वाला था, कहीं पक्के मकान नहीं केवल कच्चे झोंपड़े थे, गर्मियों में भी अच्छे और सर्दियों में भी, तीन तीन सौ ब्रह्मचारी देश विदेशों से आकर पढ़ते थे, पढ़ाने वाले गुरुजन भी काशी से छाँट छाँट कर लाये जाते थे। सभी विद्वान् अपने अपने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयों के प्रकाण्ड विद्वान् आदि गुरुजनों की सुख सुविधा का सर्व प्रथम ध्यान, इस बात से कोई सरोकार न था कि ये विद्वान् किस सम्प्रदाय के हैं ? जो पूजा सामग्री चाहिये थी तुरन्त उपलब्ध करा देते थे। आगरा के श्री पं० भीमसेन जी शर्मा, कृष्ण पुर के श्री पं० दिलीप दत्तजी उपाध्याय, लाहोर के श्री पं० नरसिंह देव जी शास्त्री मराठवाडा के श्री पं० नरदेव जी शास्त्री वेद तीर्थ, एवं अनेकानेक उद्भट विद्वानों का जमघट यहाँ पर हमेशा ही रहा, भाष्यकार श्री पं० तुलसी रामजी स्वामी, श्री पं० मुसद्दीलाल जी शर्मा, पं० रुद्रदत्तजी सम्पादकाचार्य का भी लाभ गुरुकुल को मिलता रहा। शर्माजी सैकड़ों शास्त्रार्थों में जीते, हारने का तो प्रश्न ही न था इनका !

विश्व के महान् घुमक्कड़ और लेखक श्री राहुल सांस्कृत्यायनजी ने अपने जीवव चरित्र में श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा एवं गुरुकुल सिकन्दराबाद को बहुत बहुत याद किया है, और अपना सौभाग्य माना है कि वे गुरुकुल में रहकर श्री० शर्माजी के प्रचार कार्य का लाभ उठा सके।

तीन सौ विद्यार्थियों के पिता थे १—एक दिन माघमास का बरसाती दिन था भयंकर शीत बरस रहा था पशु-पक्षी सन्न से बैठे थे। गाँव वाले इस अवसर पर गुड़ चने खाकर, मकई का चबेना चबाकर सर्दी से त्राण पाते हैं, ये संस्कार ब्रह्मचारियों को याद आ रहे थे। वे आपस में घुसफुस कर रहे थे, पर चना गुड़ या मकई कहाँ से लावें ? कुछ छात्रों ने मंत्रणा की और सीधे शर्माजी के मध्यम पुत्र महेन्द्र देव के पास जा पहुँचे और बोले, 'महेन्द्र ! अद्य वयं चणकंसगुडं वाञ्छामः, पश्यसि न कियत् शैत्यं वर्तते ? गृहे अभ्य विष्याम तदा नूनं अलप्स्यामहे, त्वंचेत् इच्छसि, कार्यं भविष्यति मातरं गत्वा कथय, माता तुभ्यं याचितं धनं दास्यति, अस्माकं शीत निवारणं च भविष्यति।'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचारी महेन्द्रदेव माँ के पास जाकर गिड़गिड़ाया अम्मा केवल एक आना दे दे, देख न मेरे साथी मेरे पीछे पड़े हैं, और सर्दी कितनी ग़ज़ब की है। मैंने आज तक कभी तुझसे एक पाई भी तो नहीं माँगी, आज तो दे ही दे माँ एक आना! और भोली भाली माता ने अपने प्यारे बेटे के सिर पर हाथ रखकर शपथ खाई 'बेटे! तू क्या जाने? ये बेचारे ब्रह्मचारी क्या जानें? मेरे पास पैसे कहाँ हैं, तेरे पिता जी देवें तब न होवें, वे तो एक पैसा भी नहीं देते, तू रूआसा मत हो, देख अभी तेरे पिता आते होंगे उनके हाथ पैर छूकर एक आना मागूँगी शायद आज की सर्दी देखकर दे ही दें, मुझे तो विश्वास नहीं होता कि वे एक आना तो क्या एक पाई भी देंगे।

बाहर चार पाँच ब्रह्मचारी महेन्द्रदेव की प्रतीक्षा में खड़े थे कि गुरुकुल के पिता आ गये, आते ही गरज कर बोले:—क्यों रे! महेन्द्र! तू किससे पूछकर घर में आया है तू जानता है न कि परिवारों में ब्रह्मचारियों का आना निषिद्ध है जा भाग जा यहाँ से नहीं तो··· वाक्य पूरा भी नहीं हो पाया था कि माँ की आवाज़ आयी। क्यों डाँट रहे हो बच्चे को? गुरुकुल क्या चला रहे हो कि जान मुसीबत में आ गयी है। बच्चा ही तो है माँ से मिलने आज आ गया तो क्या हो गया है। सुनते हो आज तो महेन्द्र एक आना लेने के लिये आया है तुमने मुझे तो कभी कुछ नहीं दिया पर पहली बार इस बच्चे को तो दे दो, आज तो कितनी ठंड है बेचारे ब्रह्मचारी चना गुड़ खाकर गर्मी पालेंगे। गाँव की याद आ रही है इन सब बच्चों को, वैसे मैं जानती तो हूँ तुम एक पैसा नहीं दोगे, तो भी आज तो देना ही होगा। आख़िर इसके माँ बाप हमही तो हैं। औरों को तो चोरी छिपे उनके घर वाले कुछ न कुछ देही जाते हैं खाने पीने की चीजें, इसे कभी कुछ नहीं मिलता।

ब्रह्मचारियों ने और महेन्द्रदेव ने आज जीवन में प्रथम बार कुलपिता का भयंकर रूप निहारा था वे कड़कतेस्वर में दहाड़े मूर्ख!

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुझे पता नहीं है कि तू तो अकेली देवेन्द्र महेन्द्र और धर्मेन्द्र की माँ हो सकती है किन्तु मैं तो इन तीन सौ बच्चों का पिता हूं, तीन सौ आनों के हिसाब से जब तक सबको नहीं दे सकता तब तक तेरे महेन्द्र को कैसे दे सकता हूँ, तू तो बावली है। मैं महात्मा मुन्शी रामजी की भाँति फ़ीस नहीं लेता, मेरा गुरुकुल तो ईश्वर विश्वास पर चलता है, दोनों प्रतिनिधि सभाएँ विरोध में हैं फिर इतना परिवार चलाना हँसी खेल थोड़े ही है। आज के बाद मुझसे अपने अकेले बच्चे के बारे में कुछ न कहना, तुझे मेरी शपथ है, मैं तो तीन सौ का ही पिता हूँ एक को एक आना कैसे दूँ ? और इनका यह आदर्श आज भी अजेय है, अपराजित है उदाहरणीय है।

शर्मा जी के प्रति देहली के सेठ लोगों में बड़ी श्रद्धा थी और ये लोग शर्मा जी को अपना कुल गुरु ही समझते थे। ला० मुन्द्रामल जी तथा ला० श्यामसुन्दर जी ईश्वर भवन देहली, ला० बुद्धि प्रकाश जी मैदा वाले, ला० बिच्चीमल जी घी वाले एवं ला० सुन्दरलाल जी गोटे वाले फ़तहपुरी आदि गुरुकुल की बड़ी सहायता करते थे और शर्मा जी के व्याख्यानों और दर्शनों के लिये सदा लालायित रहते थे। आर्य समाज सदर बाज़ार, नया बाँस तथा चावड़ी बाज़ार के समाजों में शर्मा जी प्रायः आते रहते थे और उनके व्याख्यान तथा शास्त्रार्थ इन स्थानों में होते ही रहते थे। डिप्टीगंज सदर बाज़ार में सनातनियों से तथा हौज़काज़ी के गिरजाघर में पादरी अहमद मसी से उनके बड़े मशहूर शास्त्रार्थ हुए थे। श्री ला० रामचन्द्र कूड़ेमल कटरा तम्बाकू देहली, ब्रह्मचारियों के लिये प्रतिवर्ष सब प्रकार की मेवा जाड़ों में भेजा करते थे तथा ला० सुन्दरलाल जी गोटे वाले ब्रह्मचारियों के लिये रुई की बन्डियाँ तथा कपड़े के जूते बड़ी तादाद में प्रतिवर्ष भेजते थे। आर्य सामाजिक लोग ही नहीं सनातन धर्म के प्रतिष्ठित व्यक्ति और उनकी फ़र्में भी शर्मा जी के गुणोत्कर्ष के कारण ही गुरुकुल की सहायता करती थीं। श्री लक्ष्मीनारायण जी गाडोदिया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टोर कूचा नटवाँ वाले, श्री हरनारायण गोपीनाथ जी, तथा श्री विहारीलाल घासीराम जी अचार मुरब्बे वाले आदि भी गुरुकुल को वार्षिक सहायता देते थे। सिकन्दराबाद की मंडी से भी ला० सुन्दर लाल जी सराय घासी वाले प्रधान आर्य समाज की तत्परता से गुरुकुल को अन्न, दाल, गुड़ तथा रुपये की पर्याप्त सहायता पहुँचती रहती थी। फ़सल के दिनों में अनेक ग्रामों से पर्याप्त मात्रा में अन्न मिल जाता था जिससे गुरुकुल की खाद्य समस्या हल होती रहती थी और शर्मा जी बिना स्थायी फण्ड के भी केवल ईश्वर के भरोसे पर ही सारे जीवन गुरुकुल की गाड़ी को बड़ी सफलता के साथ चलाते रहे, वे कहा करते थे हमारा ईश्वर भी निराकार है और फण्ड भी निराकार है उसकी ही कृपा से हमारे किसी काम में कभी रुकावट नहीं पड़ी उसके भरोसे पर ही सब काम सिद्ध होते रहते हैं।

समस्त गुरुकुलों में केवल गुरुकुल सिकन्दाबाद ही ऐसी संस्था थी जहाँ उपदेशक कक्षा थी। इन कक्षाओं से वाग्मी तथा शास्त्रार्थ निपुण व्यक्ति निकाले जाते थे। श्री० पं० हरिदयालुजी महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा श्री० पं० मंगलदेवजी आदि श्रेष्ठ वक्ता इन्हीं कक्षाओं से निकले रत्न थे। इस प्रकार श्री० पं० मुरारिलालजी शर्मा के अनथक परिश्रम, महती कृपा तथा उनके तपोमय जीवन के द्वारा ही सैकड़ों शास्त्री, आचार्य तीर्थ परीक्षोत्तीर्ण प्रकाण्ड पण्डित तथा सुयोग्य वक्ता और भजनोपदेशक आर्य समाज की सेवा के लिए प्रस्तुत हुए। प्रसिद्ध भजनोपदेशक तथा वक्ता कुँवर सुखलालजी ने भी प्रारम्भ में गुरुकुल से ही योग्यता प्राप्त की थी।

शर्माजी की यह इच्छा थी कि ब्रह्मचर्य पालन के साथ ब्रह्मचारी को ज्ञान और कला कौशल की शिक्षा भी प्राप्त करनी चाहिये। वह मनुष्य ही क्या जिसने सभी दिशाओं में उन्नति प्राप्त न की हो ज्ञान प्राप्त करने के बाद यदि विद्वान् में वक्तृत्व शक्ति नहीं और दूसरों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से शास्त्रार्थ करके वह अपने सिद्धान्तों की सत्यता की धाक नहीं जमा सकता तो वह अपने ज्ञान का प्रकाश दूसरों में नहीं फैला सकता; ज्ञान आत्मोन्नति के लिये है उसको आजीविका का साधन नहीं बनाना चाहिये जिससे वह स्वतन्त्र जीवन व्यतीत कर सके। इस काम के लिये उन्होंने देहली से ले जाकर उमरावसिंहजी को रखा था जो ब्रह्मचारियों को आर्ट की शिक्षा दिया करते थे। यदि देश ने धन देकर शर्माजी के हाथ मज़बूत कर दिये होते तो वे गुरुकुल की अद्‌भुत ही रचना करके रख देते, उन्होंने गुरुकुल में एक पटा, बनैती, लाठियाँ के हाथ सिखाने वाले व्यक्ति भी रखे थे जो अखाड़े में कुश्ती के दाँव पेंच सिखाने के साथ २ ऊपर लिखी सभी चीज़ों को सिखाते थे। इस प्रकार शर्माजी ब्रह्मचारियों की चहुँमुखी उन्नति चाहते थे और तदनुरूप ही उन्होंने प्रबन्ध भी किये हुए थे जो अन्य किसी भी गुरुकुल में नहीं थे।

गुरुकुल पर आर्थिक संकट

गुरुकुल का कोई स्थायी फंड नहीं था, गवर्नमेंट से संस्था को कोई अनुदान भी नहीं मिलता था। ब्रह्मचारियों को शिक्षा भी निःशुल्क दी जाती थी। शर्माजी यह चाहते नहीं थे कि गवर्नमेंट कुछ अनुदान देकर उनके काम में हस्तक्षेप करे। वे तो अपनी संस्कृति और सभ्यता के अनुरूप तथा ऋषि दयानन्द के वेदोक्त आदर्श के अनुरूप ही शिक्षा देकर ब्रह्मचारियों को सच्चा देशभक्त तथा विद्वान् बनाना चाहते थे। गुरुकुल की कार्यकारिणी के सदस्य कभीर शर्माजी पर बड़ा दबाव डालते थे कि गवर्नमेंट से सहायता लेने में कोई हानि नहीं क्योंकि आपको बड़ी चिन्ता के साथ बड़ा परिश्रम संस्था को चलाने के लिये करना पड़ता है किन्तु शर्माजी कहते थे कुछ भी हो हमें कभी गवर्नमेंट से अनुदान नहीं लेना, ऐसा करने पर कभी हम अपने मिशन में सफल नहीं हो सकते, हम तो ब्रह्मचारियों को ऋषि दयानन्द के सांचे में ढालना चाहते हैं फिर गवर्नमेंट अपने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांचे में इन्हें ढालने की कोशिश करेगी, तब हमारा ध्येय ही नष्ट हो जावेगा। ऐसी स्थिति में साधारण आर्थिक संकट तो इन २८ वर्षों में अनेक बार आए, जिन्हें कर्मवीर शर्माजी ने सहर्ष पार किया किन्तु एक वार ऐसा आर्थिक संकट सामने उपस्थित हुवा कि दो २ मास के वेतन सभी अध्यापकों के तथा कर्मचारियों के गुरुकुल न दे पाया तथा बाज़ार का भी कुछ उधार हो गया। दान भी उन दिनों विशेष प्राप्त नहीं हुवा इसका शर्मांजी के स्वास्थ्य पर बड़ा बुरा असर पड़ा और वे इस चिन्ता से बीमार पड़ गए। महाराजा अवागढ़ शर्मांजी के बड़े भक्त थे और उन्हें अपने यहाँ बुलाते रहते थे। शर्मांजी को उनकी स्मृति आई और उन्होंने अपने तीसरे सबसे छोटे पुत्र धर्मेन्द्रनाथजी जो उस समय गुरुकुल में ही पढ़ते थे को बुलाकर कहा कि एक पत्र अवागढ़ नरेश को लिख दो। पत्र इस प्रकार था, जिसे शर्मांजी बोलते जाते थे और धर्मेन्द्रनाथजी लिखते जाते थे। राजन्! शुभाशीर्वाद। मैं करीब दो मास से बीमार हूँ गुरुकुल की दशा चिन्तनीय है, इस पर ध्यान दो। नीचे शर्मांजी ने हस्ताक्षर किये मुरारिलाल शर्मा। इस पत्र को भेजे दो मास बीत गए किन्तु न कोई पत्रोत्तर आया और न कोई दान ही आया। इस प्रकार चार २ मास का वेतन सबका चढ़ गया—इससे शर्मांजी की चिन्ता और बढ़ गई और बीमारी ने भी पिण्ड नहीं छोड़ा। उन दिनों आफ़िस क्लर्क पं० महीलालजी थे और भंडारी गंगाराम। अचानक सूचना प्राप्त हुई, १०००) का बीमा आया हुवा है। उन दिनों डांकख़ाना गुरुकुल में ही गुरुकुल सिकन्दराबाद के नाम से था, जिसमें मुन्शी नैनसिंह काम करते थे। शर्मांजी ने धर्मेन्द्रजी को बुलाया और कहा कि बीमा ले आओ। बीमा लाकर खोला गया तो उसमें १ हज़ार रुपये के नोट का आधा हिस्सा निकला, दूसरे दिन बीमे से दूसरा हिस्सा भी प्राप्त हो गया। सायंकाल के ५ बजे थे किन्तु छः बजे जो ट्रेन आती थी उससे अवागढ़ नरेश उतरे और उनके साथ ४ बन्दूक लिये सिपाही थे, २ सिपाही आगे और २

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे चल रहे थे। गुरुकुल के मुख्य द्वार पर पहुँच कर महाराजा ने पूंछा कि शर्माजी कहाँ हैं। उनको धर्मेन्द्रजी शर्माजी के पास ले गए। महाराजा ने शर्माजी को अभिवादन किया और जिस खाट पर शर्मा जी लेट रहे थे उस पर ही बैठ कर शर्माजी का कुशल समाचार पूंछने लगे। कुछ देर बाद ही महाराजा ने कहा कि—जिन अध्यापकों और कर्मचारियों को वेतन नहीं मिला है उन्हें हमारे सामने ही वेतन दे दो। पं० महीलालजी नाम बोलते जाते थे और महाराजा उन्हें रुपया देकर हस्ताक्षर कराते जाते थे, यह क्रम करीब दो घंटे चला, फिर महाराजा शर्माजी के पास जाकर बातें करते रहे। उस दिन रात्रि को महाराजा गुरुकुल में ही रहे और भोजन भी गुरुकुल में ही किया। इससे शर्माजी की चिन्ता दूर हुई और वे क़रीब १० दिन में ही स्वस्थ हो गए। वेतन बांटने के अलावा जो भी रुपया शेष बचा था वह महाराजा ने गुरुकुल को ही दान दे दिया। इस प्रकार २०००) महाराजा ने उस समय गुरुकुल को दान दिया।

जिस प्रकार महाराजा अवागढ़ शर्माजी के प्रति श्रद्धा रख कर गुरुकुल की सहायता करते रहते थे उसही प्रकार महाराजा अमेठी (सुल्तानपुर) भी शर्माजी के भक्त थे और उन्हें राज्य में बुलाते रहते थे और गुरुकुल की सहायता भी करते रहते थे।

एक बार पं० मुरारिलालजी शर्मा को निज़ाम हैदराबाद के उत्सव पर निमन्त्रित किया गया किन्तु शर्माजी के पास हैदराबाद जाने के लिये रुपये नहीं थे, तब शर्माजी ने सेठ श्यामलालजी कपड़े वाले खुर्जा ज़िला बुलन्द शहर को पत्र लिखकर पत्रवाहक के साथ ही फ़ौरन गुरुकुल आने को लिखा। सेठजी तत्काल पहुँचे तो शर्माजी ने हैदराबाद जाने की विवशता उनके सामने रखी। सेठजी ने तत्काल ५०) शर्माजी को दे दिये और वे हैदराबाद चले गए, वहाँ उन्हें गुरुकुल के लिये अच्छी धनराशि दान में मिली और कुछ वस्त्र तथा अन्य सामान भी ब्रह्मचारियों के लिये प्राप्त हुवा जिससे शर्माजी चिन्ता मुक्त हो गए और गुरुकुल की दशा सुधर गई। इसही प्रकार अनेक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवसरों पर शर्माजी अदम्य उत्साह और पुरुषार्थ के द्वारा गुरुकुल गाड़ी को खेंचने में समर्थ होते थे।

षष्ठ परिच्छेद

रानी रघुवीर कुँवरि के पुत्र के विवाह में शांत उथल-पुथल

वेश्याओं का बाज़ार

रानी को फिर सद्बुद्धि आई

जिला बुलन्दशहर में साहनपुर नाम की एक अच्छी रियासत थी। ६ मार्च १९०७ को रियासत की रानी रघुवीर कुँवरि के दत्तक पुत्र श्री व्रजराज कुँवर सिंह का विवाह था। इस विवाह में रानीजी ने जितना धन व्यय किया था उसको सुनकर भी पाठकों को बड़ा आश्चर्य होगा। ज़िले भर के प्रायः सभी रईस इसमें बुलाये गये थे। शर्मा जी को भी रानी ने निमन्त्रित किया था, तदनुसार वे अपने सुहृद् पं० गंगासहाय जी तथा ठाकुर गंगासहाय जी के साथ साहनपुर पहुँचे। विवाह क्या था, एक मेला-सा था। लगभग ८० हजार रुपया तो महफ़िल की सजावट में लगा था। डेरों की दो दो क़तारें पृथक् पृथक् लगी थीं। आर्य समाजी पृथक्, सनातन धर्मी पृथक्। दो कतारें जाटों की, दो मुसलमान लालखानियों की, दो अंग्रेज हाकिमों की, दो वैश्यों की, दो वेश्याओं की और दो भाँड़ों की। इस प्रकार लगभग अट्ठारह क़तारें थीं। प्रत्येक व्यक्ति के लिये एक कुर्सी, एक मेज, एक पलंग और एक चौकी की व्यवस्था थी। इस प्रकार बड़े ठाटबाट का सामान था। तेल, सुर्मा, कंघे आदि का सामान पृथक् और मेवा मिठाई इतनी दी गई थी जो एक मनुष्य पन्द्रह दिन में भी न खा सके।

सबसे अधिक शोचनीय बात तो वहाँ वेश्याओं का आना था। कई वेश्याएँ तो दस सहस्र रुपये से पाँच सौ रुपये तक पर काश्मीर, बम्बई आदि दूरवर्ती स्थानों से बुलाई गई थीं। वेश्याओं का एक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बज़ार-सा लगा था। 'साहनपुर' एक ग्राम है पर उस समय वह बड़े से बड़े नगर की शोभा को मात कर रहा था।

एक ओर शर्मा जी जैसे आर्यसमाज के महारथी विराजमान थे तो दूसरी ओर वेश्याओं की सारंगी और तबले ठनक रहे थे। रानी ने आर्य सामाजिक जनों की इच्छानुसार यज्ञशाला का भी प्रबन्ध किया था। जहाँ प्रतिदिन बीस सेर घी और बीस सेर सामग्री से यज्ञ होता था। वेद ध्वनि से दसों दिशायें गूँजने लगती थीं। प्रातः कालीन यज्ञ के पश्चात् नाच रंग प्रारम्भ होता था, महफ़िल सजती थी। मानो हवन और श्रुतियों का गान महफ़िल का मंगलाचरण था। आर्य समाज के लोग भी पर्याप्त थे किन्तु उन्होंने कभी ऐसा दृश्य न देखा था। हृदय में सभी के घृणा थी किन्तु उनके मुँह पर ताले लगे हुए थे। ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में शर्मा जी जैसा निर्भय नेता कैसे चुप रह सकता था।

पहले ही दिन यह आपत्तिजनक दृश्य देखकर शर्माजी की आँखों में आँसू आ गये। हा! आर्य जाति की आज यह अधोगति जहाँ विवाह जैसे माँगलिक कार्यों में राजाओं के यहाँ बड़े-बड़े विद्वान् वैदिक मन्त्रों द्वारा पुण्य प्रवाह करते थे वहाँ आज अधम वेश्याओं का ऐसा मान? ये गोघातिनें एक क्षत्रिय रियासत से तीन-चार दिन में सहस्रों रुपया लूट कर ले जावें और मुझ जैसा व्यक्ति इस दुर्दृश्य को अपनी आँखों से देखता रहे? यह नहीं हो सकता। या तो ये ही यहाँ रहेंगी या हम ही रहेंगे। शर्माजी ने तुरन्त निश्चय कर लिया। उनके संकेतमात्र से सभी आर्यों के बिस्तर बँध गये और उन्होंने रानी के अन्तरंग प्रबन्धक से कहा कि हम लोग यहाँ से जाना चाहते हैं, केवल रानीजी से दो बातें करने की इच्छा है। रानीजी ने जब यह समाचार सुना तो उनके दुःख का ठिकाना न रहा। उन्हों ने उसी समय शर्मा जी को महल में बुलाया। शर्मा जी अपने मित्रों के साथ रानी जी से मिले साधारण शिष्टाचार के अनन्तर शर्मा जी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी
पु० सं० २८९०

ने बड़े ही मार्मिक शब्दों में विवाह का महत्व समझाकर रानी जी से कहा कि जिस विवाह में वेश्याओं का नाच होता हो, जिसमें भाँडों की भरमार हो, क्या उसे विवाह कहते हैं ? ऐसी व्यभिचारिणी स्त्रियों का विवाह जैसे मांगलिक कृत्यों में नाच कराना कदापि शोभा नहीं देता। आपको यह ज्ञात नहीं है कि बाबू ओंकारसिंह डिप्टी कलक्टर जिनके यहाँ यह बारात जावेगी, मेरे परम मित्र हैं और बहुत ही शिक्षित हैं। यदि उन तक यह बात पहुँच गई तो, स्मरण रखिये, यह विवाह कदापि नहीं हो सकेगा। वे वेश्याओं के नाच को बहुत ही घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

शर्माजी की ओजभरी वाणी सुनकर रानीजी को अपनी भूल मालूम हुई। उन्होंने कहा कि मुझे आपकी आज्ञा शिरोधार्य है, मैं समझ गई कि इस कुकृत्य से बड़ा अनर्थ हो जायेगा। आपने मुझे उचित मार्ग सुझाया है। मैं आपकी कृतज्ञ हूँ। चाहे कुछ भी विघ्न हो, मैं इस नाचरंग को अभी बन्द करती हूँ। फलतः रानी साहिबा ने उसी समय आज्ञा दे दी कि सब वेश्याओं का हिसाब कर दो और वे तुरन्त चली जाएँ। जब यह बात वेश्याओं को विदित हुई तो उनके दुःख का ठिकाना न रहा। वे लालखानी मुसलमानों से मिलीं और उनसे कहा कि हम तो आप ही के कारण यहाँ आई थीं, किन्तु अब मालूम हुआ कि आपका यहाँ ज़रा भी असर नहीं है। नहीं तो महफ़िल बीच में ही क्यों बन्द होती! उन मुसलमानों ने बहुतेरा ज़ोर दिया कि रंडियाँ न जावें, डर भी दिखाया कि यदि रंडियाँ गईं तो हम भी चले जावेंगे परन्तु अब रानी ने किसी की एक न सुनी। परिणाम यह हुआ कि तीसरे ही दिन रंडी-भाँड और मुसलमान सब चलते बने। मैदान साफ़ हो गया, तब कई दिन तक उसी सभा में शर्मा जी के व्याख्यान होते रहे। यह सूचना श्री ओंकार सिंह जी तक भी पहुँच गई। जब बारात उनके यहाँ मुरसान पहुँची तो उन्होंने शर्मा जी को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उनके साहस की भूरि भूरि प्रशंसा की।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरक्षर बूचा बाबा की पोल खोलकर मूर्ख ग्रामीणों को सुमति दी

सन् १८९० ई० के लगभग सिकन्दराबाद तहसील के वैर ग्राम का एक राजपूत युवक सुलफ़ा तथा चरस की गर्मी से पागल होकर फ़कीर हो गया और उसने सिद्ध बन कर उसी ग्राम के समीप एक टीले पर आसन जमाया। उसी का नाम बूचा था। वह ऐसा सिद्ध बताया जाता था कि जो कह देता है वही हो जाता है, किन्तु वस्तुतः न तो वह सिद्ध था और न पढ़ा-लिखा था। वह तो गाँजे की तरंग में जो जी में आता, कह जाता था। गाँवों के गँवार उन शब्दों का अर्थ विधाता के लेख के समान लगाया करते थे। उसी टीले के पास हसनपुर नामक एक ग्राम है। वहाँ के निवासी बूचा के चेले बन गए। उसने उनको दो मन्त्र सिखाए, एक तो 'टठ अनं विदता' दूसरा "ररंरं ललंललंलं।" वह स्वयं भी ऊँचे स्थान पर खड़ा होकर इन्हीं मन्त्रों को बड़े ज़ोर से बोला करता था। हसनपुर निवासियों ने भी ये गुरु मन्त्र सीखे। यहाँ तक कि बच्चे, बूढ़े, स्त्रियाँ सभी हर वक़्त इन्हीं मन्त्रों को रटा करते थे। बहुत समझाने बुझाने पर भी कोई इन मन्त्रों की निरर्थकता मानने को तैयार न था। धीरे-धीरे बूचा का नाम दूर-दूर तक फैल गया। पाँच पाँच सौ मीलों तक के लोग अपनी मुरादें पूरी कराने के लिये उसके पास आने लगे। वीरान जंगल गुलज़ार हो गया और बूचा-भवन में हर समय मंगलोत्सव होने लगा। उसके ऊपर प्रति मास सैकड़ों रुपये और मनों मिठाइयाँ चढ़ने लगीं। कहा जाता है कि हसनपुर के लोग उस समय मालामाल हो गए थे।

जब शर्मा जी को 'बूचा मत' का हाल मालूम हुआ तो उनको बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने कहा कि अन्धविश्वास ने जनता में कैसी जड़ जमा ली है। कितने आश्चर्य की बात है कि कोई ज़रा-सा ढोंग रच कर नया मत खड़ा कर सकता है। हिन्दुओं ने विद्या बुद्धि को सर्वथा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिलांजलि दे दी है। यदि ऐसा न होता तो पीर, पैग़म्बर, क़ब्र, ताज़िये, सैयद, मुल्ला, मसानी, भवानी आदि की पूजा क्यों की जाती। शर्मा जी ने अपने साथ कुछ पंडित लेकर बूचा-भवन के लिये तुरन्त प्रस्थान कर दिया। उनके साथ पं० नन्दकिशोर देव जी शर्मा, पं० प्रयागदत्त जी अवस्थी, ठा० गंगासहाय जी, पं० बालमुकुन्द जी आदि अनेक विद्वान् थे। इन्हें देखकर ग्राम निवासियों ने बड़े ज़ोर से अपने पूर्वोक्त मन्त्र बोलने प्रारम्भ कर दिये। तब शर्मा जी ने वहाँ एक सभा का आयोजन किया। ग्रामीणों ने शर्मा जी के सिवाय और किसी का उपदेश सुनने से इन्कार कर दिया। शर्मा जी ने बड़े मार्मिक शब्दों में सबको अन्धविश्वास की निस्सारता समझाई। उन्होंने कहा कि संसार में आराधनीय देव केवल ईश्वर है, अन्य कोई नहीं। जिसने सम्पूर्ण विश्व को रचा है वही परम गुरु है, वेद, शास्त्र मार्गदर्शक हैं। जो मनुष्य इन शास्त्रों में सारी लिखी बातों को त्याग कर किसी मनुष्य को ईश्वर मानता है वह घोर नरक में जाता है। राम, कृष्ण, ईसा, मुहम्मद सभी एक ईश्वर को मानते आये हैं। सभी ने उसी एक परम दयालु भगवान् को स्मरण किया है। तब हम क्यों किसी को पूजते फिरें, क्यों न उसी की शरण में जावें। डेढ़ घंटे के भाषण से सभा में सन्नाटा छा गया। शर्मा जी का वह युक्तियुक्त भाषण ग्राम निवासियों के अन्तःकरण में दृढ़ता से जम गया और उनकी आँखें खुल गईं। शर्मा जी ने पूछा कि क्या कोई बता सकता है कि "टठ अनं विदिता" मन्त्र का क्या अर्थ है? यह किस वेद का मन्त्र है? अन्धविश्वास के कारण ऊल जलूल बातों को मन्त्र मान कर उनका उच्चारण करना अत्यन्त अनुचित है। "रं रं रं रं ललंललं" का क्या अर्थ है? ऐसे मन्त्र तो मैं हजारों बना दूँ। ग्रामीणों को शर्माजी के दो घंटे समझाने से बिचारहीन बूचा का १० वर्षों का परिश्रम मिट्टी में मिल गया। अर्थात् उसका मिथ्या मत जड़मूल से उखड़ गया।

भाषण के अनन्तर शर्मा जी अपने साथियों सहित बूचा के पास पहुँचे और उससे पूछा कि "टठ अनं विदिता" किस वेद का मन्त्र है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूचा ने पूछा कि वेद में टठ, अनं आदि अक्षर हैं कि नहीं। शर्मा जी ने कहा, 'हैं'। बूचा बोला कि तो बस मेरा मन्त्र वेद में सिद्ध हो गया। शर्मा जी ने कहा कि इस तरह तो वेद में 'पाजी', 'सूअर', 'गधा', 'उल्लू', नालायक सभी कुछ मौजूद है, इस पर बूचा चुप हो गया। अब बूचा ने पूछा, "पुराण कितने हैं ?" एक पण्डित बोले 'पुराण १८ हैं'। बूचा ने कहा—तुमने नहीं पढ़े, पुराण तो ३६ हैं। एक लोहे के तसले पर बूचा ने लिख छोड़ा था, हसनपुर पुराण, डे... पुराण, दिल्ली पुराण, सिकन्दराबाद पुराण और सबके ऊपर बू... पुराण। तब शर्मा जी ने बूचा को नितान्त मूर्ख समझकर उससे बात-चीत बन्द कर दी और उठकर चले गए। शर्मा जी ने स्थिति समझ ली कि जब तक ग्रामों में आर्य समाज का प्रचार न होगा तब ... वैदिक धर्म का पुनरुद्धार न हो सकेगा। अतएव उन्होंने अब ग्रामों में प्रचार आरम्भ कर दिया। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि सिक-न्दराबाद के लोग प्रायः शैवमत को मानते थे, इसलिये आसपास के ग्रामीण भी इसी मत के मानने वाले थे।

शर्मा जी गुप्त ईसाई प्रचारक हैं

सन् १८६२ में जब शर्मा जी प्रचार-कार्य बड़ी तत्परता से कर रहे थे, तब सिकन्दराबाद में मूर्खों ने उनको 'ईसाई धर्म' का गुप्त प्रचारक प्रसिद्ध कर दिया। साधारणतः उस समय आर्य उपदेशकों को ईसाई ही कहा जाता था। फलतः सीधे-सादे ग्रामीण लोग उनके पास आने से कतराते थे, पर शर्मा जी तब भी किसी न किसी प्रकार अपने विचार उन तक पहुँचा ही देते थे। साधारण जनता इन नवीन विचारों को बड़े ध्यान से सुनती थी। उन पर तर्क वितर्क भी करती थी। किन्तु पुराने जमे हुए संस्कार एवं बिरादरी का बन्धन उसे आर्य समाज में आने से रोकता था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठाकुर साहब कहाँ से कहाँ ?

आर्य समाज की स्थापना

एक वार महेपा ग्राम के ठाकुर गंगासहाय जी से किसी ने शर्मा जी से मिलने को कहा, किन्तु ठाकुर साहब ने स्वीकार नहीं किया। वे बोले—सुना है शर्मा जी के संसर्ग से कितने ही मनुष्य धर्म कर्म खो चुके हैं, मैं उनकी बातें कदापि सुनना नहीं चाहता। ठाकुर साहब शैव थे और शिव जी पर जल चढ़ाये बिना भोजन न करते थे। डेवटा निवासी पं० गंगासहाय जी और पं० बालमुकुन्द जी आदि उक्त ठाकुर साहब के कई मित्र भी सिकन्दराबाद में ही रहते थे। शर्मा जी उनके इस भाव को ताड़ गए। अतः उन्होंने स्वयं ठाकुर गंगासहाय जी से मिलने का संकल्प किया। एक दिन जब ठाकुर साहब पूजा पाठ के पश्चात् तुलसीकृत रामायण पढ़ रहे थे तो शर्मा जी वहाँ पहुँचे। शिष्टाचार के अनन्तर शर्मा जी ने पूछा कि क्या पढ़ रहे हो ? ठाकुर साहब बोले—रामायण का पाठ कर रहा हूँ। शर्मा जी ने कहा—यह पुस्तक बड़ी ही अच्छी है, इसका पाठ यदि मनुष्य रोज करे तो बड़ा लाभ होता है। तब एक सज्जन बोले—परन्तु आप तो इसका खण्डन करते हैं। शर्मा जी ने कहा—कौन कहता है कि मैं इसका खण्डन करता हूँ। ठाकुर साहब बोले—तो क्या आप रामचन्द्र जी को विष्णु का अवतार मानते हैं ? शर्मा जी ने कहा—मैं तो वही मानता हूँ जो कुछ रामायण में लिखा है। ठाकुर साहब बोले—रामायण में क्या लिखा है ? शर्मा जी ने कहा—"यही कि स्वयं महाराज रामचन्द्र जी भगवान् की आराधना करते थे", जब वे स्वयं भगवान् की आराधना करते थे तो वे भगवान् कहाँ रहे ? ठाकुर साहब बोले—रामायण में ऐसा कहीं नहीं लिखा।

शर्मा जी—आपको ध्यान नहीं है।

ठाकुर—यदि यह लिखा होगा तो मैं भी आर्य हो जाऊँगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्मा जी—मैं कब कहता हूँ कि आप आर्य हो जावें, किन्तु ल
रामायण, मैं आपको दिखाता हूँ। तब शर्मा जी ने दो चौपाई दिख
ठाकुर साहब ने उन चौपाइयों को पढ़ा—और ख़ूब विचार किया
उनका यही अर्थ पाया। अब बड़ी गड़बड़ मची। वे बोले तो मैं
पण्डितों को दिखा लूँ। शर्मा जी ने कहा—आप सब अच्छी
विचार करके देखें, यदि ठीक हो तो मानें, नहीं तो मैं आग्रह
करता। उस दिन इतनी ही बातें हुईं।

ठाकुर साहब ने शर्मा जी की बताई वे चौपाई अपने मित्रों
पण्डितों को दिखाईं, सभी ने कहा, हम भी तो रामायण का
नित्य करते हैं परन्तु हमको यह बात नहीं सूझी। अब सचमुच
ठाकुर साहब के विचारों में परिवर्तन होने लगा। सोचा, लोग
हैं कि शर्मा जी ईसाई हैं, पर यह बिलकुल गलत है, वे तो
ब्राह्मण हैं, उनसे अवश्य मिलना चाहिये। धीरे-धीरे मेल बढ़ने ल
शर्मा जी ने एक दिन ठाकुर साहब को 'सत्यार्थ प्रकाश' दिया
कहा कि रामायण भी पढ़ा करो और इसे भी पढ़ो। फलतः उ
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना आरम्भ किया और अल्पकाल में ही वे
उनके सब मित्र शर्मा जी के भक्त बन गये।

जब ये मुख्य-मुख्य मनुष्य शर्मा जी के साथी हो गये तो उ
सिकन्दराबाद आर्य समाज की स्थापना की। फिर तो समाज के
सेवकों ने बुलन्दशहर और समीपवर्ती ज़िलों में बड़े साहस
वेग से प्रचार प्रारम्भ कर दिया, जिसका वर्णन आगे किया जाये

सामाजिक दल का संगठन

ग्राम-ग्राम में संस्कारों की धूम

नाच-रंग द्वारा विघ्न

साहसी एवं कर्मवीर आर्य नेता पं० मुरारिलाल शर्मा ने ग्रा
प्रमुख पुरुषों को अपनी ओजस्विनी वाणी और सच्ची लगन से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाया। उनके अन्धविश्वास को दूर करके सत्य और स्नेह का संचार किया। मिथ्या विचारों को जड़ मूल से उखाड़ दिया किन्तु उनकी इच्छानुसार वे अभी तक आर्य समाज के सेवक न बन सके। अतएव उन्होंने एक 'सामाजिक सेवक दल' का गठन किया। एक बार उन्होंने ठाकुर गंगासहाय और पं० गंगासहाय जी आदि से कहा कि मैं आपके यज्ञोपवीत संस्कार कराना चाहता हूँ। ठाकुर साहब बोले कि हम लोगों के तो यज्ञोपवीत हो चुके हैं फिर इसकी क्या आवश्यकता है? शर्मा जी बोले, "आपका यज्ञोपवीत वैदिक रीत्यनुसार होना चाहिये, जिससे आपको इसका महत्व ज्ञात हो। अतएव सब का यज्ञोपवीत होना निश्चित हुआ।

इस सामूहिक कार्य के लिये महेपा ग्राम चुना गया। बड़े समारोह के साथ तैयारियाँ होने लगीं। पं० कृपाराम शर्मा, पं० नन्दकिशोर देव शर्मा, पं० प्रयागदत्त अवस्थी तथा अन्य बहुत-से विद्वान् शर्मा जी के साथ महेपा पधारे। पचास-पचास वर्ष के बूढ़ों ने भी उस समय यज्ञोपवीत धारण करने की इच्छा प्रकट की। शर्मा जी ने आपत्कालीन मर्यादानुसार छत्तीस व्यक्तियों के यज्ञोपवीत कराये। उन्हीं मनुष्यों में एक ठाकुर सत्तू भी थे। उनके पुत्र को मूर्ख लोगों ने पिता के विरुद्ध उभारा और कहा कि तुम्हारा पिता अपने दादा परदादा की मर्यादा त्याग कर आर्य बन गया है, उसने यज्ञोपवीत लिया है, तो तुम इसकी परवा न करके वेश्या का नाच कराओ जिससे यह नया रिवाज रुके। उस मूर्ख लड़के ने मूर्खों की बात मान ली।

जिस समय घर में यह यज्ञोपवीत संस्कार हो रहा था उसी समय लड़के ने कहीं से एक कंजरी को बुलाकर द्वार पर नाच प्रारम्भ करा दिया। सत्तू ठाकुर को जब अपने पुत्र की यह करतूत मालूम हुई तो वे मारे क्रोध के लाठी लेकर उसे मारने दौड़े। ठाकुर का यह हाल देखकर नाच में उपस्थित गँवार और कंजरी सब भाग गये और यज्ञोपवीत संस्कार निर्विघ्न सम्पन्न हो गया। शर्मा जी ने अपनी प्रचार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैली से उत्साही वीर मनुष्यों का एक अच्छा खासा दल तैयार कर लिया। इसी अवसर पर उनके उपदेश ने वह प्रभाव डाला कि भविष्य में इन आर्य वीरों ने आर्य समाज का ऐसा ज़बर्दस्त काम किया जो शर्मा जी के परलोक वासी होने पर भी सुदृढ़ होता गया। ये सज्जन समाज की सेवा अब भी करते रहते हैं। इन सज्जनों ने जब आर्य समाज की सेवा करने का व्रत लिया था तब शर्मा जी ने भविष्य के लिये उनको बहुत उत्साहित किया था। फलतः इस मण्डली ने जगह जगह जाकर वैदिक धर्म प्रचार का बीड़ा उठाया और सहस्रों मनुष्यों को वैदिक धर्म का सन्देश सुनाकर आर्य बनाया।

संस्कारों की वह अधोगति

आर्य समाज के प्रचार से पूर्व वैदिक संस्कारों की प्रथा उत्तर भारत से सर्वथा उठ गई थी। ब्राह्मणों के यहाँ भी यज्ञोपवीत और विवाह संस्कार ही होते थे अन्य वर्णों में केवल विवाह संस्कार होता था। राजपूत, जाट, गूजर वैश्यादि सभी को प्रायः शूद्र कहकर यज्ञोपवीत का अनधिकारी बताया जाता था। विवाह संस्कारों में कुरीतियाँ प्रचलित थीं, विधि पूर्वक तो कोई संस्कार होता ही न था। हाँ, विवाह में नवग्रह का पूजन करके और मिट्टी के गणेश को छींटे लगा कर फेरे फेर दिये जाते थे। सो भी जितने घर-उतने ही तरह के विवाह होते थे। कहीं-कहीं दस-पाँच श्लोक और दोहों से ही काम चल जाता था।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये।
नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हितायच
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

ये दो श्लोक तो ब्राह्मणों की जिह्वा के अग्रभाग पर रखे रहते थे, न तो ये वाक्य किसी ऋषि के हैं और न किसी सूत्रग्रन्थ के ये किसी पण्डित के गढ़े हुए हैं किन्तु उनके लिये इनका महत्व वेद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्त्रों से भी अधिक है। तिलक करने, वर के चलने, बैठने और कन्या के प्रत्येक कार्य में इन्हीं का पाठ होता था। वैदिक संस्कार तो कोई जानता ही न था, इतना ही नहीं बल्कि कुण्ड खोदने, साकल्य से हवन करने और विधिपूर्वक यज्ञ करने तक को वे लोग बुरा समझते थे। इन सब बातों को देखकर शर्मा जी ने ग्राम ग्राम में संस्कारों के कराने का संकल्प किया, जिससे हिन्दुओं में आर्यत्व की भावना जागृत हो। शर्मा जी ने इस कार्य के लिये युक्त प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा से दो विद्वान् स्थायी रूप से माँग लिये। श्री पं० नन्द किशोर देव शर्मा तथा पं० प्रयाग दत्त अवस्थी। ये दोनों विद्वान् कर्मकाण्ड के अच्छे ज्ञाता थे। इनके निवास स्थान सिकन्दराबाद और महेपा नियत किये गये। इस प्रकार थोड़े ही काल में संस्कारों की धूम मच गई।

वह सुनहरा प्रेम युग

प्रत्येक स्थान में पण्डित मुरारिलाल शर्मा अपने सहकारी मित्रों और पण्डितों के साथ संस्कार कराने जाते, अपने हाथों से वेदी की रचना करते, यज्ञमण्डप सजाते और अतिथियों के भोजन की व्यवस्था करते थे। शर्मा जी के साथ पं० कृपाराम शर्मा भी प्रायः जाया करते थे। उस मित्र मण्डली को जिन लोगों ने देखा है अर्थात् उनके पारस्परिक प्रेमभाव और सहानुभूति पूर्ण व्यवहार का जिन्होंने निरीक्षण किया है वे आर्य समाज की वर्तमान दशा देखकर आँसू बहाते हैं। संस्कार अब भी होते हैं किन्तु आज वह आर्य प्रेम कहाँ है ?

समाज के सदस्य मीलों पैदल चल कर, आवश्यक कार्य छोड़कर, अपने आराम पर लात मारकर और निज की हानि सह कर भी शर्मा जी के साथ चले आते थे। उनके संकेत मात्र पर ग्राम के ग्राम उमड़ पड़ते थे। आर्य बन्धुओं के जरा से कष्टों को सुन कर दल के दल उमड़ पड़ते और अपनी शक्ति से सबके शोक-सन्ताप दूर कर देते थे। भले ही बिरादरी साथ न दे। शर्मा जी को खबर होनी चाहिये,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर क्या था सैकड़ों साथी तैयार हैं। क्या पाठक उस स्वर्णयुग की कल्पना कर सकते हैं। हा! आर्य समाज! स्वल्पकाल में ही तेरी वह काया कैसे पलट गई? आज स्नेह का स्थान स्वार्थ और सच्ची सहानुभूति का स्थान बनावट ने ले लिया है। क्या इस प्रकार ऋषि के उद्देश्य की पूर्ति की जा सकती है? कदापि नहीं।

वैदिक धर्म के प्रचार और संस्कारों के कराने में शर्मा जी को बहुत से स्थानों में ईंट पत्थर और लाठियों के प्रहार तक सहने पड़े थे, गालियाँ तो हर जगह मिलती थीं। पाधा पुरोहित हर जगह बह-काते और विरोध करते थे। नई नई बातें घड़कर स्त्रियों को डर दिखाते और इस बात का प्रयत्न करते थे कि लोगों में संस्कार कराने की प्रथा न चलने पाए। इन मनुष्यों को धर्म-कर्म का कुछ ज्ञान न था, इनका लक्ष्य तो केवल आर्य समाज के प्रचार में बाधा डालना था। ये लोग यहाँ तक नीचता करते थे कि कहीं-कहीं कुण्ड में यज्ञ के समय मरे जानवर फेंक देते थे। आर्य पण्डितों को बुरी तरह बदनाम किया जाता था—इसका एक उदाहरण पाठकों के समक्ष नीचे प्रस्तुत किया जाता है।

आर्य विद्वन्मण्डली पर मक्का विक्टोरिया के जासूस होने के घृणित आरोप

दनकौर के पास मिर्जापुर एक ग्राम है, वहाँ के लोगों ने यज्ञोपवीत संस्कार कराने की इच्छा प्रकट की। शर्मा जी ने सूचना पाते ही पण्डितों के साथ वहाँ के लिये प्रस्थान कर दिया। इस अवसर पर पण्डित नन्दकिशोर देव शर्मा, पं० प्रयाग दत्त अवस्थी, पं० बदरी दत्त शर्मा, पं० रामदयालु जी, पं० कृपाराम शर्मा, शर्मा जी के साथ थे। ठा० गंगा सहाय जी व पं० गंगा सहाय जी आदि भी इस समय उपस्थित थे। यज्ञोपवीत कराने का इस ग्राम में यह प्रथम अवसर था। ग्राम के पाधाओं को जब इसकी सूचना मिली तो उन्होंने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोर विरोध किया, जब पुरुषों पर उनका कुछ वश न चला तब उन्होंने स्त्रियों को बहकाया। यज्ञोपवीत लेने वाले सज्जनों में तीन वैश्य भी थे उन्हें कमज़ोर समझ कर इन पाखण्डियों ने उनकी स्त्रियों से कहा कि ये आर्य सनाज के लोग छिपे हुए ईसाई हैं ये मलिका विक्टोरिया के जासूस हैं। इनके पास एक शीशी में उसका मूत्र मरा रहता है। जिसे पानी में मिला कर वे उसे पिलाते हैं। फिर ईसाई बनाकर अपने साथ ले जाते हैं। यदि यह तुम्हें पसन्द हो तो तुम्हारी इच्छा मूर्खा स्त्रियों के हृदयों पर यह बात अंकित हो गई और जब इनके कहने से इनके पति यज्ञोपवीत लेने से न हटे तब अपने अपने बच्चों को गोद में लेकर वे कुए में कूदने के लिए चल पड़ीं। फलतः ऐसी दशा देख कर बेचारे वैश्यों को अपनी इच्छा त्यागनी पड़ी।

इसके कुछ ही समय बाद शर्मा जी दलबल सहित मिर्ज़ापुर पहुँचे उन वैश्यों को ढीला देखकर उनको बड़ा दुःख हुआ, परन्तु करते क्या वैश्यों को छोड़ कर शेष मनुष्यों के यज्ञोपवीत कराने निश्चित हुए, विधिपूर्वक मण्डप बनाया गया सैकड़ों स्त्रियाँ कुतूहल वश यह देखने आईं कि शीशी में से-मलिका का मूत्र कब पिलाया जाता है? जब आचमन कराने लगे तब चारों ओर हल्ला मचने लगा। तब शर्माजी ने पूछा, यह शोर कैसा है। तब एक व्यक्ति ने इसका उपर्युक्त कारण बताया। शर्मा जी ने उसी समय उपस्थित लोगों को बड़े मार्मिक शब्दों में, पाधाओं की इस नीचता की पोल बताई, जिससे सभी की आँखें खुल गईं सभी उनको धिक्कारने लगे और विधि पूर्वक २६ पुरुषों के संस्कार सम्पन्न हुए। ऐसे ही अनेक विघ्न अन्य ग्रामों में भी होते थे पाठक समझें कि उस समय प्रचार कार्य में कितनी कठिनता थी। परन्तु शर्मा जी जैसा वीर पुङ्गव इन विघ्नों की कब परवाह करने वाला था?

जाट, गूजर और ठाकुरों के संस्कार

जिला बुलन्द शहर में जाट, गूजर और राजपूत ही अधिकता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से पाए जाते हैं। इन पर अविद्या ने सबसे अधिक डेरा जमा रखा था। विशेष कर गूजर तथा जाटों में तो नाम मात्र को भी संस्कार न रहे थे। ये संस्कार हीन तो थे ही, और भी भारी दुर्गुण पैदा हो गये थे। गूजर चोरी के लिये सब जगह बदनाम थे, जाटों में विद्या का नाम मात्र भी प्रचार न था, इनकी आचार हीनता पराकाष्ठा को पहुँच गई थी, धर्म कर्म का ज्ञान इनमें से सर्वथा लुप्त हो गया था।

सनातनी इनको शूद्र कहते थे। क्षत्रियों में इनकी गणना नहीं होती थी ऐसी दशा देखकर दयालु हृदय शर्माजी ने सबसे पूर्व इनके सुधार का बीड़ा उठाया। उन्होंने यह घोषणा की कि गूजर, जाट, अहीर आदि सब प्रस्तुत क्षत्रिय हैं, केवल संस्कार न होने से आचार हीन हो गये हैं। इसीलिये पहले इनके संस्कार होने चाहियें।' इस आवाज़ के उठते ही सनातन धर्म में तहलका मच गया, भूकम्प-सा आ गया। कट्टर सनातन धर्मियों ने शर्माजी को धमकियाँ दीं। जहाँ कहीं संस्कार होते, वहीं ये लोग पहुँचते और शास्त्रार्थ की चुनौती देते परन्तु शर्मा जी ऐसी बातों से कभी विचलित नहीं हुए, वे बराबर आगे पग बढ़ाते चले गये।

अपना हीन होना पसंद

सबसे बड़ा आश्चर्य यह है कि जिस जाति के उत्थान का वे बीड़ा उठाते थे उसी में से कुछ लोग उनके विपक्षी बनते थे। शर्माजी कहते थे कि गूजर क्षत्रिय हैं तो स्वयं गूजर ही इसके विरोधी बन कर कहते थे कि हम क्षत्रिय नहीं हैं। शर्माजी कहते कि इनके यज्ञोपवीत होने चाहियें। तो वे कहते कि नहीं, हमारे संस्कार कभी भी नहीं होने चाहियें। इतना ही नहीं बल्कि वे सनातनी पण्डितों को बुला कर शास्त्रार्थ भी कराते थे कहीं कहीं संस्कार में बैठे अपने भाईयों पर ही पत्थर बरसाते थे। यह दशा देख कर शर्मा जी की आँखों में आँसू आ जाते थे। वे सोचते थे कि जिनकी मैं उन्नति में संलग्न हूँ,। जब वे ही उन्नत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होना नहीं चाहते तो उनका सुधार सर्वथा असम्भव है। फिर थोड़े ही काल में, इन जातियों में आर्य समाज के लिये प्रेम उत्पन्न हो गया, समझदार गूजरों ने अपनी दुर्दशा को समझा, जाटों ने भी करवट बदली, धीरे-धीरे ये लोग समाज के झण्डे के नीचे आ गये !

बिसरख का शास्त्रार्थ और उसका सुन्दर परिणाम

डासना निवासी श्रीधर जी की घोर पराजय

सन् १८९७ में बिसरख के गूजरों ने शर्मा जी से संस्कार कराने की प्रार्थना की। वे कई विद्वानों के साथ बिसरख पधारे, यहाँ के सनातनी भाइयों ने शास्त्रार्थ की धमकी दी, भला शर्मांजी जैसा पुरुष इन धमकियों से कैसे डरता ? उन्होंने उसी समय चेलेञ्ज स्वीकार कर लिया और शास्त्रार्थ का प्रबन्ध होने लगा। सनातन धर्म की ओर से डासना के छत्रपति श्रीधर जी महाराज, पं० रामचन्द्र शर्मा वेदान्ती देहलवी तथा बहुत से पण्डित इकट्ठे हुए।

आर्य समाज की ओर से पं० कृपा राम शर्मा और पं० भीमसेन शर्मा, शर्मा जी के साथ थे। सर्व सम्मति से श्रीधर जी मध्यस्थ हुए शास्त्रार्थ का विषय था—'क्या गूजर क्षत्रिय हैं ? क्या इनका यज्ञोपवीत होना चाहिये ? सनातनी कहते थे कि गूजरों का यज्ञोपवीत शास्त्र विहित नहीं है, तब शर्मा जी ने घोषणा की कि यदि इनका यज्ञोपवीत शास्त्र विहित नहीं है तो शास्त्र का प्रमाण दीजिये। बहुत बल देने पर भी उक्त घोषणा पत्र का उत्तर न मिला, वेदान्तीजी टालमटोल करते रहे, जब रात्रि हुई तो पं० श्रीधर जी और वेदान्ती जी बिना उत्तर दिये चल दिये। ऐसी दशा देखकर बिसरख निवासी सनातन धर्मियों का धैर्य टूट गया। उन्होंने घोषणा कर दी कि सनातन धर्म के पण्डित पराजित हो गये, अतः हमारा सारा ग्राम वैदिक धर्मानुयायी बन गया है। वहाँ के प्रतिष्ठित रईस चौधरी रामचन्द्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंह तथा अन्य लोगों के संस्कार बड़ी धूम-धाम से हुए, अन्य ग्रामों में भी ऐसी ही कठिनाईयाँ उपस्थित होती थीं, परन्तु शर्मा जी का प्रभाव तो बड़े वेग से बढ़ रहा था उनके आगे से ऐसी विघ्न बाधाएँ तिनके की तरह उड़ जाती थीं।

श्री पं० मुरारिलाल शर्मा का कविता-साहित्य

इन पंक्तियों का लेखक अर्थात् मैं सन् १९०० ई० में १६-१७ वर्ष की आयु का था, बदायूँ आर्य समाज के रविवासरीय सत्संग में नियमित रूप से उपस्थित रहता था। तब विद्वानों के वेदोपदेश के प्रारम्भ और अन्त में भजन भी गाए जाते थे। मैं उस गान में बड़े चाव से सम्मिलित होता था। तब शर्मा जी की प्रसिद्ध पुस्तक 'भजनपचासा' बहुत प्रचलित थी। यहाँ तक कि खेतों में काम करने वाले किसानों को भी मैंने 'भजन पचासा' के भजन गाते हुए सुना। 'गणपति का रूप बनाय के—पीली मिट्टी पुजवाई' इत्यादि अनेक भजन गाँव गाँव में गाये जाते थे।

शर्मा जी की 'कक्का कमाल करके आर्यों ने दिखाया कविता क, ख, ग आदि अक्षरों के क्रम से रची गई थी यह मनोरंजक कविता उन दिनों बड़ी प्रसिद्धि पाई हुई थी। अभिप्राय यह कि शर्माजी एक अच्छे कवि भी थे!

शर्माजी का आनन्दी जीवन और स्वाध्याय।

पंडितों, मौलवियों, पादरियों द्वारा प्रशंसा।

शर्मा जी का आदर्श जीवन था। जिसके कारण प्रत्येक मनुष्य उनको बड़े आदर की दृष्टि से देखता था। उनके उज्ज्वल चरित्र के कारण ही प्रत्येक मनुष्य उनसे प्रेम करता था। यद्यपि वे गृहस्थी थे तथापि एक तपस्वी संन्यासी के समान अपना जीवन बिताते थे। ४० वर्ष की अवस्था के पश्चात् उन्होंने गृहस्थ सम्बन्धी समस्त सुख

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्याग दिये थे। उनकी धर्म परायणा पत्नी सिकन्दराबाद में, अपने छोटे पुत्र के साथ बड़ी कठिनता से जीवन व्यतीत करती थीं, शर्मा जी गुरुकुल में रहते थे और वहीं उनका पुस्तकालय था, उठते बैठते यात्रा में, रेल में, वे सदैव शास्त्रों का अनुशीलन किया करते थे। सही बुखारी, सही मुस्लिम, कुरान इञ्जील आदि ग्रन्थ उन्हें कण्ठस्थ थे। ऋषि दयानन्द कृत समस्त ग्रन्थों का उन्होंने अनेक बार पारायण किया था। वैदिक धर्म के विरुद्ध जो जो नये ग्रन्थ प्रकाशित होते थे उनको वे तुरन्त मँगाकर पढ़ा करते थे। वेदों और वैदिक सिद्धान्तों पर उनकी अटल श्रद्धा थी। ऋषि दयानन्द महाराज के लिये तो उनके हृदय में असीम भक्ति थी। शर्मांजी की स्मरण शक्ति बड़ी तीव्र थी, शास्त्रीय ज्ञान बड़ा गम्भीर था।

आर्य समाज के धुरन्धर विद्वान् पं० मुरारिलाल शर्मा की तार्किक शक्ति की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते थे। सर्व शास्त्र निष्णात काशी वासी पण्डितप्रवर श्री काशीनाथ जी, श्री पं० भीमसेन जी, महाविद्यालय ज्वालापुर के आचार्य श्री पं गंगादत्त जी, पं० पद्म सिंह शर्मा, पं० तुलसी राम स्वामी आदि समकालीन् विद्वान् जब शर्मांजी से मिलते तो उनके स्वोपार्जित अगाध ज्ञान की भूरि-भूरि प्रशंसा किया करते थे। शर्मांजी की वाणी में इतना माधुर्य था कि उनके प्रतिपक्षी प्रबल तार्किक पादरी ज्वाला सिंह, मौलवी सनाउल्ला, पादरी अहमद मसीह जैसे विरोधी भी उस पर मुग्ध हो जाते थे। जिस समय शर्मा जी भाषण देने मञ्च पर खड़े होते थे, उस समय सभा में आनन्द और उल्लास छा जाता था। भाषण के समय उनके मृदु हास्य के साथ एक अपूर्व तेज प्रतीत होता था, जो उन्हें विरासतमें प्राप्त हुवा था। लेखक ने ऐसी ओजस्विनी छटा आज तक स्वा० दर्शनानन्दजी के अतिरिक्त और किसी वक्ता में नहीं देखी। पं० भीमसेन जी ने एक बार कहा था कि जब मैं शर्मांजी का भाषण सुनने लगता हूँ, तो मेरी सब सुध-बुध खो जाती है, मैं उनके शब्दों में इतना तन्मय हो जाता हूँ, मानो किसी ने मेरे ऊपर जादू कर दिया हो ....

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महन्तजी के पुत्र के यज्ञोपवीत में अवहेलना का परिणाम

महन्तजी मंत्र मुग्ध !

एक बार पं० मुरारिलाल शर्मा को देहरादून के महन्तजी ने अपने पुत्र के यज्ञोपवीत में निमन्त्रित किया। महन्त जी ने अपने किसी मित्र के अनुरोध से ही उनको बुलाया था, इस अवसर पर पं० राधे श्याम जी कथा वाचक, श्री पन्तजी, तथा सनातन धर्म के अन्य अनेक प्रतिष्ठित विद्वान् आये हुए थे। शर्मा जी को इस सभा में देख कर सनातन धर्मी पण्डितों ने महन्त जी से कहा कि आपने इन्हें क्यों बुला लिया है ? ये व्याख्यान देना क्या जानें ? यदि इनका व्याख्यान कराना ही हो तो पीछे कराना। सायंकाल ६ बजे से सभा प्रारम्भ हुई सभी विद्वानों के भाषण हुए किन्तु सनातनी पण्डितों ने शर्माजी का भाषण न होने दिया। वे बोलने न पायें इस लिये पीछे से पं० राधे श्याम जी गाने के लिये खड़े कर दिये गये—रात्रि के ११॥ बज गये थे। लोग बैठे बैठे उकता रहे थे।

सहसा किसी ने महन्त जी से कहा कि जब पण्डित मुरारिलाल शर्मा बुलाये गए हैं तो उनका भी उपदेश होना चाहिये। सनातनी विद्वान् बड़े प्रसन्न थे कि अब इनका भाषण कौन सुनेगा ? शर्मा जी भी इस कूटनीति को ख़ूब समझते थे। उन्होंने निश्चय किया कि आज अपनी वक्तृत्व शक्ति का प्रभाव इनको अवश्य दिखाऊँगा। अतः वे बोलने खड़े हो गये। दस मिनट के भाषण में ही उन्होंने सभा को मन्त्रमुग्ध कर दिया। लोग मारे आल्हाद से उछलने लगे। किसी किसी ने उसी समय महन्त जी से कहा कि आपने साधारण से व्याख्यान कराके हमारा समय नष्ट कर दिया। व्याख्यान का विषय था 'यज्ञोपवीत का महत्व' जो बड़ा शुष्क था। परन्तु शर्मा जी ने उसे अपनी वाणी द्वारा सरस बना दिया। रात का एक बज चुका था

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो बज गये, परन्तु लोग टस से मस न हुए! शर्मांजी चुप होने लगते तभी हल्ला होता कि 'और बोलिये'। महन्तजी की आँखों में आनन्द के आँसू आ गये। और वे बोले—पण्डित जी! 'आप जैसा सिद्धवाक् पुरुष मैंने अपने जीवन में आज तक नहीं देखा। मुझे इन पण्डितों ने भ्रम में डाल दिया, इस लिये मैं आपका व्याख्यान पहले न करा सका। आप में अलौकिक वक्तृत्व शक्ति है इसीलिये यह सभा इतनी रात होने पर भी जमी हुई है।' शर्मांजी ने जब कहा कि मैं कल पुनः भाषण दूँगा, तब कहीं सभा विसर्जित हुई। फिर तो महन्त जी ने बड़े आदर से शर्मा जी के कई व्याख्यान कराये और सम्मान पूर्वक उनको विदाई दी। यह थी उस महापुरुष में भाषण की अलौकिक प्रतिभा। वे इतने निर्भीक वक्ता थे कि जिस बात को वेद विरुद्ध समझते थे उसका उसी समय खण्डन कर देते थे। चाहे उससे उनकी कितनी ही हानि क्यों न होती हो। पाखण्ड देखकर तो उनके हृदय में अग्नि प्रज्वलित होने लगती थी।

ऋषिकेश के महन्त जी को उपदेश

एक बार भरत मंदिर ऋषिकेश के महन्त जी ने शर्मा जी को निमन्त्रण दिया। उस समय महन्त जी के साथ वहाँ के साधुओं का का झगड़ा चल रहा था, अतएव महन्तजी ने एक सभा का आयोजन किया। और इस झगड़े को शांत करने के लिये पं० नेकीराम शर्मा आदि प्रमुख विद्वान् बुलाये, शर्मांजी को भी निमन्त्रित किया गया, शर्मांजी के साथ उनके ज्येष्ठ पुत्र पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री सांख्यतीर्थ भी गये। महन्त जी ने बड़े श्रद्धाभाव से इनका स्वागत किया। उसी समय बाबा रामनाथ जी काली कमली वाले भी उनसे मिले। उन्होंने भी शर्मा जी को अपने यहाँ निमन्त्रित किया। शर्मांजी ने बाबा जी का ध्यान कई भयंकर त्रुटियों की ओर आकृष्ट किया। उन्होंने कहा कि अन्य कार्यों में धन व्यय करने की अपेक्षा आप संस्कृत विद्या की उन्नति पर विशेष ध्यान दीजिये। विद्वान् तपस्वी साधुओं को भोजन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्त्रादि देने में अवश्य लाभ है, किन्तु मूर्ख, पाखण्डी, ढोंगी साधुओं को भोजन देना अपने आप देश का अहित करना है। महन्त जी ने शर्माजी को कई वस्तुएँ उपहार में दीं और दो सौ रुपये नक़द भेंट किए जो उन्होंने गुरुकुल को दे दिये।

दुराचार के अड्डों को उखाड़ फेंका !

एक दिन शर्मा जी गंगा स्नान कर रहे थे। उस समय उन्होंने वह गीता-पाठ करने वाले मारवाड़ियों का एक झुण्ड देखा। ये लोग कल कत्ता में बने सुप्रसिद्ध गोविन्द भवन के महन्त के साथ ऋषिके आये थे। कई स्त्रियाँ भी थीं। सब लोग गीता का पाठ बड़े ऊँचे स्व से करते थे।

इस संस्था में कितनी ही स्त्रियों का सतीत्व नष्ट किया गया था कुछ लोग कृष्ण का रूप धारण कर रास रचते थे, नाचते थे। स्त्रि गोपियां बनकर नाचती थीं। गीता की आड़ लेकर ही यह पाख खड़ा किया गया था। सैकड़ों मारवाड़ी गीता का ही पाठ करते र थे। इस भवन के गुप्त रहस्य अभी तक खुले नहीं थे। पर शर्माजी जब इस मण्डली को देखा तभी कह दिया कि यह एक नया पाख खड़ा हुआ है, जिसका भेद किसी दिन बिना खुले न रहेगा।

ऐसे पाखण्ड को देखकर शर्माजी के हृदय में बड़ी वेदना हुई वे तत्क़ाल वहाँ पहुँचे वहाँ महन्तजी अपने चेले चेलियों सहित डेरा डाले हुए थे। शर्माजी ने जाते ही महन्तजी को आड़े हाथों लिया और पूछा 'किस वेद या शास्त्र में स्त्रियों के साथ पुरुषों का नाच लिखा है ? आप अपने को कृष्ण बताते हैं तो बताइये आप में और मामूली आदमी में क्या अन्तर है। अगर आप में वैराग्य आदि है तो यह चेले चेलियों का पाखण्ड क्यों रचा है ? अपनी पूजा क्यों कराते हैं ? स्त्रियों के अङ्ग स्पर्श से आप को कामोत्पत्ति होती या नहीं ? शर्माजी ने महन्तजी से ऐसे जटिल प्रश्न किये जिससे उन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारा ढाँचा ढीला पड़ गया। पास बैठे हुए चेले भी चक्कर में आ गये। ऐसा निर्भय, सत्य वक्ता, मनुष्य महन्तजी से कभी न मिला था। अतः उनसे कुछ बोलते न बना। केवल इतन कहा कि "मैं वेद के रहस्य को नहीं जानता"। शर्माजी ने कहा, "क्या आप सच्चे हृदय से कह सकते हैं कि यह आप का पाखण्ड नहीं है।" महन्तजी इसका उत्तर ही क्या देते, क्योंकि जिस व्यभिचार लीला के छिपाने के लिये महाराज यहाँ पधारे थे वह यहीं उघड़ने वाली भी थी। महन्त ने समझा शायद ये भी मेरा भेद जानते हैं, इसलिये बोले—आप जैसा समझें। शर्माजी ने इस व्यक्ति को उसके चेलां के सामने ही फटकारा और फिर वहाँ से चले आये।

पाठकों को आश्चर्य होगा कि इसके पश्चात् तुरन्त ही कई स्त्रियों ने उस पाखण्ड को यहीं खोला। सम्भव है, शर्माजी के भाषण का ही प्रभाव पड़ा हो जो वे स्त्रियां इस रहस्योद्घाटन के लिये समुद्यत हुईं।

शर्माजी स्वामीजी को लाने के लिये अजमेर पहुँचे

अप्रेल सन् १९१३ ई० में स्व० स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज अजमेर में बीमार हो गये। वे आंत्रशोथ रोग में ग्रस्त थे। उस आपत्तिपूर्ण परिस्थिति में अनेक आचार्य और विद्वान् स्वामीजी की सेवा में पहुँचे हुए थे। श्री प० मुरारिलाल शर्मा भी स्वामीजी को सिकन्दराबाद लाने के लिये गए थे। इन दोनों का पारस्परिक सौहार्द प्रसिद्ध था हाथरस में भी चिकित्सा हुई किंतु लाभ न हुआ अतः गुरुकुल में चिकित्सा होती रही किंतु स्वामीजी एक शास्त्रार्थ के लिये हाथरस चले गये और ११ मई १९१३ को हाथरस में ही स्वामीजी ने शरीर छोड़ दिया [देखिए—'दर्शनानन्द-दर्शन' पृ० १५०-१५१]

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तम—परिच्छेद

गुरुकुल से विदाई, २०००) का दान

स्मृतियों ने संग न छोड़ा

निरन्तर ३५ वर्षों तक अथक परिश्रम करने और अपने सहयोगी कार्यकर्ताओं के परलोकवासी हो जाने के कारण पं० मुरारिलाल शर्मा के स्वस्थ तथा पुष्ट शरीर में भी जरा के चिन्ह दिखाई देने लगे थे। यद्यपि उनका हृदय मस्तिष्क और मन तो पूर्ववत् ही साहस सम्पन्न था, परन्तु शरीर कुछ निर्बल हो गया था। ऐसी दशा में उन्होंने अपना समय ईश्वराराधन में बिताने की इच्छा प्रकट की। उनका समस्त परिवार देहली था ही, सबकी यही इच्छा थी कि पूज्य अपना शेष जीवन यहाँ एकान्त में रहकर, आत्मचिन्तन और भगवद् भजन में व्यतीत करें। साथ ही उनके सुयोग्य पुत्रों ने उनकी सेवा करने की इच्छा प्रकट की। इन सब कारणों से शर्माजी ने गुरुकुल कमेटी के सब सभासद् बुलाये और उनसे कहा कि "मेरा शरीर अब धीरे-धीरे निर्बल होता जा रहा है, क्या पता है—प्राणान्त का समय कब आ जाये। इसलिए मैं अब गुरुकुल के कार्यभार से मुक्त होना चाहता हूँ, अब शेष जीवन भगवान् की अराधना में ही व्यतीत होगा, अब आप लोग गुरुकुल-संचालन के गुरुतर भार को सम्हालें।"

यद्यपि कुछ सदस्यों ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन नहीं किया तथापि शर्माजी के अनुरोध से कमेटी ने इसे स्वीकार कर लिया और यह भार कुँ० सुखलाल सिंह जी आर्य मुसाफिर—जो इस ज़िले के प्रसिद्ध भजनोपदेशक हैं, के ऊपर रख दिया। कुँअर साहिब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये १००) मासिक वृत्ति भी नियत कर दी। सभासद् रात्रि के एक बजे तक शर्माजी से अन्य अनेक परामर्श भी करते रहे।

इस अन्तिम समय में, जब उस कर्मवीर ब्राह्मण के पास अपने शरीर के अतिरिक्त और कुछ नहीं रखा था, १६००) जो उनके गुरुकुल सभा पर शेष थे—गुरुकुल को ही दान कर दिये। उनके श्रेष्ठ पुत्र पं० देवेन्द्र नाथ शास्त्री ने भी ४००)गुरुकुल को दान दिये। इसके अनन्तर दूसरे दिन अर्थात् १२ फरवरी १६२६ को शर्माजी ने कुल के समस्त ब्रह्मचारियों, अध्यापकों तथा सभासदों से सजल नेत्रों से विदाई ली और देहली के लिए प्रस्थान किया।

शर्माजी देहली में स्वपरिवार में

जब देहली निवासियों ने शर्माजी का शुभागमन का समाचार सुना तो झुण्ड के झुण्ड उनके पास सत्संग के लिये आने लगे। उत्सवों के आमन्त्रण और भी अधिक प्राप्त होने लगे। परन्तु उनका अधिक समय भगवद्भजन में ही व्यतीत होता था। यद्यपि सभा ने गुरुकुल का कार्य कुँवर सुखलालजी को सौंपा था किन्तु कुँवर साहब गुरुकुल की सेवा न कर सके। गुरुकुल के शुभचिन्तकों ने फिर शर्माजी को आ घेरा। गुरुकुल की शोचनीय दशा सुनकर उनके नेत्रों में आँसू आ गये। ठीक ही तो है—

"विष वृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसांप्रतम्"

अर्थात् अपने हाथ से लगाया हुआ विष वृक्ष भी अपने हाथ से नहीं उखाड़ा जाता फिर गुरुकुल जैसी महती संस्था—जिसका उन्होंने २६ वर्ष संचालन किया—अपनी ही आँखों से उजड़ती कैसे देखी जासकती थी। सभासदों तथा अपने अन्य अनेक बालसखाओं के अनुरोध को शर्माजी टाल न सके, और विवश होकर १५ अगस्त सन् १६२६ की सभा में वे पुनः मन्त्री चुन लिये गये। उन्होंने देहली निवास नहीं छोड़ा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वा० श्रद्धानन्द–बलिदान पर वीर हुंकार

शर्मांजी के दिल्ली निवास के दस मास पश्चात् अर्थात् २३ दिसम्बर सन् १९२६ को अब्दुल रशीद नामक एक निकृष्ट व्यक्ति ने देहली में स्वामी श्रद्धानन्दजी की हत्या कर डाली। स्वामीजी के शोक में दिल्ली में जो सार्वजनिक सभा हुई उसमें शर्मांजी ने निम्न वाक्य कहे थे—"मुझे इस हत्या पर अत्यन्त गर्व है, जब ऋषि दयानन्द ने विष का प्याला पिया, जब आर्यपथिक स्व० पं० लेखरामजी ने कलेजे में खन्जर खाया तो कौन सा कारण है कि उनके पद-चिन्हों पर चलने वाले हम लोग वैसी ही उत्तम मृत्यु क्यों न प्राप्त करें। मुझे अनेक बार मुसलमानों के धमकी भरे पत्र मिले कि तुम क़त्ल कर दिये जाओगे। दुःख है कि मुझे अब तक यह सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। सच तो यह है कि अब मैं भी यह चाहता हूं कि शीघ्र से शीघ्र इस शरीर से छुटकारा मिले और नव्य शरीर धारण करके पुनः अपने देश की सेवा उत्तम रीति से करूं यह पुरानी गाड़ी अब जितनी जल्दी छूट जावे उतना ही अच्छा है। मेरी तो आत्मा यही कहती है कि स्वामीजी के अनन्तर अब मेरी बारी है और यह संभव है कि मैं आगे शायद ही आप के सामने भाषण कर सकूँ। शर्मांजी के ये शब्द उनकी आत्मा की प्रतिध्वनि थे जो अन्त को सत्य होकर रहे।

मलकाना शुद्धि आन्दोलन में अछनेरा में उपस्थित

तीव्र ज्वर में अन्तिम व्याख्यान

मुसलमानों की अश्रुधारा

इन दिनों आगरा ज़िले में मलकानों (नौ मुस्लिमों) की शुद्धि की धूम मची हुई थी, कितने ही ग्राम शुद्ध हो चुके थे किन्तु बहुत यत्न करने पर भी सांधन गांव शुद्ध न हो पाया था। वहां मुल्लाओं का बड़

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमाव था। शुद्धि सभा के उपदेशों पर ईंट, पत्थर बरसते थे, गांव में कोई जाने भी न देता था। जिस समय शुद्धि सभा इसकी शुद्धि का भागीरथ प्रयत्न कर रही थी, उसी समय स्वा० श्रद्धानन्दजी का बलिदान हुआ था, जिससे इस शुद्धि-यज्ञ को और भी धक्का लगा। किन्तु स्वामीजी की हत्या से भारत के कोने-कोने में अग्नि अधिक प्रज्वलित हो गई। शुद्धि सभा ने तब पुनः निश्चय किया कि चाहे जिस प्रकार हो—साँधन गाँव अवश्य शुद्ध होना चाहिये। इसी विचार के लिये आगरा की शाखा के अधिष्ठाता श्री बाबू नाथमलजी देहली आये, इस समय साँधन को शुद्ध करने के लिये उन्हें शर्माजी से अधिक बलवान् योद्धा आर्य जगत् में नज़र नहीं आया। बा० नाथमलजी ने पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री द्वारा शर्माजी से प्रार्थना की कि वे ही इस क़िले को सर कर सकते हैं। उनसे अधिक बलवान् मनुष्य समाज में कोई नहीं है इसलिये वे साँधन पधारकर आर्य जाति का कल्याण करें। जिस समय शर्माजी से यह प्रार्थना की गई, उस समय वे किसी उत्सव में जा रहे थे किन्तु उन्होंने शुद्धि कार्य को अत्यन्त आवश्यक समझा और शरीर के अस्वस्थ होते हुए भी जाने की स्वीकृति दे दी। प्रथम तो वे गुरुकुल सिकन्दराबाद निरीक्षण के लिये गए और वहाँ से सांधन के लिये चल पड़े।

एक तो शर्माजी का वृद्ध शरीर, फिर वह कार्यभार से थका हुआ, तिस पर कड़ाके का जाड़ा, इससे उनको ज्वर हो गया। १५ जनवरी १९२७ को वे अछनेरा (सांधन) पहुँचे, उस समय उनको ज्वर चढ़ा हुआ था किन्तु उन्होंने सदा की भाँति स्नान किया। दो दिन से कुछ न खाया था फिर भी वे व्याख्यान देने के लिए मञ्च पर जा विराजे। व्याख्यान क्या था—करुणा का स्रोत बह रहा था। लोग कहते हैं कि शर्माजी का वह व्याख्यान अन्तिम ही था, उपस्थित जन-समूह की आँखों से भी अविरल अश्रुधारा बह रही थी। आर्य जाति के लाल —तलवार की नोक से किस प्रकार मुसलमान बनाए गये, जब इसका वर्णन शर्माजी ने किया तो कट्टर मुसलमानों की आँखों से भी अश्रु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्षा होने लगी। करुणा का समुद्र हिलोरें मार रहा था, अपनी दुर्दशा पर आबाल वृद्ध सभी रो रहे थे। "हा ! हम लोग अपने प्यारे धर्म से अपने बन्धुओं से, अपने परिवार से किस प्रकार ज़बर्दस्ती अलग किये गये हैं" इस वृन्तान्त को शर्माजी की ओजस्विनी वाणी से सुनकर उपस्थित लोग फूट-फूटकर रोने लगे। एक घण्टे के भाषण ने मौलवियों के चिरकाल से किए प्रयत्न को धूल में मिला दिया। वाह रे नरकेसरी ! तेरे सिवाय किसका बूता था जो इस क़िले को फ़तह कर सकता, तू तू ही था। शर्माजी ने कट्टर और ज़िद्दी मलकाने शुद्धि के लिये तैयार कर दिये। मौलवियों का गढ़ टूट गया, आज वही सांधन गाँव शुद्ध राजपूतों का गाँव है। यह किसकी प्रतिभा थी, यह किसकी ओजस्विनी वाणी थी जिसने कुछ ही क्षणों में हज़ारों के दिल और दिमाग़ बदल दिये ? धन्य ऐसे नर ज्ञव को, धन्य शर्माजी को, सच तो यह है कि अब भी ऐसे ही नर रत्नों की आवश्यकता है।

दिल्ली में बेहोशी में उपचार

शर्माजी जब व्याख्यान—मञ्च से उतरे तो उन्हें १०३ डिग्री ज्वर था, बोले—अब मुझे आगरा ले चलो। तब आप को आगरा लाया गया। उनको निमोनियां का आक्रमण हो रहा था, फिर भी कुछ घबराहट प्रकट न की। आप शाखा शुद्धि सभा कार्यालय में उतरे। शुद्धि-सभा के कार्यकर्ताओं ने आपके रोग पर विशेष ध्यान नहीं दिया, सेवा शुश्रूषा तो करते रहे परन्तु आवश्यक उपचार नहीं हो पाया, अतः तीन दिन बाद शर्माजी ने देहली जाने का निश्चय किया, ऐसे समय में कार्यकर्ताओं को उचित था कि उनके देहली जाने का अत्युत्तम प्रबन्ध करते, किन्तु शोक के साथ लिखना पड़ता है कि इतना प्रबन्ध भी उन्होंने नहीं किया, यहाँ तक कि उनके परिवार को एक तार भी नहीं दिया, न उनके आगरा के मित्रों को उनके रोग की कोई सूचना दी। संभव है, शर्माजी ने तार देने को मना किया हो, किन्तु वहाँ के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकर्ताओं को मना करने पर भी दिल्ली तक एक संरक्षक उनके साथ अवश्य भेजना चाहिये था, क्योंकि बिना किसी सहायक के उनका देहली पहुँचना अति कठिन था। संरक्षक न होने पर भी शर्माजी को डाकगाड़ी के सेकेण्ड क्लास में भेजते, तब भी उनको आराम मिलता। किन्तु दुःख है शर्माजी को पैसेन्जर गाड़ी के थर्डक्लास के डिब्बे में डालकर रवाना कर दिया गया। कौन ऐसा सहृदय है जो 'आगरा शुद्धिसभा के कार्यकर्ताओं की इस लापरवाही पर आठ आँसू न बहाएगा। यह कितना हृदय-विदारक दृश्य है। वह काल रूप गाड़ी देहली किस समय पहुँची? वे स्टेशन पर कैसे उतरे? वहाँ से ताँगे पर किसने उसको चढ़ाया?—ये सब बातें शर्माजी पर बीतीं, इस समय किसी का साहस न हुआ कि उनसे कुछ पूछे।

—:o:—

अष्टम परिच्छेद

दशा एकदम बिगड़ी

डाक्टर भी दुःखी और विवश

२० ता० को सायङ्काल के ७ बजे किसी ने घर पर आवाज़ दी कि शर्माजी पटरी पर पड़े हुए हैं। यह सुनते ही पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री और पं० महेन्द्रदेव शास्त्री ने नीचे आकर देखा तो शर्माजी सचमुच बेहोशी की दशा में पड़े हुए थे। उस समय उनको १०४ डिग्री ज्वर था, ज़ुबान तुतला रही थी, शरीर पर एक कम्बल था। बिस्तर बँधा हुआ था, उसी समय उनको उठाकर ऊपर लाया गया। डाक्टर सुखदेवजी तथा अन्य कई डाक्टर चिकित्सा के लिये बुलाये गये। शरीर की पूरी जाँच करने के बाद जब डाक्टर साहब से पूछा गयाकि शर्माजी का क्या हाल है, तब डाक्टरों की आँखों से अविरल अश्रुधारा बहने लगी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने कहा—हाँ ! आर्य समाज का बड़ा दुर्भाग्य है, अभी एक मास पूर्व ही तो स्वा० श्रद्धानंदजी का स्वर्गवास हुआ है, अब हमारे एक-मात्र आश्रय शर्माजी का भी अन्त समय निकट आ पहुँचा। अब आर्य समाज को ऐसा नर रत्न प्राप्त नहीं हो सकेगा। कौन ऐसा वीर है जो विधर्मियों का सामना कर सकेगा। डा० सुखदेवजी इतना कहकर रोने लगे। शर्माजी का समस्त परिवार दुःख सागर में डूब गया और चारों ओर निराशा छा गई।

परिवार से अन्तिम संबोधन

शर्माजी से पूछा गया कि 'आपकी दशा ऐसी क्यों हो गई, जबकि आप दो तीन दिन पूर्व रेल द्वारा देहली से अछनेरा गये थे।' इसके उत्तर में शर्माजी ने यही कहा कि "आगरे के आर्य पुरुषों ने सेवा करने में तो कुछ कसर नहीं छोड़ी, किन्तु कुछ पैसे के लोभ में मुझे पैसेञ्जर गाढ़ी में भेज दिया, यही बुरा हुआ। अति शीत के कारण रास्ते-भर उनके शरीर को हवा लगती रही, जिससे उनके दोनों फेफड़े ख़राब हो गये, अस्तु, डाक्टरों की सलाह से चिकित्सा प्रारम्भ हुई, सिद्धहस्त चिकित्सक मेरठ निवासी पं० राम सहाय जी वैद्य शास्त्री को —जो उनके अनन्य भक्त तथा मित्र थे—तार दिया गया किन्तु वह तार उन्हें न मिल सका, शर्माजी का उन पर बड़ा विश्वास था। अंग्रेजी दवाओं से उनको घृणा थी अतःउन्होंने बड़ी अनिच्छा से कुछ दवाइयां लीं। बुखार ६ डिग्री ६॥ डिग्री जा पहुँचा, कई वैद्यों ने भी उनको देखा किंतु सभी दवाईयां व्यर्थ सिद्ध हुईं,। वृद्ध शरीर और फिर पूरा निमोनिया. श्वास की गति अधिक तीव्र हो गई। ज्वर की मात्रा और अधिक होने पर भी उनका मस्तिष्क तनिक भी विकृत न हुआ था। सदा की भाँति शौच क्रिया करते रहे। गायत्री का जप ओ३म् का उच्चारण तो उनके मुख से होता ही रहता था।

२२ ता० को दशा और भी बिगड़ गई। वैद्यों ने कहा कि शर्माजी का बचना अब सर्वथा असम्भव है। शर्माजी के बड़े पुत्र पं० देवेन्द्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाथ शास्त्री ने जब अपने पूज्य पिताजी से अन्तिम आज्ञा प्रदान करने की प्रार्थना की, तब उन्होंने प्रेमपूर्वक कहा—"बेटा! मेरा अन्त समय आ गया, प्रभु के अनुग्रह से मैंने अधिक क्लेश नहीं पाया, तुम लोग सभी ज्ञानवान् हो, इसलिये मेरी मृत्यु का शोक न करना, एक दिन यहाँ से सभी को जाना है। मैंने अपने सामर्थ्य के अनुसार समाज की जो सेवा की है इससे अन्त समय में भी मेरी आत्मा को शान्ति मिल रही है। मैं तुम लोगों से क्या कहूँ—अपनी ज़िन्दगी में मैंने बहुत कुछ कहा, मेरी ज़िन्दगी तो एक फ़क़ीर की-सी है। इसलिए मेरे पास तुम्हें देने को कुछ नहीं है, जो कुछ देना था दे चुका।" शास्त्री जी ने पूछा—छोटा भाई धर्मेन्द्र 'नरवर' पढ़ रहा है, क्या उसे बुला लिया जाये? किन्तु उन्होंने कहा, "क्या आवश्यकता है, उसके पढ़ने में विघ्न मत डालो।

वसीयत, अन्तिम घड़ियों का दृश्य और प्राणोत्सर्ग

कुछ देर रुककर फिर कहा, "मेरी अन्तिम बात तुम और सुन लो, मेरी अन्तिम इच्छा और वसीयत यही है कि तुम मेरे स्थान पर आजन्म समाज की सेवा करो, तुम्हारे दोनों भाई यहीं रहें। मेरे पीछे तुम सब अपनी माता की आज्ञा का अच्छी तरह पालन करना। उसको किसी प्रकार का कष्ट न हो। उसने मेरे साथ समाज सेवा में कठोर यातनाएँ सही हैं, जिनको या तो वह जानती है या मैं जानता हूँ। इसलिये जिससे उसकी आत्मा को दुख न पहुँचे वही कार्य करना।" इतना कहकर शर्माजी चुप हो गये। उन्होंने अपने सम्मुख स्त्रियों के आने की सख्त मनाही कर दी थी, धीरे-धीरे दिन व्यतीत हुआ। ज्वर की गति अति तीव्र हो गई, श्वास कठिनता से आने लगा। अपने चक्षु उन्होंने बन्द कर लिये और ध्यान प्रभु की ओर लगाया। उसी दशा में रात्रि के चतुर्थ प्रहर अर्थात् ब्रह्म-मुहूर्त में ४ बजे वह पवित्र आत्मा परमधाम को प्रस्थान कर गया। शर्माजी की मृत्यु से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली में कुहराम मच गया। उनकी धर्मपरायणा धर्म पत्नी विधवा होकर शोक से बेहोश हो गई और पृथ्वी पर गिर पड़ीं। पितृ वियोग से पुत्र अनाथ वत् रो रहे थे।

करुण क्रन्दन, अर्थी की तैयारी,

सम्भ्रान्त जन एकत्रित

उस दिन आदित्यवार था, जब यह समाचार देहली के आर्य समाजों में पहुँचा तो वहाँ शोक की घटाएं छा गईं। शर्माजी के मित्र उसी समय दौड़ते हुए उनके स्थान पर पहुँचे। सभी समाजों के मन्त्री प्रधान, सभासद्, श्री नारायण स्वामी जी महाराज, प्रोफ़ेसर इन्द्रजी, ला० नारायण दत्तजी ठेकेदार, ला० ज्ञानचन्द्रजी, ला० देशबन्धु गुप्त आदि महानुभाव उपस्थित हो गये। सभी के हृदय शोक से व्याकुल थे, शर्माजी की मृत्यु के कारण उनके परम स्नेही मित्र ढाढें मारकर रो रहे थे किन्तु सबसे अधिक शोक ब्रह्मचारी मंगलदेव को था, जिनको शर्माजी ने बड़े स्नेह से पालकर और गुरुकुल में विद्यादान देकर अनाथ से सनाथ बनाया था। मंगलदेवजी को शर्माजी देहली से ले गये थे और अपनी आनन्दमयी गोद में रखकर उन्हें उपदेशक बनाया था। वे जब कभी मङ्गलदेव से मिलते, पुत्रवत् स्नेह करते थे।

उस समय ऐसे अनेक छात्र देहली में उपस्थित थे जिन्होंने शर्मा-जी से वैदिक सिद्धान्तों की शिक्षा प्राप्तकर समाज में यथेष्ट प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। अपने धर्म-पिता का मृत्यु संवाद सुनकर ये सभी अति दुःखित हुए। जब उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ उनका मृत कलेवर रखा हुआ था तो इनसे रुका न गया, ज़मीन पर पछाड़ खाकर गिर पड़े। कई तो उनके चरणों से लिपट गये। उपस्थित लोगों से यह कारुणिक दृश्य न देखा जाता था, उनके करुण क्रन्दन को सुनकर पत्थर भी पिघल उठते, बहुत समझाने बुझाने पर ये छात्र किसी प्रकार शांत हुए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शव यात्रा, चन्दन चिता में वेद मन्त्रों से अन्त्येष्टि संस्कार

संपन्न, गणयमान्य पुरुषों द्वारा मार्मिक श्रद्धाञ्जलि

स्व० पं० मुरारिलाल शर्माजी की अर्थी बड़ी धूमधाम से श्मशान ले जाई गई। उनके शरीर पर पुष्प वृष्टि की गई। उनकी सम्पूर्ण देह चन्दन और केसर से चर्चित थी, आर्यसमाज के उच्च विद्वानों ने उनके गले में पुष्प मालाएं डालीं। कई अन्तरंग मित्रों ने आग्रह किया कि शर्माजी के पवित्र शव को वे चन्दन काष्ठ की चिता में ही भस्म करेंगे। उनमें मुख्य थे भगत सुन्द्रमलजी, ला० रामचन्द्र कूड़ेमलजी के सुपुत्र ला० गणेशदास जी और ला० राधे मोहनजी उनके आग्रह के अनुकूल बहुत से घृत, सामग्री, कपूर केसर से संश्लिष्ट कर चन्दन काष्ठ में दाह क्रिया सम्पन्न की गई। नगर की शव-यात्रा में कितनी ही भजन मण्डलियां, और कई अंग्रेजी बाजे, थे। दाह संस्कार के समय सभी उपस्थित विद्वानों ने अपने हाथों शव की और्ध्वदैहिक क्रिया सम्पन्न की और संस्कार बिधि के अनुसार यह अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न हुआ।

पाठक उस कुण्ड को न भूले होंगे जो स्वा० श्रद्धानन्द जी के लिये एक मास पूर्व, ठीक इसी वार और इसी तारीख को बनाया गया था। एक मास बाद इसी दिन आर्य समाज के महारथी, वीतराग, सच्चे शुभचिन्तक, अलौकिक तार्किक, तपस्वी ब्राह्मण, पण्डित मुरारिलाल शर्मा का विधिवत् अन्त्येष्टि संस्कार इसी में सम्पन्न हुआ। ईश्वर की लीला अपार है। शव-दाह के पश्चात् महात्मा नारायण स्वामी ने सजल नेत्रों और रुँधे कण्ठ से शर्माजी के गुणों का वर्णन किया तो उपस्थित लोगों के गले भी भर आये। सभी ने बड़ी शांति सद्-भावना से स्वर्गीय महान् आत्मा की शान्ति के लिये प्रभु से प्रार्थना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की और अपनी श्रद्धाञ्जलियां समर्पित की। शांति पाठ के साथ यह अन्त्येष्टि संस्कार समाप्त हुआ।

ओं भस्मान्त ँ...शरीरम्

ओं, सत्यमेव जयते नाऽनृतम्

सत्येन पन्था विततोदेवयानः ॥

येनाऽऽक्रमन्ति ऋषयो ह्याप्तकामाः

यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम् ॥

हँस के दुनियाँ में मरा कोई, कोई रोके मरा

ज़िन्दगी पाई मगर उसने, जो कुछ होके मरा

जी उठा मरने से वह, जिसकी प्रभू पर थी नज़र

जिसने दुनियां ही को पायाथा, वह सब खोके मरा

नहि कल्याण कृत् कश्चिद् दुर्गतिं भद्र गच्छति ।

परलोके तथाऽस्मिँश्च सएव सुखमेधते ॥

जिसने अपने जीवन में लाखों का कल्याण किया हो उसका यह लोक और परलोक दोनों ही सुधर जाते हैं।

ओ३म् शम्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा की मृत्यु पर शोक प्रकट करने वाले

पत्रों तथा आर्य समाजों की सूची

आर्य समाज	शिमला	आर्य समाज	बलिया
”	क्वेटा बिलोचिस्तान	”	आजमगढ़
”	अजमेर	”	गंज मुरादाबाद
”	गोरखपुर	”	अलीगढ़
”	भरतपुर (स्टेट)	”	प्यावली
”	सहारनपुर	”	मेरठ
”	झांसी	”	हापुड़
”	इलाहाबाद	”	मथुरा
”	होडल	”	रावलपिंडी
”	मोहनपुर	”	गुलावठी
”	मैनपुरी	”	चावड़ी बाज़ार देहली
”	मुरादाबाद		
”	फ़तहपुर	”	सदरबाज़ार देहली
”	मैंडू	”	नयाबांस देहली
”	बिजनौर	”	सब्जी मंडी देहली
”	कोटा स्टेट	”	ग़ाज़ियाबाद
”	मवाना कलां	गुरुकुल	रायकोट

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज	सीतापुर	गुरुकुल	गढ़ मुक्तेश्वर
"	दिल्ली-शाहदरा	"	सिकंदराबाद
"	ब्यावर	"	महाविद्यालय ज्वालापुर
"	इलदौर	"	वृंदावन
"	बरेली	"	वैद्यक महाविद्यालय मेरठ
"	सिकन्दराबाद	"	डौरली

महाराज रणञ्जयसिंह जी राज्य अमेठी।
श्री रामदेवजी शास्त्री एम० ए० दक्षिण अफ्रीका।
आर्य कुमार (सभा) अमृतसर।
" आजमगढ़।
" ग़ाज़ियाबाद।
अहीर हाई स्कूल रेवाड़ी।
भारतीय शुद्धि सभा आगरा।
आर्य मुसाफ़िर संरक्षिणी सभा आगरा आदि २।

इसके अतिरिक्त भारत के प्रायः सभी हिन्दी उर्दू तथा इंग्लिश के पत्रों ने इस शोक संवाद को बड़े दुःख के साथ छापा था। विस्तार के भय से संक्षेप में ही यह नामावली हमने प्रकाशित की है।

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवम परिच्छेद

संस्मरण तथा श्रद्धाञ्जलियां

(लेख तथा कविताओं द्वारा)

पूज्यपाद, कर्मवीर, तपोनिष्ठ, स्वर्गीय श्री० पं० मुरारिलालजी शर्मा के भक्तजनों, प्रशंसकों, तत्कालीन विद्वानों, शिष्यों तथा इतर जनों के द्वारा जो उनके सम्बन्ध में संस्मरण हमें प्राप्त हुए हैं उनको हम यहाँ प्रकाशित करना अत्यन्त उचित समझते हैं, क्योंकि इन संस्मरणों के द्वारा भी शर्माजी के अनेक गुणों का प्रकाश लोगों के सामने आवेगा। अनेक प्रकार की ज्ञानोपलब्धि भी उनके द्वारा प्राप्त होगी। कुछ लेख श्रद्धा तथा प्रेम वश लम्बे रूप में लिखे गए हैं, उनका संक्षिप्त सार ही हमने यहाँ दिया है। सभी संस्मरण पाठकों को अत्यन्त रुचिकर प्रतीत होंगे। इस प्रकार के हज़ारों संस्मरण स्वर्गीय के जीवन से सम्बन्ध रखने वाले हैं जो लोगों को उनके जीवन से प्रतिदिन ही प्राप्त होते थे। यदि उनकी जीवनी को प्रकाश में लाने का समाचार पत्रों द्वारा कोई पहिले से विज्ञापन होता तो आशा थी इस प्रकार के सैकड़ों अन्य संस्मरण भी हमें प्राप्त हो जाते किन्तु उनके चरित्र के विलम्ब से प्रकाशित होने के कारण वे वृद्ध महानुभाव भी दिवङ्गत हो गए, जो पूज्यवर शर्माजी के सम्पर्क में रहे, इस ही लिये चरित्र में उनके द्वारा किये गए शास्त्रार्थों का उल्लेख भी अधूरा ही रह गया। फिर भी हम पाठकों से, आर्य समाज के महानुभावों से, तथा इतर धर्मावलम्बियों से भी यह प्रार्थना करेंगे कि यदि कोई सज्जन हमें किसी शास्त्रार्थ अथवा संस्मरण को लिखकर अब भी देंगे तो हम उसे परिशिष्ट के रूप में अथवा द्वितीय संस्करण में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित कर देंगे। ऐसे लेखों के लिये प्रेषक महानुभावों के प्रति हम हृदय से आभार प्रदर्शित करेंगे।

—:o:—

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी
श्री० पं० रामचन्द्रजी देहलवी द्वारा श्रद्धाञ्जलि

स्वर्गीय श्री० पं० मुरारिलालजी शर्मा के साथ मेरा सम्पर्क और सहयोग काफ़ी रहा है। बहुत से शास्त्रार्थ जो मुसलमान और ईसाइयों से होते थे उनमें हम दोनों ही होते थे। प्रारम्भ में शास्त्रार्थ रणाङ्गण में आने के लिये पं० जी से ही मुझे विशेष प्रेरणा मिली। पं०जी बड़े निर्भीक वक्ता थे, उनकी युक्तियां अकाट्य होती थीं, वो निर्भीक होकर पाँच २ छै-छै हज़ार मुसलमानों के बीच डट कर शास्त्रार्थ करते थे, उनकी स्मरण शक्ति और हाज़िर जवाबी कमाल की थी, मुस्लिम साहित्य पर उनका पूर्व अधिकार था, सही मुस्लिम और सही बुख़ारी आदि के वे प्रायः हवाले देते थे। मेरी तो ठंडी मार होती थी किन्तु पं० जी के बड़े तीक्ष्ण प्रहार होते थे। उनके प्रति श्रद्धा के सुमन समर्पित हैं।
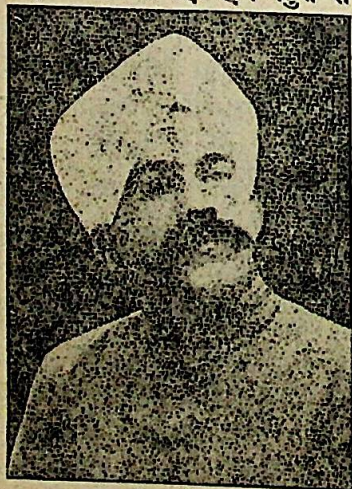
—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज के उद्भट विद्वान् प्रसिद्ध वक्ता
श्री० पं० विहारीलाजी शास्त्री, काव्यतीर्थ (बरेली द्वारा)
श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा के संस्मरण

वेद प्रचारे सफल: प्रवक्ता
शास्त्रार्थ तत्वस्य विशेषवेत्ता
तर्कप्रयोगे कुशलोगुणज्ञः
मुरारिलालो विबुधैःप्रणम्यः

तर्क कर्कशशरेण ताडिता
यस्यसततं विपश्चिणःक्षितौ
मौन माप्ताहिगच्छन्त्यघो मुखाः
स मुरारिः प्रणम्यते शिरसा

सन् १६०६की बात है जब मैं प्रथमा परीक्षामें पढ़ता था, आर्य समाज मंडी बांस मुरादाबाद का उत्सव था। उत्सव तब लोहागढ़ में हुआ करता था। मैं भी उत्सव देखने गया। वहाँ से श्री शर्माजी का भजन पचासा मोल ले लिया। इसके भजन बड़े प्यारे लगे।

(१) ईश्वर से चित्त हटाय के किस भ्रम्म जाल में डाला
(२) गणपति का रूप बनाय के पीली मिट्टी पुजवाई
(३) वह था यूसुफ़ नज्जारका नहिं मसी .खुदा का बेटा
(४) क्या अजब दीन इस्लाम है तुम ज़रा गौर फ़र्माना
(५) मिलं सज्जन सभी विचार लो क्या अजब पन्थ है जैनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि भजनों में सब ही अवैदिक मतों का युक्तियुक्त सप्रमाण खण्डन था। भाषा सरल, लै मीठी, तान कड़ाके की। लड़कों में, घर घर की स्त्रियों में बैठकर मैं भजन सुनाता तो सबको प्यारे लगते। फिर शर्माजी की बारह खड़ी हाथ में आई। पौराणिकों वाली भी और मुहम्मदियों वाली भी। मज़ा आ गया। अभी तक उसके अनेक पद्य कण्ठस्थ हैं।

१—कक्का कमाल करके आर्यों ने दिखाया,
सब दूर किया धुन्ध जो था दुनियां में छाया।
(पौराणिकों पर)

२—कक्का .कुरान का जो बताते हैं ठीक दीन,
मक़्तूं बने फिरे हैं सुनो उसकी छानबीन।
(मुहम्मदियों पर)

बस अभी तक शर्माजी की पुस्तकों का ही परिचय था। श्री शर्मा जी को देखा तक नहीं था।

गढ़ मुक्तेश्वर गंगा के मेले पर गुरुकुल सिकन्दराबाद की ओर से प्रचार का आयोजन होता था। मैं भी प्रचार सुनने को गया, वहाँ श्री शर्मांजी के दर्शन हुए और व्याख्यान भी सुना। ढोलक तथा क़रतालों पर उनके भजन भी सुने, जो एक वृद्ध ठाकुर गा रहे थे—"गणपति का रूप बनाय के" उनके अभिनय ने तो हँसाते हँसाते पेट फुला दिये। शर्मांजी का भाषण सुनकर जोश ताज़ा हो गया। नया जीवन मिला।

प्रतिभा प्रकाश—

आर्य समाज चन्दौसी का उत्सव था, शायद सन् १६१३ की बात है मैं तब अध्यापक था। उत्सव देखने गया था। उत्सव में शंका समाधान के समय पौराणिक पण्डित सांख्याचार्य श्री हरिहरनाथजी ने शंका की मुण्डन संस्कार के मन्त्रों पर।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वधितिस्ते पिता । स्वधिते मैनꣳ हिꣳ सीः

यहाँ जड़ उस्तरे से प्रार्थना है—और स्वधिति कौन है ? यह शब्द कैसे बनता है आदि । उस समय शर्माजी प्रधान थे । आर्य समाज का पण्डित मण्डल प्रश्न सुनकर २-३ मिनट काना फूंसी करता रहा । उत्सव में सन्नाटा था । पण्डित परामर्श करके कुछ निर्णय न कर पाए तो पौराणिक पण्डितजी ने कहा कि यदि उत्तर नहीं है तो हम जाते हैं । तब शर्माजी खड़े हुए और बोले कि—उत्तर तो है पर इस रद्दी प्रश्न को एक पढ़ा लिखा व्यक्ति क्यों कर रहा है यह सोचना था । जो व्यक्ति किसी भाषा का भी साहित्य पढ़ा है वह जानता है कि जड़ों को पशु-पक्षियों को सम्बोधन करके बोलने वाली कविताएँ हर भाषा में होती हैं । वह सम्बोधन समझा जाता है उस वस्तु से सम्बन्ध रखने वाले चेतन व्यक्ति के लिये ही : जैसे—

क़लम गोयदकि मनशाहे जहानम्

क़लम कसरा बदौलत मे रसानम्

क़लम कहती है कि मैं संसार की राजा हूँ । क्यों क़लम बोलती है ? नहीं । यहाँ तात्पर्य है क़लम वाले मुन्शी से, विद्वान् से । स्वधिति कहते हैं फ़ौलाद को । उस्तरा मज़बूत पक्के लोहे का होना चाहिये । कच्चे लोहे का नहीं, वरना खाल छील कर रख देगा । १० मिनट तक शर्माजी ने जो जोशीला भाषण दिया, तालियाँ बज उठीं । पौराणिक पण्डितजी झेंपकर चले गये । मैं तो शर्माजी की प्रतिभा पर उनका भक्त बन गया । जब ठहरने के स्थान पर जाकर मैंने शर्माजी की प्रशंसा की तो पण्डितों को बुरा लगा ईर्ष्या के कारण । अब तो मैं भी उपदेशक बन चला था । अनेक उत्सवों में उनसे भेंट होती रहती थी ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्माजी का प्रिय भोज्य–

दही बड़े, पकौड़ी की चाट, उन्हें बहुत पसन्द थी। मैं और वे धामपुर से शेरकोट जा रहे थे तांगे पर। मार्ग में बाज़ार में ही उनका परिचित चाटवाला मिल गया, वस उतर पड़े शर्माजी तांगे से। मैंने और उन्होंने चाट खाई, वड़े प्रसन्न हुए।

हापुड़ में भी हम दोनों साथ साथ ही रोज़ाना चाट खाने जाते रहे। मिर्च न हो, खटाई न हो, ये रूखी वातें उन्हें पसन्द नहीं थीं। इनका भाषण चटपटा, काम में तत्परता, तो भोजन भी चटपटा।

ज़िन्दादिली–

शर्माजी ज़िन्दादिल थे। उन्होंने अपने सजीव उपदेशों से सदा आर्य समाज में जीवन का संचार किया। वे जब मिलते थे तो उन्हें चेताने के लिये। मैं कहता था कि शर्माजी ? अब तो आर्य समाज ढीला पड़ गया। बेजान सा हो गया है।

वस इतना सुनते ही शर्माजी जोश में आ जाते, कहते अभी तो २ शुद्धियाँ हमने की हैं। शास्त्रार्थ में मौलवी को ऐसा पटका कि होश हवास भूल गया। अखिलानन्द की वह हार हुई कि याद करेगा, आदि ओजस्वी प्रबोधन शर्माजी सुना देते थे ! आर्य समाज का अपयश व ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों पर आक्षेप व उनमें न्यूनता वताना उन्हें असह्य था। ऋषि के प्रति अगाध श्रद्धा, सिद्धान्त पर अटल विश्वास था उस सच्चे वैदिक ब्राह्मण को।

ब्राह्मण पार्टी और शर्माजी–

गुरुकुल वृन्दावन के उत्सव पर श्री प्रोफ़ेसर रामदेवजी ने जन्म के ब्राह्मणों के विरुद्ध एक भीषण भाषण दे डाला। ब्राह्मण उपदेशकों को भाड़े का टट्टू वताया और संस्कृत पण्डितों को ढोंगी। इस पर सब उपदेशक क्षुब्ध हो गये। कविरत्न श्री अखिलानन्दजी ने तो वहीं उत्तर में भाषण भी दिया और "वैदिक वर्ण व्यवस्था" पुस्तक लिख डाली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा ने उनके आर्य सामाजिक वेदी से बोलने का निषेध कर दिया। इस पर उन्होंने आर्य समाज को छोड़कर पौराणिकों में जा मिलने का विचार किया। इस पर शर्माजी ने उन्हें यही सलाह दी कि ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों का विरोध करना पाप है। हम आर्य समाज के भरोसे पर आर्य समाजी नहीं वने है, ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों के विश्वास पर आर्य समाजी हैं। आर्य समाज कोई ग़लती करे तो उसका प्रतिवाद करो परन्तु स्वामीजी के सिद्धान्त अखण्डनीय हैं। पं० अखिलानन्दजी को तो इटावे के श्री पं० भीमसेनजी ने चांदी की जंज़ीर में बांध कर खींच लिया, पर और कोई ब्राह्मण विचलित नहीं हुआ। २ ३ वर्ष तक ब्राह्मण पार्टी और बाबू पार्टी रही और फिर ब्राह्मणों के अटल विश्वास और तपस्त्याग से बाबू पार्टी अस्त हो गई। पं०अखिलानन्दजी से श्री पं०देवेन्दनाथजी शास्त्री (श्री शर्माजी के ज्येष्ठ पुत्र) के अनेक शास्त्रार्थ हुए। ब्राह्मण पार्टी भी विलीन हो गई। शर्माजी का यह था विश्वास वैदिक सिद्धान्तों पर।

—:o:—

७५ वर्षीय आर्य महोपदेशक पं० मंगलदेव जी का संस्मरण

शास्त्रार्थ शहादरा

मौलवी अब्दुल हक़ से "रूह माद्दे की क़दासत" पर शहादरा में स्व० पं० रामचन्द्रजी देहलवी से शास्त्रार्थ था। उसमें स्वर्गीय श्री० पं० मुरारिलालजी शर्मा मन्त्री गुरुकुल सिकन्दराबाद सभापति का आसन सुशोभित कर रहे थे। देहलवीजी ने अनेक प्रमाण प्रस्तुत किये और यह सिद्ध किया कि तीन चीज़ें अनादि हैं अर्थात् ईश्वर जीव और प्रकृति। मौलवी अब्दुल हक़ ने उन प्रमाणों को अस्वीकार कर दिया। इस पर स्वर्गीय पं० मुरारिलालजी शर्मा ने पं० रामचन्द्रजी से कहा कि आप मुझे समय दें तो मैं कुछ कहूँ। इस पर पं० रामचन्द्र जी ने अपनी ओर से बोलने को श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा को अव-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर प्रदान किया। पं० जी ने मौलाना को सम्बोधित करके कहा कि मौलाना साहब, मैं आपसे पूछता हूँ कि आप .खुदा की हस्ती को मानते हैं या नहीं? मौलाना ने कहा ज़रूर मानता हूँ। फिर शर्माजी ने कहा कि आप अपनी हस्ती को भी मानते हैं, कि मैं हूँ मौलाना बोले हाँ मानता हूँ। मैं मुबाहिसा कर रहा हूँ फिर इन्कार कैसे कर सकता हूँ। शर्माजी ने पूछा कि यह जो दुनियाँ है जिसमें आप और हम रह रहे हैं और शास्त्रार्थ कर रहे हैं यह है कि नहीं? मौलाना बोले यह भी है तब शर्माजी ने कहा कि यही तो त्रैतवाद है। आप .खुदा, अपनी हस्ती और दुनियाँ के अस्तित्व को जब मानते हैं तो आपका सिद्धान्त ग़लत साबित हो गया! इसका उत्तर मौलाना से कुछ न बन पड़ा और शास्त्रार्थ में आर्य समाज के सिद्धान्त की पूर्ण विजय हुई। उपस्थित जनता ने बड़े हर्षोल्लास के साथ करतल ध्वनि की और वैदिक धर्म की जय, पं० मुरारिलाल शर्मा की जय के घोष से आकाश को गुंजा दिया।

आभार और श्रद्धाञ्जलि

मैं एक साधारण व्यक्ति आर्य समाज के सिद्धान्तों का भक्त था। देहली में रहते हुए स्वर्गीय पूज्य पण्डित रामचन्द्रजी देहलवी के भाषण फव्वारा चाँदनी चौक देहली आदि स्थानों पर सुना करता था। भाषणों से प्रभावित होकर मैंने महर्षि स्वामी दयानन्दजी सरस्वती लिखित सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों को स्व० श्री पं०रामचन्द्र जी से सदर बाज़ार में उनकी दुकान पर जाकर पढ़ना आरम्भ किया किन्तु मैं संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ था। मेरे मनमें संस्कृत सीखने की इच्छा प्रबल हो उठी। मैंने पं०रामचन्द्रजी से निवेदन किया कि तेली-वाड़ा देहली के उत्सव पर श्री० श्रद्धेय पं० मुरारिलालजी शर्मा पधारे हुए हैं उनसे सिफ़ारिश कर दें कि वे मुझे अपने गुरुकुल सिकन्दरा बाद में रख लें और मुझे संस्कृत अध्ययन कराने की कृपा करें, इन्होंने अपने गुरुकुल सिकन्दराबाद में प्रविष्ट कर लिया।..मेरा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश हो जाने पर मुझे गुरुकुल में अध्ययन करने का सुअवसर प्राप्त हुवा। मैं गुरुकुल में गुरुजनों के चरणों में बैठकर निरन्तर १९०८ ई० से १९१९ ई० पर्यन्त अध्ययन करता रहा तथा निःशुल्क सिक्षा के साथ मेरे भोजन वस्त्र का भी समुचित प्रबन्ध स्वर्गीय, श्रद्धेय, पूज्य शर्माजी ने ही किया। अध्ययनोपरान्त लाहौर आर्य प्रतिनिधि सभा में उपदेशक बनाकर भेजा। मैं पंजाब प्रान्त में वैदिक धर्म का प्रचार करने के पश्चात् उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, हैदराबाद दक्षिण, बम्बई और ब्रह्मा देश (बर्मा) और उसके बाद आजकल, बंगलौर (मैसूर स्टेट) में वैदिक धर्म का प्रचार कार्य कर रहा हूँ। इस प्रकार लगभग ५३ वर्ष बीत चुके हैं, इसका सारा श्रेय स्वर्गीय श्रद्धेय श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा मेरे धर्म पिता को ही है जिनकी कृपा से मैं धर्म प्रचार करने के योग्य बना। मैंने पूज्य शर्माजी का शास्त्रार्थ हाथरस में पौराणिकों से होते हुए देखा और सुना जो मृतक श्राद्ध तथा मूर्तिपूजा पर था, जिसमें शर्माजीने प्रतिपक्षके विद्वानों को अपनी युक्ति और प्रमाणों से पराजित किया था। सिकन्दराबाद यू. पी. में मुसलमानों के मौलवी अब्दुल हक़ को, जिन्होंने हदीसों के हवाले देकर परास्त किया। मैं स्वयं शास्त्रार्त में मौजूद था। शहादरा में भी ईसाइयों के पादरी अहमद मसीह को जिनकी अकाट्य युक्तियों और प्रमाणों ने चुप किया था। स्वर्गीय श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् और शास्त्रार्थ महारथी थे। उनके निधन के पश्चात् उनके स्थान की पूर्ति अभी तक नहीं हो पाई है। मुझे भी उन्होंने अपने युक्ति प्रमाणों का प्रसाद प्रदान किया जिससे मैं भी विधर्मियों से लोहा लेता हूँ। मैं उनका हृदय से आभार स्वीकार करता हूँ। मेरे उद्धार कर्ता, पोषक, शिक्षक, स्वर्गीय श्रद्धेय श्री० पं० मुरारिलालजी शर्मा ही थे।

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री० पं० चन्द्रभानुजी सिद्धान्त भूषण

आर्य पुरोहित आर्य समाज हनुमान् रोड नई देहली का

एक पुराना संस्मरण

सन् १९२३ की ग्रीष्म ऋतु की बात है, मैं तब जैन हाई स्कूल पानीपत में अष्टम श्रेणी का विद्यार्थी था। मेरे साथ गगसीना ग्राम के जाटों के लड़के पढ़ते थे। उन्होंने बतलाया कि वहाँ पर आर्य समाज का ज़ोरदार वार्षिकोत्सव है। मैं भी उसमें सम्मिलित हुआ। वार्षिकोत्सव में जहाँ स्व० स्वा० श्रद्धानन्दजी महाराज पधारे थे, वहाँ मुसलमानों से शास्त्रार्थ करने के लिये स्व० श्री० पं० मुरारिलालजी शर्मा भी पधारे थे। शास्त्रार्थ सुनने का मेरा यह पहला ही अवसर था। जहाँ तक मुझे स्मरण है शास्त्रार्थ "रूह और माद्दे की क़दामत" पर था। शास्त्रार्थ में आस-पास के ग्रामों की जनता बड़ी संख्या में उपस्थित थी और बड़ी तन्मयता से शास्त्रार्थ सुन रही थी। स्वर्गीय श्री पण्डितजी अपनी युक्तियें ऐसी मनोरंजक शैली में दे रहे थे कि मौलवी साहब को उत्तर देना कठिन हो जाता था तथा जनता हँस पड़ती थी। शास्त्रार्थ का जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा तथा लोग वैदिक सिद्धान्तों की श्रेष्ठता के क़ायल हो गये।

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० मङ्गलदेवजी शास्त्री
पूर्व उपकुलपति वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी
के संस्मरण

श्री० पं० मुरारिलालजी शर्मा आर्य समाज के लगभग आदि युग के उन गिने चुने मान्य पुरुषों में से थे जिन्हें उठते बैठते आर्य समाज के सन्देश को घर-घर में पहुँचाने की हार्दिक लगन थी। बाल्यकाल में उनके "भजन पचासा" के सन्देश सब की जिह्वा पर थे। सनातनी पण्डितों तथा अन्य सांप्रदायिकों के साथ भी वे शास्त्रार्थों में अच्छा लोहा लेने वालों में से एक थे। आर्य समाज के प्रसिद्ध व्याख्याता और शास्त्रार्थी विद्वान् स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती के साथ उनका इसी रूप में प्रारम्भिक परिचय हुआ होगा। पीछे से तो वे श्री स्वामी जी के मुख्य सहायकों में से ही एक हो गए थे। श्री स्वामीजी द्वारा संस्थापित आदि गुरुकुल सिकन्दराबाद के चिरकाल तक वे कर्णधार रहे। संस्थापकों में तो उनका मुख्य स्थान था ही। कैसी भी समस्या हो वे घबड़ाते नहीं थे और तत्काल उसका समाधान ढूंढ लेते थे। उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार का जो निष्काम भाव से काम किया था, उसे आर्य समाज कभी भूल नहीं सकता।

नोट:—डा० मङ्गलदेवजी शास्त्री ने भी प्रारम्भ में गुरुकुल सिकन्दराबाद में ही शिक्षा प्राप्त की तथा इसही कोटि के सैकड़ों विद्वान् गुरुकुल से निकले।

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री वेणी प्रसादजी जिज्ञासु कनखल हरिद्वार द्वारा श्रद्धा के सुमन भेंट

प्रथम बार मुझे सन् १६०७-८ में श्रद्धेय, कर्मवीर पण्डित मुरारिलालजी शर्मा के दर्शन करने का सौभाग्य गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के उत्सव के अवसर पर प्राप्त हुवा था। कर्मठ तपस्वी शर्मा जी आर्य समाज के महान् कार्य के लिये अपनी सारी शक्ति लगा कर कार्य कर रहे थे, सिकन्दराबाद गुरुकुल स्थापित कर एक महान् प्रयोग में लगे हुए थे, भारतवर्ष में यही सबसे प्राचीन गुरुकुल था। उनके हृदय में एक लगन थी, तड़प थी। भारत के प्राचीन ऋषि मुनियों की उस पवित्र देन को फिर भारत भूमि में स्थापित करके संसार के लिये सुख सुविधा का मार्ग प्रशस्त करना चाहते थे। महामना शर्माजी ने अपनी समस्त व्यावसायिक सम्पत्ति को तिलाञ्जलि देकर तथा गृहस्थ के समस्त सुखों को ठोकर मारकर एक वीतराग व्यक्ति का सा जीवन व्यतीत करना शुरू कर दिया था। उनके सारे जीवन में व्याख्यान और शास्त्रार्थों की धूम रही तथा गुरुकुल सिकन्दराबाद को पूर्ण सफलता के साथ चलाने की उत्कट इच्छा। उस नरकेसरी ने इतनी बड़ी संस्था को सारे जीवन संरक्षण दिया। वैदिक विचारधारा में रंगे विद्वान् गुरुकुल से निकाल कर देश का कल्याण किया। उनका सारा जीवन ही तप त्याग की पुनीत स्मृति था। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का उत्सव हो रहा था पादरी साहिबान अपने चेलों सहित शास्त्रार्थ के लिये पधारे हुए थे। स्वामी दर्शनानन्दजी महाराज अपनी हँसमुख मुद्रा के साथ उनका स्वागत कर रहे थे। श्रद्धेय पं० मुरारिलालजी शर्मा भी अपने दिव्य नेत्रों से जनता को प्रसन्न करते हुए पादरी साहिबान के प्रश्नों के उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहते थे। शर्माजी अपनी प्रबल युक्तियों और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमाणों के द्वारा पादरी साहिबान को निरुत्तर कर देते थे और वे अन्दर से अपने सिद्धान्तों की कमज़ोरी महसूस करने लगते थे। शर्माजी ने हँसते २ उनको ऐसा परास्त किया कि जनता शंकाओं का सहज समाधान सुन कर प्रसन्न हो गई और आर्य समाज के सिद्धांतों की लोगों में धाक जम गई। शर्माजी जिस उत्सव में सम्मिलित हो जाते थे वहाँ आनन्द का वातावरण पैदा हो जाता और शास्त्रार्थों के अवसरों पर तो लोग निश्चित रूप से यह समझ लेते थे कि विजय श्रीः उन्हीं के गले में जयमाला डालेगी।

शर्माजी धुन के धनी थे। वे जिस कार्य का दृढ़ संकल्प कर लेते थे उसको पूर्ण करके ही छोड़ते थे। उनके दिल में ऋषि दयानन्द के प्रति भक्ति और आर्य समाज के प्रति अत्यन्त प्रेम था। अपना बड़े से बड़ा नुकसान करके भी वे आर्य समाज के हित के लिये चेष्टा करते थे। उनके स्वभाव में विनोद प्रियता थी, जो दूसरों के दिल की गहराई में प्रविष्ट होकर अपना प्रभाव जमा लेती थी। उनकी वाणी में एक अजीब प्रकार का आकर्षण था। वैदिक धर्म का प्रकाश सब को प्राप्त हो जावे और सभी देशवासी सदाचार की मूर्ति हों ऐसी प्रबल कामना उनके हृदय में जागृत रहती थी और इसके लिये ही वे सदा प्रयत्नशील रहते थे! विधर्मियों को भी अपनाकर उन्हें गले लगाने की उनमें चाह थी! उनकी भव्य मूर्ति, सादा लिवास और हाथ में डंडे को देखकर लोग प्रसन्नता के साथ नतमस्तक होकर प्रणाम करते थे। साधारण जन ही नहीं उनके सच्चरित्र से प्रेरित होकर बड़े बड़े विद्वान् भी श्रद्धा तथा प्रेम से उनकी वन्दना करते थे। उनके भाषण विद्वत्तायुक्त, ज्ञान युक्त एवं बड़े प्रभावशाली होते थे। सन १९१६ से १९२६ तक मैं नई सड़क देहली में कपड़े का व्यवसाय करता रहा। शर्माजी आर्य समाजों के उत्सवों तथा अन्य अवसरों पर भी देहली में आते रहते थे। जब मुझे यह सूचना मिलती थी कि शर्माजी का व्याख्यान अमुक स्थान पर है तब मैं निश्चित रूप से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ पहुँचता था क्योंकि बिना उनका व्याख्यान सुने मुझे चैन नहीं पड़ता था और मैं यह अनुभव करता था कि मैंने कुछ खो दिया है। उनके व्याख्यान सुनकर हृदय में अपूर्व शक्ति और चेतना जागृत हो जाती थी। शिक्षा केन्द्र गुरुकुल सिकन्दराबाद और उनके सुयोग्य पुत्रों श्रीमहेन्द्रदेवजी शास्त्री तथा स्व०श्री पं०देवेन्द्रनाथजी शास्त्री एवं धर्मेन्द्रनाथजी आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि से मेरा निकट का प्रेम सम्बन्ध रहा है जो निरन्तर समाज सेवा में तत्पर रहे हैं। आर्य समाज को स्वर्गीय पण्डितजी की अमूल्य देन है। समाज उसको कभी नहीं भूल सकता। ईश्वर करे उनकी जलाई ज्योति सदैव प्रदीप्त रहे और प्रकाश दिखाती रहे, तथा आर्य समाज उससे फलता फूलता नज़र आवे। स्वर्गीय पण्डितजी के विशिष्ट गुणों का स्मरण कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है मैं उन्हीं श्रद्धामयी भावनाओं से उनके पवित्र चरणों में श्रद्धा तथा भक्ति के सुमन भेंट कर रहा हूँ।

—:o:—

पं० भगवान् स्वरूपजी न्यायभूषण

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

स्व० श्री पं०मुरारिलालजी शर्मा के सम्बन्ध में मैं क्या क्या अपने संस्मरण लिखूं यह समझ में नहीं आता। सब लिखूं तो एक पूरी पोथी बन जावे। जब लिखने की चेष्टा करता हूँ तो उनकी विनोद वार्ता, हाज़िर जवाबी और उनका हँसमुख चेहरा मेरे सामने आ जाता है और निश्चय ही नहीं कर पाता कि क्या लिखूं क्या न लिखूं। संक्षेप में आर्य समाज के विरोधियों को समस्त प्रश्नों के मुँहतोड़ और तत्काल उत्तर देना और वह भी ऐसा कि सुनने वाले दंग रह जावें यह उनकी सर्वोपरि विशेषता थी इससे उनके अगाध पांडित्य का पता लगता है इससे ही पाठक उनकी महत्ता का पता लगा सकते हैं।

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुँवर सुखलालजी आर्य मुसाफिर अरनियाँ ज़ि० बुलन्दशहर द्वारा प्राप्त

संस्मरण तथा श्रद्धाञ्जलि

श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा आर्य समाज के यौवन काल में अपने समय के अनुपम और महान् नेता थे। उनके जैसे महान् सिद्धान्त-वादी मिश्नरी, शास्त्रार्थ महारथी, प्रभावशाली और ओजस्वी वक्ता अब कहाँ हैं। वे वास्तव में त्यागी और तपस्वी, सच्चे वैदिक ब्राह्मण थे. मेरे ग्राम अरनियाँ ज़िला बुलन्दशहर में आर्य समाज के उत्सवों पर वे हमेशा आया करते थे। मैं उस समय १२ या १४ वर्ष का था और प्राइमरी स्कूल में पढ़ता था। शर्माजी ने मुझे खड़तालों पर भजन

गाने सुना तो बहुत ख़ुश हुए और मेरे परिवार के लोगों से आग्रह करके अपने साथ ही गुरुकुल सिकन्दराबाद में ले आये। मैं काफ़ी दिनों तक गुरुकुल में रह कर उनकी सेवा करता रहा। वे ही मेरे आदि गुरु थे। आगे चलकर मुझे आर्य समाज और अपने देश की सेवा करते हुए जो सफलता और यश मिला वह उन्हीं के आशीर्वाद का फल था। शर्माजी ने अपना सारा जीवन गुरुकुल सिकन्दराबाद और आर्य समाज की सेवा में ही लगा दिया और स्वयं वे सब प्रकार से फ़क़ीर बन गए। अपने तीनों पुत्रों को संस्कृत का महान् विद्वान् बनाया। उनके सबसे बड़े पुत्र श्री पं० देवेन्द्रनाथजी शास्त्री संस्कृत और अंग्रेजी भाषा के उद्भट विद्वान् थे। जब वे शास्त्रार्थ करते थे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उनका पांडित्य फूट पड़ता था और विरोधी तथा विधर्मियों का मुँह बन्द कर देते थे। शास्त्री जी की मृत्यु भी आर्य समाज नरही लखनऊ के उत्सव पर शंका समाधान करते हुए ही हुई। उनके दोनों भाई भी अपने पिता के पद चिन्हों पर चलते हुए तत्परता से आर्य समाज की तन मन धन से सेवा कर रहे हैं। मैं स्वर्गीय पूज्य शर्माजी के चरणों में विनीत भाव से अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

—:o:—

८५ वर्षीय श्री शिवचरणदासजी ११३ दरियागंज का

एक पुराना संस्मरण

जब मैं मन्त्री आर्य समाज चावड़ी बाज़ार था, तब मैं स्वर्गीय पूजनीय श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा को अपने पैतृक निवास स्थान फ़रीदाबाद तहसील बल्लभगढ़ ज़िला गुड़गाँवा में आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पर मुसलमानों से शास्त्रार्थ के लिये सन् १६२५ की गर्मियों के मई अथवा जून मास में बुलाकर ले गया, वे कुछ अस्वस्थ थे फिर भी वे शास्त्रार्थ करने के लिये फौरन चलने को तैयार हो गए और फ़रीदाबाद आर्य समाज के उत्सव पर जहाँ आस पास के गाँवों के हज़ारों व्यक्ति उपस्थित थे वहाँ आवागमन के विषय पर शास्त्रार्थ किया। लगभग २ घंटे शास्त्रार्थ बाबू श्री कृष्णजी रिटायर्ड ओवरसियर के प्रधानत्व में चलता रहा। मुसलमान मौलवी जो देहली से गए हुए थे उनका कहना था कि क़यामत के समय ही ख़ुदा के सामने सब फ़ैसले होते हैं और उसही समय जीवों को दोज़ख़ व जन्नत में जाना पड़ता है इसलिये आवागमन का मस्ला ही आर्य समाजियों का ग़लत है किन्तु शर्माजी ने उत्तर में कहा कि यदि मुसलमानों का यह अक़ीदा है कि क़यामत के दिन ही सब का फ़ैसला होगा तो मौलवी साहिबान यह बतावें कि इस समय बिना क़यामत के दिन भी जो मुसलमानों के यहाँ बच्चे पैदा होते हैं उनमें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई अन्धा कोई समाखा, कोई गोरा कोई काला कोई .खूबसूरत कोई बदसूरत कोई धनी कोई निर्धन क्यों पैदा होते हैं। जो मौलवी साहिबान स्टेज पर बैठे हैं उनमें ही समानता क्यों नहीं? इससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि जितना भेद संसार में मनुष्य जीवन में प्रतीत होता है वह कर्मों के फलों के कारण ही है और पिछले जन्म में किये, भले बुरे कर्मों को भोगने के लिये ही जीवों को संसार में आना पड़ता है और फिर जीव दुनियाँ में आकर कर्म करता है और अपने कर्मों के फलों को भी भोगता है यही आवागमन का सिद्धान्त है जो बिल्कुल सत्य है। मुसलमानों का सिद्धान्त बिल्कुल ग़लत है इसही प्रकार उत्तर प्रत्युत्तर चलते ही रहे किन्तु मौलवी लोग सन्तोषजनक उत्तर न देते, इस पर ग्रामीणों ने शर्माजी की जय के उद्घोष किये और समस्त जनता में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई और आर्य समाज की विजय हुई। मौलवी साहिबान परास्त होकर वापस देहली चले गए। विजयश्रीः प्राप्त होने के बाद समस्त ग्रामीण लोग प्रसन्न होकर अपने २ गाँवों में शर्माजी को ले जाने की प्रार्थना करने लगे किन्तु शर्माजी ने अन्य किसी समय आने का वचन दिया। इस प्रकार समस्त देहात पर बड़ा अच्छा शास्त्रार्थ का प्रभाव पड़ा। शास्त्रार्थ महारथी स्वर्गीय पंण्डितजी के चरणों में मैं श्रद्धाञ्जलि भेंट करता हूं।

—:o:—

श्री आनन्द प्रकाश जी

प्रधान आर्य समाज सिकन्दराबाद तथा अन्तरंग सदस्य व आय व्यय निरीक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा

संस्मरण तथा श्रद्धाञ्जलि

स्वर्गीय श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा मेरे ही मौहल्ला चौधरी बाड़ा के रहने वाले थे। उन्होंने ही यहाँ के आर्य समाज की नींव डाली थी और ज़िले के हर गाँव व क़स्बे में प्रचार हेतु दौरा किया करते थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके ही प्रचार का प्रभाव था कि उनके समय में आर्य समाज की सदस्यता २४०० के लगभग पहुँच गई थी। आर्य समाज सिकन्दराबाद उनकी ही प्रेरणा से ईसाइयों, जैनियों व मौलवियों से टक्कर लिया करता था। उनका प्रभाव व ख्याति देश के कोने कोने में फैल गई थी। सन् १९६० की बात है कि मेरे पिताजी का देहली करौल बाग़ डाक्टर जोशी के अस्पताल में आपरेशन हुआ था। डाक्टर जोशी की ख्याति होने के कारण बम्बई, मुज़फ़्फ़रनगर व मेरठ इत्यादि बड़े शहरों से भी मरीज़ अपना आपरेशन कराने के लिये देहली आते रहते थे, उस समय, मैं लगभग पिताजी का आपरेशन होने के कारण २ हफ़्ते उस अस्पताल में प्राईवेट वार्ड में रहा। मेरे सामने ही २ मरीज़ बम्बई व खतौली ज़िला मुज़फ़्फ़र नगर से आये और पिताजी के अगल बगल वाले कमरे में ठहरे। वे सुबह शाम हमारे कमरे में आ जाया करते थे और कभी कभी हम भी उनके कमरे में अपना समय व्यतीत करने के लिये पहुँच जाते थे। जब उनको यह मालूम हुआ कि हम उस सिकन्दराबाद के रहने वाले हैं जिसके पं० मुरारिलालजी शर्मा रहने वाले थे तो उनको बहुत ही विस्मय हुआ और कहने लगे कि आप बहुत ही भाग्यशाली हैं जो ऐसे क़स्बे में जन्मे हो जहाँ ऐसी ऊँची और पवित्र आत्मा जन्म ले चुकी है जिसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता। वे अपनी धुन के इतने पक्के थे कि प्रोग्राम पर जाते समय कोई भी रुकावट आने पर घर पर ठहर नहीं सकते थे। उनके ही कारण आर्य समाज सिकन्दराबाद ज़िला बुलन्द शहर का नाम भारत के कोने कोने में प्रसिद्ध हो गया था। पौराणिकों ईसाइयों व मुसलमानों से शास्त्रार्थ होने पर वे प्रमुख भाग लेते थे। उनके व्याख्यान व तर्कों का प्रभाव ऐसा पड़ता था कि जल्दी ही विरोधी परास्त होकर मैदान छोड़ कर भाग जाते थे और आर्य समाज सिकन्दराबाद की विजय दुन्दुभी बज जाती थी। कहाँ तक लिखूँ, पुस्तकें उनके संस्मरण लिखते-लिखते भर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जावेंगी। वे जिस भी परिवार के सम्पर्क में आते थे उस परिवार को कट्टर आर्य विचारधारा का बनाकर ही दम लेते थे। आर्य समाज का प्रचार ही उनका व्यवसाय वन गया था। सोते जागते उठते बैठते हर समय आर्य समाज के प्रचार की ही धुन रहती थी। मरते समय तक भी आर्य समाज का प्रचार ही करते रहे। उनके पवित्र चरणों में हमारी श्रद्धा के सुमन समर्पित हैं।

—:o:—

श्री० रामलाल जी मन्त्री आर्य समाज मुहाना डा० ख़ास ज़िला बुलन्द शहर का

संस्मरण

स्वर्गीय श्री० पं० मुरारिलालजी शर्मा ने आज से लगभग ६८ वर्ष पूर्व जब आर्य समाज का घोर विरोध लोग करते थे और आर्य सामाजिक लोगों को सभी भयानक से भयानक कष्ट दिये जाते थे और सब प्रकार का बहिष्कार कर दिया जाता था, चौबीसे में (यादवों के २४ गाँवों को चौबीसा समझा जाता था) आर्य समाज की स्थापना करके मुझे मुहाने में मन्त्री बनाया, उनसे मुझे ऐसी प्रेरणा और स्फूर्ति मिली कि हमारा सारा ही जीवन बदल गया। शर्माजी के उपदेश और पवित्र कृपा के कारण वैदिक धर्म के प्रति हमारी ऐसी पवित्र भावनाएँ बनीं कि हमारा सारा परिवार दृढ़ विचारों के साथ वैदिक धर्मी बन गया। मुझे तो श्री० शर्माजी ने ऐसा मन्त्री पद दिया कि मैं सारे जीवन में मन्त्री ही पुकारा जाता रहा। हम ४ भाई हैं और एक ताऊ ज़ात भाई थे इस प्रकार हम समस्त अवैदिक परिस्थितियों का मुक़ाबला ५ पाण्डव के रूप में अपने को समझकर करते थे। हमारे सारे परिवार में इस समय ८० के लगभग आदमी हैं किन्तु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी हर प्रकार के व्यसनों से दूर हैं किसी प्रकार का नशा, शराब-ख़ोरी, मांस भक्षण आदि कोई दोष नहीं आया, इसका सारा श्रेय स्व० श्री० पं० मुरारिलालजी शर्मा को है। वे प्रति वर्ष हमारी समाज के उत्सव पर आकर ऐसा ओज और तेजः पूर्ण प्रकाश डाल जाते थे कि उससे हमें धार्मिक प्रेरणाएं मिलती रहती थीं। ऐसे कर्मवीर श्रद्धेय महात्मा के चरणों में हम और हमारा सारा परिवार श्रद्धाञ्जलि अर्पण करता है।

—:o:—

८० वर्षीय श्री० पं० फ़क़ीरचन्द्रजी ईसबपुर
पो० ख़ास ज़ि० बुलन्दशहर के

श्रद्धा व प्रेम भरे संस्मरण

(१) तहसील सिकन्दराबाद में, सिकन्दराबाद क़स्बे से ३ मील की दूरी पर तथा गुरुकुल सिकन्दराबाद से एक मील के फ़ासले पर १ शिवालय तथा १ कुआँ बना हुवा है। स्व० श्री० पं० मुरारिलालजी शर्मा उस प्याऊ पर बैठ जाते थे। वहाँ गाँव के किसान सिकन्दराबाद की मंडी में अन्न बेचकर आते थे और अपने बैलों को पानी पिलाते थे, श्री० शर्माजी उनसे कहते थे ५ मिनट बैठकर शान्ति से हमारी बात भी सुनते जाओ, तब सत्यार्थ प्रकाश के विशेष दो प्रकरण सुना कर उनमें आर्य विचार भर दिया करते थे और उनके दुर्विचारों को कुसंस्कारों को दूर करने का प्रयत्न करते थे, ऐसा कार्य क्रम वर्षों तक चलता रहा। शर्माजी प्रतिदिन गुरुकुल से चल कर यथा समय वहाँ पहुँच जाते थे और इस प्रकार दो-दो तीन-तीन घंटे धर्मोपदेश देकर आर्य बनाते थे।

(२) एक बार गुरुकुल सिकन्दराबाद कार्यकारिणी के कुछ मेम्बर ठाकुर गंगासहायजी महेपा वालों के साथ जाकर ज़िले के कलक्टर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को गुरुकुल में इस विचार से लिवा लाए कि गवर्नमेंट से गुरुकुल को कुछ सहायता प्राप्त हो जावेगी—गुरुकुल में स्वर्गीय श्री० पं० मुरारिलालजी शर्मा भी अन्य कमेटी के मेम्बरों के साथ उपस्थित थे। कलक्टर ने सभी अन्तरंग सदस्यों से हाथ मिलाया किन्तु हाथ मिलाने के बाद शर्माजी ने साबुन से हाथ धोये और फिर पीली मट्टी से हाथ साफ़ किये। कलक्टर ने देखकर पूछा टुम ये क्या करटा है शर्माजी ने उत्तर दिया, आपके शरीर के अशुद्ध परमाणु हमारे शरीर में जाकर कोई विकार न पैदा कर दें इसके लिये मुझे शुद्धि करनी पड़ी है इस पर कलक्टर चिढ़ गया और फौरन गुरुकुल से चला गया। कमेटी के मेम्बर भी शर्माजी पर नाराज़ हुए कि यह आपने क्या किया किन्तु कर्मवीर तपस्वी पं० मुरारिलाल शर्मा ने कहा कि प्रभु के भरोसे पर मैं सैकड़ों गुना द्रव्य गुरुकुल के लिये इकट्ठा करके ला सकता हूँ कलक्टर से आपको क्या मिलता। इस प्रकार की दृढ़ता के साथ काम करने की अद्‌भुत शक्ति और प्रभु पर पूर्ण विश्वास श्री० शर्माजी में मैंने पाया।

गुरुकुल सिकन्दराबाद के १९११ अथवा १९१२ के उत्सव पर स्वर्गीय श्री० पं० मुरारिलालजी शर्मा का संस्कारों की महत्ता और उनके असरात पर व्याख्यान हो रहा था। स्वर्गीय श्री० स्वा० दर्शनानन्दजी भी आये हुए थे। पं० गंगाशरणजी उपदेशक (शर्माजी के शिष्य) और मैं स्वामी जी के चरण दाब रहे थे, पं० मुरारिलालजी शर्मा के व्याख्यान के बीच में ही एक आदमी ने उठकर प्रश्न कर दिया कि संस्कारों का प्रभाव क्या होता है, शर्माजी ने उत्तर दिया कि कुत्तों की गर्भाधान क्रिया भूंसते भूंसते ही होती है अतः उनके पिल्ले भी भूंसते भूंसते ही पैदा होते हैं। स्वामी दर्शनानन्दजी ने इस तर्क को सुनते ही मुझसे कहा कि कितने बारीक विषय को कैसे स्थूल उदाहरण द्वारा लोगों को समझा दिया है मेरे विचार में इनसे अच्छा व्याख्यान दाता भारतवर्ष में नहीं है। श्री० स्वामी दर्शनानंद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी पं० मुरारिलालजी शर्मा की अद्वितीय व्याख्यान शैली से अत्यन्त प्रसन्न होते थे।

स्वर्गीय श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा बड़े विनोदप्रिय थे. मेरठ में आर्य समाज के साथ सनातन धर्मियों का शास्त्रार्थ था। विषय था—आर्य समाज के सिद्धान्त वेद विरुद्ध हैं। आर्य समाज की तर्फ़ से शास्त्रार्थ करने वाले श्री स्वा० अनुभवानन्दजी थे और सनातन धर्मियों की तर्फ़ से श्री पं० अखिलानन्दजी शर्मा (भूतपूर्व आर्य समाजी) तथा श्री पं० कालूरामजी शास्त्री थे। मध्यस्थ गवर्नमेंट के उच्च पदासीन एक अंग्रेज थे। स्वर्गीय पं० मुरारिलालजी शर्मा भी वहीं आसनासीन थे। शास्त्रार्थ के दौरान पं० अखिलानन्दजी ने मज़ाक करते हुए कहा कि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उल्लू और कबूतर पालना लिखा है मैं पूंछता हूँ कि आर्य समाज ने आज तक कितने उल्लू और कबूतर पाले, इस पर शर्माजी ने खड़े होकर कहा कि इस वेद विरुद्ध बात का उत्तर मैं देता हूँ। आर्य समाज ने कुछ समय पूर्व २ उल्लू पाले थे एक पं० भीमसेन शर्मा और दूसरे पंडित अखिलानन्द शर्मा किन्तु वे दोनों उड़ गए, अब कबूतर पाल कर देखेंगे। इस पर समस्त जनता में बड़ा मज़ाक और अट्टहास हुवा और इस शास्त्रार्थ में आर्य समाज की शानदार विजय हुई। शर्माजी प्रत्युत्पन्न मति और बड़े प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। किसी भी शास्त्रार्थ में उनके पहुँचने पर आर्य लोगों के हौसले इतने बढ़ जाते थे कि हारने का प्रश्न ही आर्यों के हृदय में नहीं उठता था। सदैव विजय ही होती थी।

श्रीमद्दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर १ मीटिंग इस विषय पर मथुरामें होने लगी कि बंगालियों के तथा पंजाबियों के देश-विभेद होते हुए भी विवाह संस्कार हो जाने चाहियें, उसमें स्वर्गीय पंडित मुरारिलाल शर्मा भी उपस्थित थे, उन्होंने खड़े होकर कहा कि ऋषि दयानन्द ने गुण, कर्म, स्वभावानुसार ही विवाह लिखा है यदि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाली और पंजाबियों की ये तीनों बातें नहीं मिलतीं तो केवल देश भेद के आधार पर यह उचित नहीं। इस पर कुछ लोगों ने शर्माजी का विरोध कर कहा कि इस मीटिंग में शर्माजी को नहीं रखना चाहिये, इस पर श्री पं० रामचन्द्रजी देहलवी शास्त्रार्थ महारथी ने कहा कि यदि शर्माजी इस मीटिंग में शामिल नहीं किये जावेंगे तो यह मीटिंग ही नहीं होगी, तदनुसार वह मीटिंग अधूरी ही समाप्त हो गई। शर्माजी वैदिक सिद्धान्तों के कट्टर पक्षपाती थे।

एक गाँव "गवा" नाम का अनूप शहर के नज़दीक है वहाँ आर्यों के साथ सनातनियों का शास्त्रार्थ था। उसमें १ व्याकरणाचार्य भी आ उपस्थित हुवे। शर्माजी प्रश्नों का उत्तर दे रहे थे तो आचार्य ने कहा कि आपकी बातों को कैसे मान लें, क्या आप शास्त्री हैं? तो शर्माजी ने उत्तर दिया कि शास्त्री क्या मैं तो अनेकों शास्त्रियों का बाप हूँ बाप (क्योंकि शर्माजी के पुत्र शास्त्री थे) इस पर आचार्य खामोश हो हो गए, किन्तु उन्होंने दूसरा प्रश्न किया कि आप ईश्वर की सिद्धि कीजिये, किन्तु शर्माजी ने कहा किजो स्वयं सिद्ध है, उसकी सिद्धि मुझसे क्या कराते हो, ब्रह्माण्ड के सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, समुद्र, पर्वत सभी तो प्रत्यक्ष में ईश्वर को सिद्ध कर रहे हैं, इनको अन्य कोई बनाने वाला नहीं। शर्माजी अत्यन्त प्रभु भक्त तथा तपस्वी खान-दान के थे।

जहाँगीराबाद में सनातनी पंडितों से पं० मुरारिलालजी शर्मा शास्त्रार्थ कर रहे थे। सनातनी कहते थे, जाबालि ऋषि जन्म से ब्राह्मण थे, किन्तु शर्माजी कहते थे वे कर्म से ब्राह्मण बने, इसही सिल-सिले में साखनी गाँव के झोंके मुसलमान वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने समस्त हिन्दुओं से प्रश्न किया कि हिन्दू जितने अवतार हुए हैं उनकी पूजा करते हैं किन्तु वराह (सूअर) की पूजा नहीं करते यह क्या बात है? शर्माजी बोले इसका उत्तर तो सनातनी ही दे सकते हैं, किन्तु सनातनी घबड़ा कर कहने लगे कि इसका उत्तर आप (शर्माजी) ही दें। तब शर्माजी ने कहा कि जितने अवतारों को हमने पूजा उन सब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को तुमने खाया हमने वराह की जान बचाने के लिये इसकी पूजा नहीं की अन्यथा तुम इसे भी खाने लगते। इस पर मुसलमान थू थू करते भाग गए और फिर जलसे में नहीं आए। शर्माजी की सूझबूझ निराली थी।

गुरुकुल सिकन्दराबाद की कार्यकारिणी की मीटिंग हो रही थी। ठाकुर गंगासहायजी महेपा ग्रामवासी तथा श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा में किसी बात पर संघर्ष हो गया। ठाकुर गंगासहायजी ने अपने लड़केके विवाहके अवसर पर इस अनबनके कारण उन्हें निमन्त्रण नहीं भेजा, शर्माजी कहीं बाहर गए हुए थे, उन्होंने गुरुकुल के अधिकारियों से बाहर से आने के बाद पूछा कि ठा० गंगासहायजी का निमन्त्रण आया कि नहीं ? उत्तर नकारात्मक पाकर शर्माजीने अपने वस्त्र पहिने और डंडा उठाकर महेपा ग्राम को चल दिये, जब घर पहुँचे तो ठाकुर साहिब ने कहा कि तुम्हें किसने बुलाया है, शर्माजी बोले तुम्हें किसने बुलाया है, ठाकुर बोले मेरे बेटे का विवाह है, शर्माजी कहने लगे लड़का तो मेरा है तुम्हारा कहाँ से आया, इस पर ठाकुर साहिब ने रुपयों की थैली शर्माजी के सामने पटक दी, और सारे अधिकार भी शर्माजी को देकर अपने समधी से कहा कि शर्माजी की आज्ञानुसार ही सारे कार्य होंगे, सारा मनोमालिन्य इस प्रकार दूर हो गया। महात्माओं के हृदयों में पवित्रता होती है और हृदय में कभी मालिन्य आ भी जावे तो तुरन्त उसे बाहर निकाल फेंकते हैं। ठाकुर गंगासहायजी महेपा आजीवन शर्माजी के भक्त और सहयोगी बनकर गुरुकुल की सेवा करते रहे।

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री हरिवंश वर्माजी ग्राम मीरपुर (अलीगढ़) के
पुनीत संस्मरण

एक बार श्री० पं० मुरारिलालजी गुरुकुल सिकन्दराबाद से चौधरी तेजसिंहजी आर्य भजनोपदेशक को साथ लेकर प्रचारार्थ पर्वतों की ओर नैनीताल व अलमोड़ा को चले, उस समय मैं भी उनके साथ था, अलमोड़ा में प्रचार हुआ, उस समय सायंकाल के समय अन्त में श्री० शर्माजी का व्याख्यान हुआ, जिसमें उन्होंने बतलाया कि आर्य समाज और दूसरे धर्मावलम्बियों में क्या अन्तर है, उन्होंने कहा कि दूसरे धर्म वाले लोग तो यह कहते हैं कि जानो अथवा न जानो, जिसको धर्म मानने वाले विद्वान् कहें उसे ही सत्य मानो, आर्य समाज यह कहता है कि सुनो, समझो, जानो, तब मानो, उन्होंने कहा सुनिये, हमारे सनातन धर्मी (पौराणिक) भाई यह कहते और मानते हैं कि गंगा नदी शिवजी की जटाओं से निकली है, परन्तु जब सनातन धर्म के धुरन्धर पंडितजी का लड़का किसी नागरी पाठशाला में पढ़कर परीक्षा देता है और परीक्षा में प्रश्न आता है कि गंगा नदी कहाँ से निकली तो लड़का उत्तर में यह लिखकर आता है कि गंगा नदी गंगोत्री पर्वत से निकली है, वहाँ गंगा नदी को शिवजी की जटाओं से निकली लिखकर नहीं आता है, यदि वहाँ गंगा नदी को शिवजी की जटाओं से निकली लिख आवे तो लड़का परीक्षा में अनुत्तीर्ण तो होगा ही, ऐसा न हो कि कहीं बरेली अथवा आगरा भेज दिया जावे कि इसके दिमाग़ (मस्तिष्क) में ख़राबी है।

ईसाई भाई कहते मानते हैं कि क़यामत के वक़्त .ख़ुदा की रूह पानी पर तैरती थी, ईसाई भाइयों ने रूह की माहियत को ही नहीं जाना कि रूह क्या चीज़ है। हमारे मुसलमान भाई .क़ुरान शरीफ़ को इलहामी क़िताब मानते हैं, यहाँ पर कितने ही हमारे मुसलमान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रेज्यूएट बैठे हुए उपस्थित हैं, वे जानते हैं कि आसमान क्या चीज़ है और उसकी खाल उतारी जा सकती है अथवा नहीं, .क़ुरान शरीफ़ में लिखा हुआ है कि आसमान की खाल उतारी जावे। जब शर्माजी का व्याख्यान समाप्त हो गया तो दो ग्रेज्यूएट नौजवान मुसलमान भाई उठे और उन्होंने कहा कि पंडितजी आपने जो अपने लैक्चर में यह कहा है कि .क़ुरान शरीफ़ में लिखा है कि आसमान की खाल उतारी जावे, क्या आप इसे .क़ुरान शरीफ़ में लिखा हुआ दिखा सकेंगे, श्री शर्मांजी ने उत्तर दिया कि मैंने अपने वक्तव्य में जिस किसी भी पुस्तक का हवाला दिया है उसका मैं एक एक शब्द और एक २ अक्षर लिखा हुआ दिखला सकता हूँ, उपरोक्त मुसलमान भाइयों ने कहा कि आप .क़ुरान शरीफ़ में आसमान की खाल उतारी जावे, लिखी हुई दिखलाइये, शर्मांजी ने कहा, मेरे पास इस समय .क़ुरान शरीफ़ नहीं है, आप .क़ुरान शरीफ़ ले आइये और लाने से पहिले मेरी एक बात सुन जाइये, शर्मांजी ने कहा कि किसी २ तर्जुमाकार ने खाल के बजाय छिलका शब्द लिख दिया है. मुसलमान भाइयों ने कहा कि यदि हमारी लाई हुई .क़ुरान शरीफ़ में छिलका शब्द मिलेगा तो भी हम लोग आपकी बात को स्वीकार कर लेंगे अतः वह उपरोक्त दोनों मुसलमान भाई अपने घर गये और .क़ुरान शरीफ़ लाये और उसमें साफ़ लिखा हुआ खाल शब्द ही मिला, आसमान की खाल उतारी जावे। मंज़िल, सिपारा ३० सू० ८१ आयत ११। इस पर मुसलमान लज्जित होकर ख़ामोश होकर चले गये।

२—जिस समय मूलचन्द्र शास्त्री को वैसुम्मा निवासी श्री चौधरी शीशरामजी ने गोद लिया था, उस समय उस उत्सव में श्रीमान् पं० मुरारिलालजी संचालक गुरुकुल सिकन्दराबाद, श्री चौधरी तेजसिंह जी आर्य भजनोपदेशक पारसौल निवासी निमन्त्रण देकर बुलाये गये थे, उपरोक्त दोनों महानुभाव वहाँ गये थे, मैं भी उनके साथ गया था क्योंकि श्री चौधरी तेजसिंह जी मेरे चचा थे, वहाँ पर बड़े ज़ोर का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्सव मनाया गया और प्रचार के वक्तव्य और भजनोपदेश का जनता पर अच्छा प्रभाव हुआ, उस समय श्री शर्माजी ने एक कविता वहाँ पर बनाई थी और श्री चौधरी तेजसिंहजी को सुनाई थी, उसकी कुछ थोड़ी सी पंक्तियां मुझे अब तक स्मरण हैं, जो निम्नलिखित हैं।

गुरुकुल में फ़ीस लेकर, क्या फ़ैज़ पाओगे तुम।
गौतम, कणाद, इस विधि, कैसे बनाओगे तुम॥
जिसमें होफ़ीस ज़ारी, गुरुकुल हो नाम उसका।
प्रमाण कोई ऐसा, लाकर दिखाओगे तुम॥

शर्माजी की सूझबूझ निराली थी और वे एक अच्छे कवि भी थे।

उनकी धर्मनिष्ठा, कर्तव्य परायणता, सच्चरित्रता तथा तप और त्याग को देखकर हृदय तथा मस्तक स्वयं ही उनके चरणों में झुक जाते हैं।

—:०:—

श्री यादरामजी जाटव चौधरीबाड़ा सिकन्दराबाद के
कृतज्ञता के उद्गार

मैं जाटव जाति से हूँ और सिकन्दराबाद के चौधरी वाड़ा मुहल्ले का रहने वाला हूँ। हम लोगों में जागृति पैदा करना कर्मवीर श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा का ही काम था। हम लोग अज्ञान में फँसे हुए थे और बहुत सी कुरीतियाँ हमारे अन्दर थीं। स्वर्गीय पण्डितजी ने हमारे मुहल्लों में जा जाकर जलसे किये और उन बुराइयों से दूर रहने की और उन्हें छोड़ने की प्रतिज्ञाएँ कराईं, और आर्य समाज के सदस्य बनाये। इस कार्य में उन पर कष्ट भी बहुत से आए मगर उन्होंने उनकी कोई परवाह नहीं की और बराबर अपने कार्य में लगे रहे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस समय उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री० पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्रीजी की सगाई अजमेर से आई थी तो उन्होंने हमारी जाति के पाँच आदमियों की भी दावत की थी, इस पर उनकी बिरादरी वालों ने उनका बहिष्कार कर दिया था और यह कह दिया था कि ये तो जाटव हो गये हैं, मगर इससे वे ज़रा चिन्तित नहीं हुए और अपने कार्य में लगे रहे, शहर में ही नहीं उन्होंने देहातों में भी बड़ा काम किया। उस समय अंग्रेजी शासन था और हम लोगों की देहातों में बहुत गिरी हुई हालत थी। गाँवों में ज़मींदार लोग बेगार लेते थे। ज़मींदारों से तंग आकर हमारे लोग ईसाई हो जाते थे। करुणा हृदय शर्माजी बिरादरी के नाते हमको ईसाई हुवे बिरादरी के भाइयों में ले जाकर वहाँ जलसे करते थे और उनको शुद्ध करते थे। हमारी तहसील में रामपुर एक गाँव है, वहाँ पर भी कुछ लोग ईसाई हो गए थे, तो उसमें श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी को भी बुलाया गया था और श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा ने उन्हें शुद्ध किया था। वैसे तो उनके इतने शुभ कार्य हैं कि उन्हें कहाँ तक गिनाया जावे। उनका जीवन ही जाति तथा देश के हित में लगा हुआ था। वे हर इतवार को गुरुकुल से आते थे और शहर में यज्ञ कराते थे। उस समय समाज का साप्ताहिक सत्सङ्ग किराये के मकान में हुआ करता था। उनके कार्य कलाप तथा प्रभाव से हजारों की सदस्य संख्या हो गई थी, जो भारत में किसी भी समाज की नहीं थी। आज जिस विशाल भूमि पर आर्य समाज का सुन्दर भवन वना नज़र आ रहा है, यह उस महात्मा के ही प्रताप का फल है और मेरे घर में जो कुछ भी सुधार हुआ है वह उन्हीं की कृपा है। उस समय मेरी उम्र २० वर्ष की थी और इस समय ८५ वर्ष की है। इस समय मेरे घर में शिक्षा का ऐसा प्रकाश है कि मेरा एक लड़का सब डिप्टी इन्स्पेक्टर आफ़ स्कूल्स है और एक पोता नहर में ओवरसियर है और छोटे बच्चे सब शिक्षा ही प्राप्त कर रहे हैं और मेरे घर में तब से आज तक आर्य समाज के नियमानुसार ही कार्य होते हैं यह सब कुछ परमादरणीय श्री शर्माजी के उपदेश और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशीर्वादों का ही फल है। हम और हमारा सारा परिवार ही उस महामानव के चरणों में शीस झुकाता हुआ उनके प्रति अत्यन्त शिष्टता, विनम्रता और कृतज्ञता के साथ अपनों को उनका ऋणी मानता है और स्वर्गीय के चरणों में अपनी हार्दिक श्रद्धा की अञ्जलियाँ उपस्थित करता है।

—:o:—

श्री नारायण सिंहजी जाटव

मुहल्ला खत्रीवाड़ा सिकन्दराबाद ज़िला बुलन्दशहर का

आभार और कृतज्ञता प्रकाश

मेरे दादा चौधरी बासीरामजी सिकन्दराबाद के मुहल्ला खत्री-बाड़े के निवासी थे, जो आस-पास के ५२ गाँवों के चौधरी माने जाते थे। सन् १९१४ की बात है कि चौधरी बासीरामजी श्रद्धेय पण्डित मुरारिलालजी शर्मा के उपदेशों से अत्यन्त प्रभावित हुए और पण्डित जी को अपने मुहल्ले खत्रीबाड़ें में यज्ञ कराने को आमन्त्रित किया। आदरणीय शर्माजी ने मुहल्ले की पंचायती चौपाल पर यज्ञ किया। यज्ञ के सामने बैठाकर मेरे दादाजी से यह प्रतिज्ञा कराई कि आज से मैं मदिरा तथा मांस का सेवन नहीं करूँगा और महर्षि दयानन्द के बताए वैदिक मार्ग पर चलूंगा। उस समय गाँवों में हमारे जाटव भाई हिन्दु लोगों के .ज़ुल्म से ईसाई बन जाते थे किन्तु हमारे दादा जी पण्डितजी की आज्ञा से ही गाँवों में पंचायत करके अपने जाटव भाइयों को शुद्ध करके फिर अपने भाइयों में मिला लेते थे। यह सब कुछ पण्डितजी की ही कृपा से होता था। पं० मुरारिलालजी शर्मा की ही कृपा से आज हम अपने दादा बासीरामजी के पोते और परपोते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन महर्षि दयानन्दजी को ही अपना गुरु मानते और आर्य समाज के नियमों तथा आदर्शों पर चलने की कोशिश करते हैं। जिस मुहल्ले खत्री बाड़े में पं० मुरारिलालजी शर्मा ने सन् १९१४ ई० में यज्ञ किया था उसी मुहल्ले खत्री बाड़े में हर बुधवार को यज्ञ होता है और सत्संग लगता है। यह सब पं० मुरारिलालजी शर्मा की ही कृपा का फल है और उन्हीं की कृपा से मुहल्ले में अब तक आर्य समाज का प्रभाव है। मेरा सारा परिवार ही आर्य विचार का है। मेरा सारा परिवार ही नहीं अब तो इस मुहल्ले में और बहुत से परिवार भी वैदिक विचारधारा के हैं। यदि ये पवित्र विचार हमारे दादा जी को शर्माजी से न मिले होते तो नमालूम हम किन विचारों के होते। मैं आज कल आर्य समाज सिकन्दराबाद का उप प्रधान हूँ। पहिले प्रधान और मन्त्री भी रह चुका हूँ। ज़िला आर्य उपसभा का निरीक्षक हूँ। सूबे आर्य समाज का प्रतिनिधि हूँ। सिकन्दराबाद नगर पालिका का सदस्य हूँ। जूनियर चेयरमैन भी रह चुका हूँ। यह सब देन पं० मुरारिलालजी शर्मा की कृपा और आशीर्वाद की तथा आर्य समाज की है। मैं श्रद्धेय, परमादरणीय पण्डितजी का आभारी और ऋणी होता हुवा उनके चरणों में अपना शीश झुकाता हूँ।

—:o:—

श्री सुखराम जी

ग्राम कैथाला पोस्ट गुलावठी ज़िला बुलन्दशहर की

पुरानी पावन स्मृतियाँ

१—लगभग ५० ५२ वर्ष पूर्व की घटना है। कैथाला ग्राम में आर्य समाज का वार्षिकोत्सव था। उत्सव में श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा व्याख्यान दे रहे थे। एक अलीजान नामक बढ़ई उसही गाँव का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहने लगा कि शर्माजी जब आदमी मर जाता है तो आदमी क्यों रोते हैं ? शर्माजी ने उत्तर दिया कि अगर तुम्हारे घर का कोई मर जावे तो तुम रोओगे या नहीं ? अलीजान ने कहा रोते तो मुसलमान भी हैं किन्तु हिन्दु अधिक रोते हैं। शर्माजी बोले तुम्हारे हसन हुसैन कब मरे थे तो अलीजान ने कहा कि उनको मरे तो काफ़ी अर्सा हो गया। शर्माजी ने कहा किन्तु हाय हुसैन हाय हुसैन बोलकर तुम तो प्रति वर्ष ही रोते हो, हिन्दु तो मरने पर एक बार रोकर ही रह जाता है इस पर अलीजान लज्जित होकर चुप हो गया।

२—ग्राम कैथाला के उसी उत्सव में चौधरी दुर्जनसिंह ने गुरुकुल सिकन्दराबाद को १) दान में दिया। इस पर शर्माजी बोले इनका नाम सज्जनसिंह होना चाहिये क्योंकि इनके शुभ काम हैं। शर्माजी ने उनका नाम सज्जनसिंह ही रख दिया फिर उनका यही नाम प्रयुक्त होता रहा।

३—आर्य समाज मवाना ज़िला मेरठ का उत्सव था तो शर्माजी तांगे से सफ़र कर रहे थे तो एक मुसलमान सज्जन तांगे में बैठे हुए ही शर्माजी से प्रश्न करने लगे कि शर्माजी ? आज कल रामलीलाएँ सब जगह हो रही हैं, उनमें प्रतिवर्ष रावण मर जाता है और उसको फूँक दिया जाता है फिर भी हर वर्ष ज़िन्दा हो जाता है यह क्या बात है ? शर्माजी ने कहा तुम्हारे हसन हुसैन भी तो कभी के मर चुके और उनका तीजा, दसवां और चालीसवां भी आप लोग कर लेते हैं। हमारे यहाँ तो पुनर्जन्म का सिद्धान्त है इसलिये रावण का पुनर्जन्म होना सम्भव है किन्तु तुम्हारे यहाँ तो पुनर्जन्म का सिद्धान्त ही नहीं माना जाता फिर हर साल की पैदाइश कैसी ? मियाँ जी सुनते ही चुप हो गए।

४—शर्माजी आर्य समाज मुरादाबाद के उत्सव पर रेल से जा रहे थे कुछ लोग गंगा में पैसे फेंकने लगे। कुछ मुसलमान कहने लगे कि हिन्दू लोग बड़े मूर्ख होते हैं जो व्यर्थ में पानी में पैसे फेंकते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्मांजी ने उत्तर दिया कि यह तो हिंदुओं की ईमानदारी का प्रतीक है। किसी समय यहाँ पुल पर टैक्स लगा करता था, उसी प्रथा के अनुसार पैसे फेंक देते हैं। इससे हिन्दुओं की ईमानदारी का सबूत मिलता है।

५—एक वार शर्मांजी आर्य समाज मथुरा के उत्सव पर जा रहे थे तो शहर में एक पंडा शर्मांजी के पीछे पड़कर कहने लगा आप मेरे यजमान हैं दक्षिणा दीजिये, तो शर्मांजी ने दक्षिणा देने से इन्कार किया, किन्तु पंडा फिर भी पीछे पड़ता ही रहा, तो शर्मांजी बोले अच्छा अब मैं तुम्हारे हटने का मन्त्र पढ़े देता हूँ, देखो मैं आर्य समाजी हूँ। इस पर पंडा झट से पीछा छोड़ कर चलता बना।

—:o:—

श्री फूलसिंहजी आर्य फरकना के

संस्मरण

शास्त्रार्थ ग्राम फरकना सन् १९२१ ई०

विषय—क्या ईसा मसीह ख़ुदा के बेटे थे ?

पक्ष :—

आर्य—ईसा मसीह ख़ुदा के बेटे नहीं थे।

ईसाई—ईसा मसीह ख़ुदा के बेटे थे।

आर्य—पं० मुरारिलालजी शर्मा व पं० रामचन्द्रजी देहलवी।

ईसाई—लाट पादरी श्री ज्वालासिंह व लाट पादरी श्री बनर्जी।

आर्य—क्या ईसा मसीह ईश्वर के ऐसे बेटे थे जैसे कि हम तुम सब ईश्वर के बेटे हैं ?

ईसाई—नहीं ऐसे बेटे नहीं।

आर्य—क्या ईसा मसीह ईश्वर के गोद लिये बेटे थे ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईसाई—नहीं गोद लिये बेटे नहीं थे।

आर्य—क्या ईसा मसीह इस प्रकार के बेटे थे कि जैसे हम अपने माँ बापों के बेटे हैं ?

ईसाई—हाँ ईसामसीह इसी प्रकार के खु दा के बेटे थे।

आर्य—पं० मुरारीलाल जी शर्मा—यदि इस प्रकार के बेटे थे, तो थे पीढ़ियाँ नसल ब नसल चलती हैं। फिर बताइये कि ईसामसीह के दादा और पर दादा कौन थे ?

ईसाई—चुप हो जाते हैं। कोई जवाब नहीं देते। अर्थात् हार जाते हैं।

प्रभाव

फकाने में जितने चमार ईसाई हो गये थे। वे सब वैदिक धर्म में आ गये। गंगा, गायत्री, गीता, गौ, वेद, को मानने लगे। उपस्थित जनता लगभग चार हज़ार की थी। इस शास्त्रार्थ में जिन गाँवों के आदमी उपस्थित थे, वे ग्राम निम्नलिखित हैं—गुलावठी, मटौना, कुरली, नौरंगाबाद, कोटा सनौटा, ईसापुर, उलेठा, कैथाला, बराल, पीतोबास, मनोबास, नगला सिरोधन, इस्माईलपुर, रिठौली, दादूपुर, ग़ाज़ी बैनीपुर, मराना, मडांवरा मटपुर, आदि। श्री शर्मा जी के प्रभाव से और विद्वत्ता से ही पूर्ण विजय प्राप्त हुई।

—:०:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० रामजीलालजी आत्रेय आर्य महोपदेशक
गुरुकुल- सिकन्दराबाद ज़िला बुलन्दशहर के द्वारा
उपलब्ध आशीर्वाद की स्मृतियाँ

मैं सन् १९०५ ई० में श्री १०८ स्वामी दर्शनानन्दजी महाराज के चरणों में उपदेशक बनने की योग्यता प्राप्त करने की इच्छा से उपस्थित हुवा। उस समय स्वामीजी गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर खोलने का प्रयत्न कर रहे थे। उन्होंने सर्वप्रथम स्व० श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा का शुभ नाम मुझे बताया और कहा कि वे आज कल गुरुकुल सिकन्दराबाद के सर्वेसर्वा हैं और उन जैसा लगन वाला, प्रभावशाली वक्ता, अन्य आर्योपदेशक भारत भर में नहीं है। तुम्हें उनके दर्शन करावेंगे।

सन् १९०६ ई०में अपने साथ ले जाकर गुरुकुल सिकन्दराबाद में मुझे उनके दर्शन कराये और उनसे कहा कि शर्माजी! हमारे इस विद्यार्थी को उपदेश कीजिये और शुभ आशीर्वाद भी दीजिये कि यह आर्य समाज का अच्छा उपदेशक बने। शर्माजी ने मुझे यह उपदेश दिया कि जीवन भर सत्य विचार अपने अन्दर कट्टरता के साथ धारण किये रहना। ऐसा न हो कि गंगा गये गंगादास और यमुना गये तो यमुनादास अर्थात् आर्य समाज में गये आर्य पण्डित और पौराणिकों में गये तो पौराणिक पण्डित बन जाओ, फिर सिर पर हाथ रख कर कहा कि भगवान् तुम्हें ऋषि दयानन्द का सच्चा भक्त और आर्य समाज का अच्छा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपदेशक बनावें। सन् १९०८ ई० में मुज़फ्फर नगर में पौराणिकों से शास्त्रार्थ हुआ। वे कहते थे कि स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है। श्री स्वामी दर्शनानन्दजी उत्तर दाता थे और श्री पूज्य पण्डित मुरारिलालजी शर्मा सभापति थे शर्माजी के सभापतित्व में आर्य समाज की सोलह आने जीत हुई।

सन् १९०९ ई० में आर्य समाज नजीबाबाद ज़िला बिजनौर में मुसलमानों से शास्त्रार्थ श्री० स्वा० दर्शनानन्दजी से हुआ कि—"ईश्वरीय ज्ञान वेद है या क़ुरान? यहाँ भी श्री० शर्माजी सभापति थे। आर्य समाज की विजय हुई कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। पब्लिक ने वेद भगवान् की जय के नारे लगाये।

सन् १९१० ई० में ही आर्य समाज चुड़ियाला ज़िला सहारनपुर के वार्षिकोत्सव पर शर्माजी के मुझे दर्शन हुए। कुशल क्षेम पूछने के बाद यह देखकर कि अब मैं अच्छा आर्योपदेशक हो गया हूँ प्रसन्न होकर प्रेमोपहार में अपनी बनाई पुस्तक भजन पचासा मुझे प्रदान की। वहाँ शर्माजी के ४ व्याख्यान बड़े प्रभावशाली हुए। पब्लिक हज़ारों की संख्या में आती थी तथा अन्य किसी के व्याख्यानसु नना पसन्द ही नहीं करती थी। बार २ यही कहा जाता था कि शर्माजी का व्याख्यान कराओ। जनता उनके व्याख्यान हँसते हँसते बहुत प्रेम से सुनती रहती थी।

सन् १९१४ ई० में ग्राम शेखुपुरी ज़िला सहारनपुर में पौराणिकों से मूर्ति पूजा विषय पर शास्त्रार्थ में पं० शिवशर्माजी उत्तरदाता थे और सभापति शर्माजी ही थे। पं० छज्जूरामजी एक पौराणिक विद्वान् शर्माजी को तौहीन की दृष्टि से बार २ मुन्शीजी कहकर पुकारते थे। मुझे याद है कि शर्माजी ने यह शेर फ़ारसी का पढ़कर उत्तर दिया कि—

इन्शाय आफ़री नशअज़
क़लम .क़ुदरत ओ अस्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मुन्शी तो वह चित्रगुप्त है जो पौराणिकों के स्वर्ग नरक का लेखा लिखता है। मैं भी अब यह लिख रहा हूँ कि—श्रीमद् भागवत के लेखानुसार जो मूर्ति पूजा करता है वह पशु योनि में जाता है अतः पं० छज्जूरामजी अगले जन्म में क्या बनना चाहेंगे यह सोच लें। पब्लिक हँसते हँसते लोट पोट हो गई।

सन् १९१५ ई० में आर्य समाज दावकी ज़िला सहारनपुर के वार्षिकोत्सव पर शर्माजी के तीन व्याख्यान हिन्दु जाति के सुधार विषय पर बड़े प्रभावशाली हुए।

सन् १९१६ ई० में आर्य समाज खेड़ी ज़िला सहारनपुर के वार्षिकोत्सव पर शर्माजी पधारे साथ ही उनके ज्येष्ठ पुत्र महान् विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी स्व० पं० देवेन्द्रनाथजी शास्त्री भी पधारे। व्याख्यान और शंका समाधान की धूम मची रही।

सन् १९२० ई० में आर्य समाज बहादराबाद के वार्षिकोत्सव पर "ख़ुदा पाप क्षमा करता है" इस विषय पर मुसलमानों से शास्त्रार्थ हुवा। शर्माजी ने मौलवियों के छक्के छुड़ा दिये।

सन् १९२१ ई० में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के वार्षिकोत्सव पर शर्माजी ने "नये ज़माने का नया रंग" विषय पर महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया और मुझे उपहार में अपनी बनाई पुस्तक "रूह की माहियत में उल्माए इस्लाम की गड़बड़ भेंट की।"

सन् १९२२ में आर्य समाज बहादराबाद के वार्षिकोत्सव पर पादरियों और मौलवियों से शास्त्रार्थ पं० शिवशर्माजी से हुवा। इस शास्त्रार्थ में भी शर्माजी ही समापति थे। जब मुसलमान बुरी तरह हारे तो पादरियों से शास्त्रार्थ के समय मौलवी लोग बीच बीच में उनकी तरफ़दारी पर बोलते थे तो शर्माजी ने उन्हें डपट कर कहा कि अपनी बारी में तुम्हारे में दम नहीं रहा। अब क्या ईसाइयों से तुमने रिश्वत खाली जो बोलते हो। इस पर मुसलमान चिल्ला उठे कि हमारे मौलाना को रिश्वती क्यों कहा? इस पर थानेदार ने कहा कि शर्माजी ने ठीक कहा। तुम्हारी ही ख़ता है। आर्य समाज की पूर्ण विजय हुई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १६२७ ई० में ज्ञात हुआ कि शर्माजी का निर्वाण हो गया ज़िले सहारनपुर की समस्त समाजों और आर्य संस्थाओं में शोक समाएँ हुई। मैं उस समय ज़िले का प्रधान था। शर्माजी का सारा ही जीवन गौरव गाथाओं से भरा हुवा है और अनुकरणीय है। ऐसे महापुरुष के लिये मेरी बार २ श्रद्धाञ्जलि है।

—:०:—

महाशय बाबूराम जी गुप्त मन्त्री आर्य समाज आश्रम हरिनगर मथुरा मार्ग देहली की

स्मृतियाँ

स्वर्गीय पं० मुरारिलाल जी शर्मा आर्य महोपदेशक, शास्त्रार्थ महारथी, मन्त्री गुरुकुल सिकन्दराबाद, आर्य सिद्धान्त शिरोमणि प्रसिद्ध तार्किक समस्त आर्य जगत् में प्रसिद्ध थे। उनकी सेवाएँ पास पास ही नहीं दूर दूर तक फैली हुई थीं। समस्त आर्य जगत् से वे छिपी नहीं हैं। उनके गुणों का कीर्तन एक प्रकार से सूर्य को दीपक दिखाने के समान है, वे गुणों के भण्डार थे और बड़े ही विनोदप्रिय थे।

एक बार आप व्याख्यान दे रहे थे तो किसी ईसाई ने कहा कि हिन्दु गौ को माता मानते हैं किन्तु वो भिष्टा खाती हैं तो शर्मा जी ने उत्तर दिया कि "ईसाई हो गई होंगी।" मुसलमानों के रोज़ों के सम्बन्ध में आपने कहा कि जहाँ छः मास दिन रहता है और छः मास रात्रि रहती है वहाँ मियाँ भाइयों पर क्या गुज़रती होगी और वे कैसे ज़िन्दा रहते होंगे।

एक बार सिकन्दराबाद में व्याख्यान देते हुए किसी जुलाहे ने आपसे पूछा कि शर्मा जी ज़मीन में कितना वज़न है।? आपने तुरन्त उत्तर दिया कि पहले ज़मीन से हटो तब वज़न बताया जावेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बार किसी मुसलमान भाई ने पूछ दिया कि आर्य लोग जो जनेऊ पहिनते हैं इसका क्या फ़ायदा है ? आपने विनोद करते हुए फ़र्माया कि इसके बड़े भारी लाभ हैं जिन्हें बुद्धिमान् ही समझ सकते हैं, किन्तु विनोद रूप में मोटी समझ वालों के लिये एक लाभ तो यह है कि कुए से पानी खींचते समय रस्सी कम हो जावे तो इसे जोड़ कर पानी प्राप्त किया जा सकता है, जिससे आदमी के प्राण बच जाते हैं। दूसरे यदि कभी किसी से झगड़ा हो जावे तो इसमें ईंट अथवा पत्थर के टुकड़े बाँधकर दूसरे पर प्रहार भी किया जा सकता है। मियाँ भाई चुप खड़े रह गए।

एक समय व्याख्यान देते समय शर्मा जी मुसलमानों द्वारा गोहत्या का विरोध कर रहे थे। एक मौलाना ने बीच में ही कहा कि गोहत्या हम इसलिये करते हैं कि वह हमारी मिल्कियत है। जैसे अपनी ज़मीन पर चाहे हम कहीं ग़ुसलख़ाना बनावें कहीं पाख़ाना। आपने उत्तर दिया कि ज़मीन जड़ है और गौ जानदार है उसका बेजा इस्तेमाल आप नहीं कर सकते। आपका अपना जिस्म भी तो आपकी मिल्कियत है किन्तु इसका भी आप बेजा इस्तेमाल नहीं कर सकते कीजिये ख़ुदकशी अभी जेलखाने की हवा खानी पड़ेगी। आपकी बीवी और बच्चे भी तो आपकी मिल्कियत हैं ज़रा कीजिये उनसे बेइन्साफ़ी। मियाँ जी खामोश हो गए।

एक बार गुरुकुल सिकन्दराबाद के उत्सव पर चौ० तेजसिंह जी अपने भजनों में मुसलमानों की पाँच समय की नमाज़ के सिलसिले में बोल रहे थे। वहाँ बैठे हुए एक रेलवे के कर्मचारी मुसलमान कहने लगे शर्माजी ! हमारे मज़हब की तौहीन आप क्यों करा रहे हैं। शर्मा जी ने एक ब्रह्मचारी से कहा कि लाओ हदीस और सही मुस्लिम तो आपको सचाई का पता लगे। यह सुनते ही मौलाना वहाँ से खिसक गए।

एक बार मैं जलसे में बैठा था तो मेरे गाँव के एक मौलाना सद्दीक मुहम्मद एक दूसरे मौलाना के साथ जलसे में आए। मैंने उनसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा कि आइये आपको शर्मा जी से मिलायें, कुछ मज़हबी सवाल जवाब कर लीजिएगा। मैंने शर्माजी को आवाज़ से कहा कि शर्मा जी! हमारे यहाँ के मौलाना सद्दीक़ मुहम्मद अपने साथी के साथ आपसे कुछ सवाल जवाब करना चाहते हैं। शर्मा जी ने कहा आइये इतना सुनते ही वे खिसक गए। वास्तव में शर्मा जी से सवाल जवाब करते हुए मुसलमान मौलवी बहुत घवड़ाते थे क्योंकि शर्मा जी उनकी ऐसी पकड़ करते थे कि वे परेशानी में पड़ जाते थे और उनसे कोई जवाब नहीं बन पड़ता था। वास्तव में शर्मा जी बड़े साहसी, निडर और हाज़िर जवाब थे। मुझे यह लिखते हुए कोई संकोच नहीं कि जो कुछ सेवाएँ आजन्म आर्य जाति की उन्होंने की हैं उनके लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं जो अंकित करूँ। शर्मा जी ही नहीं उनका कुल परिवार ही आर्य जाति की सेवा में रत रहा है। पं० देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री तथा पं० महेन्द्रदेव जी शास्त्री वानप्रस्थाश्रमस्थ की जो सेवाएँ हैं उनके हम देशवासी आभारी हैं। सन् १६३६ में पं० देवेन्द्र नाथ जी शास्त्री की स्पेशल ट्रेन हैदराबाद आन्दोलन के समय गई थी जिसमें मैं भी स्वयं सेवकों का जत्था लेकर गया था। मैं तो इस सारे परिवार को ही श्रद्धापूर्वक धन्य कहता हूँ, और शर्माजी जैसे निःस्वार्थ, निर्भय, धर्म धुरन्धर विद्वान् की मैं चरण वन्दना करता हूँ।

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज के प्रसिद्ध वक्ता, शास्त्रार्थ महारथी
श्री अमर स्वामी जी परिव्राजक के कुछ उद्गार

श्री शर्मा जी यद्यपि भारत के बड़े-बड़े नगरों के उत्सवों पर भी बुलाये जाते थे, तथापि ग्रामों में प्रचार करने की उनकी सदा रुचि रहती थी। ज़िला बुलन्द शहर के ग्रामों में श्री शर्मा जी ने बड़ा प्रचार किया था, ग्रामों में उनके सैकड़ों मित्र और सहस्रों भक्त थे।

(१) ज़िला बुलन्दशहर के ग्रामों में—चांदोख के ठाकुर गिरवर सिंह जी (ठा० उदयवीर सिंह जी बैरिस्टर के पिता) ठा० महावीर सिंहजी (इन दोनों सज्जनोंने ऋषि दयानन्द जी से उपदेश ग्रहण किया था) संस्कृत के विद्वान् ठा० रामदयाल सिंह जी, ग्राम धरपा, चाकले के ठा० यशवन्त सिंह जी सावितगढ़ के (अरबी फ़ारसी के विद्वान्) ठा० गिरवरसिंहजी और ठा० हरवख्शसिंहजी, अरनियाँ के ठा० मुन्शी सांवल सिंह जी, रुकुनपुर के रईस, नम्बरदार देवी सिंह जी (जो बद्रिकाश्रम के श्री शंकराचार्य स्वामी कृष्ण बोधाश्रम जी के पहिले सम्बन्ध के फूफा थे) देवटा के जमींदार पं० गंगासहायजी, ज़िला अलीगढ़ में महोपदेशक ठा० इन्द्रवर्मा जी, ठा० आत्मारामजी, महाकवि पं० शंकर जी, कर्ण कवि जी, ठा० खमानसिंह जी, ठा० महावीर सिंहजी आदि असंख्य प्रतिष्ठित पुरुष उनके मित्र और भक्त थे।

ग्राम रनियावली ज़िला बुलन्दशहर में शर्मा जी ने अपने व्याख्यान में कहा कि—यदि श्रीराम जी परमेश्वर होते तो रावण को विना युद्ध

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किये ही मार देते, लाखों करोड़ों लोग—हैजा, प्लेग, तथा हृदय की गति बन्द होने आदि रोगों से मर जाते हैं, परमेश्वर को क्या आवश्यकता थी जो पहिले उससे अपनी स्त्री का हरण करवाये, उसके लिये रोता फिरे, फिर युद्ध करके उसको मारे ?

इस पर एक ब्राह्मण ने कहा कि—रावण ने सीता जी को इसलिये चुराया था कि मेरी मुक्ति हो जाय।

इस पर शर्मा जी ने कहा कि—तुम लोगों में से किसी की लुगाई को कोई चुरा ले जाय तो चुराने वाले की मुक्ति हो जायेगी, या उसको क़ैद कराया जायगा ?

यह सुनकर वह ब्राह्मण तो कुछ न बोला किन्तु रूदरी ग्राम के ठाकुर हीरा सिंह जी बिगड़ कर बोले कि—आपने सीता जी को लुगाई क्यों कहा ?

शर्मा जी बोले कि भाई ! मैंने सीता जी को स्त्री, नारी, लुगाई कुछ भी नहीं कहा न उनका नाम ही लिया पर—नर के साथ नारी पुरुष के साथ स्त्री और ग्रामों में लोग के साथ लुगाई नाम बोला ही जाता है इसमें बुरा मानने की क्या बात है ?

ऐसा सुनकर सब चुप हो गये और फिर अवतारवाद के विरुद्ध शर्मा जी का बड़ा प्रभावशाली भाषण हुआ।

(२) सन् १९१२ में अरनियाँ ज़िला बुलन्द शहर का उत्सव था उसमें श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा, पं० श्यामलाल जी पहासू वाले, धरपा वाले ठा० रामदयाल सिंह जी, कई विद्वान आये थे, पिलखुवे वाले ठा० हीरासिंह जी भी थे, जिनका नाम पहले शायद हैदर था और जिनको शर्मा जी ने ही शुद्ध करके ठा० हीरासिंह नाम रक्खा था जिनका यह भजन प्रसिद्ध है—

"कोई क्या गावे संसार में, है अपार माया तेरी।"

सनातन धर्म की ओर से पं० गीताराम जी शास्त्री और रामस्वरूप शर्मा आदि तीन या चार पंडित शास्त्रार्थ करने के लिए आये हुए थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रार्थ विधवा विवाह पर था पं० गीताराम जी ने पाराशर स्मृति के दो श्लोक पढ़े जो ये थे—

"मृते भर्तरि या नारी ब्रह्मचर्यं व्रतेस्थिता।
साऽमृता लभते स्वर्गं, यथा ते ब्रह्मचारिणः॥
"तिस्रः कोट्योऽर्धकोटी च यानि लोमानि मानवे।
तावत्काले वसेत् स्वर्गे भर्त्तारं या ऽनुगच्छति॥
पाराशर स्मृति अ० ४ श्लोक ३१-३२॥

अर्थ—पति के मरने पर जो स्त्री ब्रह्मचर्य व्रत में स्थित रहती है वह मरने पर ब्रह्मचारियों की तरह स्वर्ग को प्राप्त करती है।

जो पति के साथ मर जाती, सती हो जाती, अर्थात् पति के साथ चिता में भस्म हो जाती है, उसके शरीर में जितने रोम हैं उतने काल तक स्वर्ग में बसती है।

विधवा विवाह के विरुद्ध पं० गीताराम जी ने इस अथ के साथ उन दो श्लोकों को बोला।

श्री शर्मा जी ने इसके उत्तर में कहा कि—इन दोनों श्लोकों में विधवा विवाह का निषेध कहीं नहीं है, तोभी मैं पूछता हूँ कि—आपने इन दोनों श्लोकों से पहिला श्लोक क्यों छोड़ दिया ? जिसमें विधवा विवाह का विधान है, वह इन दो श्लोकों से पहिलाहै, उसको छोड़कर अगले दो श्लोक पढ़ दिये। उस श्लोक को पढ़िये।

पं० गीताराम जी शास्त्री उसको न पढ़कर बार बार उन्हीं दो श्लोकों को पढ़ देतेथे, इस पर शर्मा जी ने पं० गीताराम जी की गर्दन पर हाथ रखकर उसको झुकाया, और पाराशर स्मृति उनकी आँखों के सामने की, और कहा कि इसको पढ़दो। वे फिर भी नहीं पढ़ते थे। कुछ पौराणिकों ने शोर मचाया कि शर्माजी पं० जी का गला क्यों पकड़ते हैं ?

शर्मा जी ने गर्ज कर कहा कि—जो अपने गले से सत्य बात को बोलने का काम नहीं लेता है, उसका गला ही पकड़ा जायेगा, ताकि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे सच्ची बात कहलवाई जाय। तुम इनसे उस श्लोक को पढ़वा दो। इस पर बड़ा कहकहा हुआ।

पाराशर स्मृति शर्माजी ने पं० ठाकुर रामदयाल सिंह जी को दी और पढ़ कर अर्थ सहित सुनाने को कहा। श्री ठाकुर जी ने यह श्लोक पढ़ा—

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे च पतिते पतौ।
पंचस्वापत्सु नारीणां, पतिरन्यो विधीयते ॥३०॥

पति के लापता होने, मर जाने, संन्यासी हो जाने, नपुंसक होने, अथवा पतित हो जाने रूप पाँच आपत्तियों में स्त्रियों को दूसरे पति का विधान है।

इस श्लोक और अर्थ को सुनते ही सभा में सन्नाटा छा गया, पौराणिक पण्डित किं—कर्तव्य विमूढ हो गये। फिर बार-बार रोकने पर भी बड़े ज़ोर की तालियाँ बजीं। पौराणिक पण्डित उठ कर चले गये। आर्य समाज की भारी विजय हुई।

(३) सन् १९१३ के मई मास में आर्य समाज का उत्सव था १३ मई को महान् तार्किक और दार्शनिक श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का देहावसान हाथरस में हुआ था। श्री शर्मा जी स्वामी जी के देहावसान से पहिले ही हाथरस पहुँच गये थे। स्वामी जी की अन्त्येष्टि कराने के पीछे श्री शर्मा जी अरनियाँ के उत्सव में आये। उनके साथ श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज के ज्येष्ठ पुत्र पं० नृसिंह शर्मा जी भी आये और प्रसिद्ध कवि ठा० वल्देवसिंह जी चौहान भी साथ थे। शर्मा जी ने सभा में पं० नृसिंह शर्मा जी का परिचय दिया और उनको खड़ा करके सबको दर्शन भी कराये। शर्मा जी ने अपने भाषण में स्वर्गीय स्वामी दर्शनानन्दजी के अद्भुत गुणों, उनके तप त्याग और जीवन की विशेष घटनाओं का वर्णन किया। उस वर्णन को करते समय शर्मा जी का गला भर आया था, उनको कुछ देर रुक कर अपने आपको सम्भालना पड़ा था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) मुझको सन् सम्वत् याद नहीं रहा, आर्य समाज अरनियाँ का उत्सव था, उस पर शर्मा जी आये हुए थे, वे प्रति वर्ष ही आया करते थे, उनके बिना अरनियाँ का उत्सव होता ही नहीं था। उत्सव में शास्त्रार्थ करने को ज़िला अलीगढ़ से एक पं० तुलसीराम नामी आये हुए थे। वे शास्त्रार्थ के लिए खड़े हुए। आर्य समाज की ओर से शर्मा जी खड़े हुए।

पं० तुलसीराम जी शास्त्री ने शर्मा जी को सामने आया देख कर कहा कि ये शास्त्री नहीं हैं, इसलिये मैं इनसे शास्त्रार्थ करना नहीं चाहता हूँ।

शर्मा जी अपनी स्वाभाविक गर्जना के साथ बोले कि मैं शास्त्रियों का बाप हूँ। पं० तुलसीराम जी ने शर्मा जी के शब्दों पर आपत्ति उठाई कि शर्मा जी ने अपने आपको हमारा बाप क्यों कहा है?

पं० ठाकुर रामदयालसिंह जी ने उठकर बताया कि शर्मा जी के तीन सुपुत्र हैं और तीनों ही शास्त्री और आचार्य हैं। १. पं० देवेन्द्र नाथ जी शास्त्री सांख्य तीर्थ २. पं० महेन्द्रदेव जी शास्त्री विद्याभूषण ३. पं० धर्मेन्द्रनाथ जी आयुर्वेदाचार्य हैं इसलिये शर्मा जी ने ठीक ही कहा है कि मैं शास्त्रियों का बाप हूँ।

इस पर लोग ख़ूब हँसे। शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। पं० तुलसीराम जी ने प्रश्न उठाया कि स्वामी दयानन्द जी ने संस्कार विधि के विवाह संस्कार प्रकरण में लिखा है कि विवाह और गर्भाधान एक ही दिन हों, जिस दिन विवाह हो उसी दिन गर्भाधान ऐसा न कहीं पढ़ा न सुना, यह अनहोनी बात क्यों लिखी है?

शर्मा जी ने उत्तर में कहा कि दुष्यन्त और शकुन्तला का उसी दिन विवाह हुआ था, और उसी दिन गर्भाधान हुआ था, जिससे भरत जैसा वीर पुत्र उत्पन्न हुआ था, आपने नही पढ़ा और नहीं सुना तो यह आपका दोष है। चतुर्थी कर्म आपकी विवाह पद्धति में भी लिखा है।

पं० तुलसीराम जी ने कहा कि वह तो गन्धर्व विवाह था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्मा जी ने गर्जकर कहा कि यह क्या हुआ कि गधा नहीं था रेंगटा था ? गन्धर्व विवाह था तो, वह विवाह था या नहीं ? इस पर लोग ख़ूब हँसे। पं० तुलसीराम जी यह कहकर उठकर चले गये कि मैं तो पहिले ही कह रहा था कि मैं इनसे शास्त्रार्थ नहीं करना चाहता।

(५) एक बार शर्मा जी दनकौर स्टेशन से दिल्ली जाने के लिये गाड़ी पर चढ़ने लगे, गाड़ी में बहुत भीड़ नहीं थी पर जिस डिब्बे में शर्मा जी चढ़ने लगे उसमें दो तीन पठान थे जो किसी को उसमें चढ़ने नहीं देते थे। शर्मा जी जब चढ़ने लगे तो पठानों ने उनको चढ़ने से रोका, और इसमें नहीं, इसमें नहीं, दूसरे में जाओ कहने लगे, शर्मा जी ने गर्जकर कहा—हम इसी में चढ़ेंगे। हिन्दु मनोवृत्ति के लोगों ने कहा कि क्यों झगड़े में पड़ते हैं, दूसरी जगह ही चढ़ जाइये। शर्मा जी ने कहा—हम दूसरी जगह नहीं चढ़ेंगे, हम इसीमें चढ़ेंगे। शर्मा जी उसी में चढ़े। उस समय एक मैं (अमरसिंह) था और दूसरा कौन था याद नहीं रहा। हम दोनों भी शर्मा जी के पीछे उसी डिब्बे में चढ़ गये, यद्यपि हमको कहीं जाना नहीं था। शर्मा जी के चढ़ने पर पठान हाथा पाई करने को तैयार ही हुए थे कि शर्मा जी ने अगले पठान की गर्दन पर ऐसे ज़ोर का मुक्का मारा कि उसकी गर्दन टेढ़ी हो गई, पठान ने एक हाथ से तो अपनी गर्दन पकड़ी और दूसरे हाथ से शर्मा जी के पैर छुए और कहने लगा—"पण्डित तुम हमारा बाप है मुआफ़ कर दो।"

गाड़ी चल पड़ी थी इस कारण हम दोनों भी दिल्ली तक साथ ही चले गये, वैसे चढ़े भी इसी इरादे से थे कि झगड़ा होगा तो हम भी शर्मा जी का साथ देंगे, पर झगड़ा तो एक मुक्के ने ही समाप्त कर दिया था। पठानों ने बहुत इज़्ज़त के साथ शर्मा जी को खुली जगह देकर बिठाया। हम दिल्ली से वापस आ गये।

(६) स्वाध्याय और ग्रन्थ संग्रह का शौक—

मैं १९१८ के अक्तूबर मास में आर्य प्रादेशिक सभा लाहौर का उपदेशक नियुक्त हुआ था। लाहौर में अनार कली आर्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज और बच्छोवाली आर्य समाज दोनों के उत्सव एक ही तिथियों में नवम्बर मास के अन्तिम सप्ताह के शुक्र, शनि, रवि को हुआ करते थे। अनार कली आर्य समाज का उत्सव दयानन्द ऐंग्लो वैदिक मिडिल स्कूल के मैदान में हुआ करता था, और आर्य समाज बच्छोवाली का वाटर वर्क्स के पास होता था। आर्य समाज वच्छोवाली के उन दिनों दो भाग हो गये थे, एक का नाम कृष्ण पार्टी, और दूसरी राय साहिब टाकुरदत्तजी धवन रिटायर्ड जज की थी। कृष्ण पार्टी का उत्सव तो पहिले स्थान वाटर वर्क्स के पास ही होता रहा, धवन पार्टी का शाहआलमी दरवाज़े के भीतर नक़ीबों की हवेली के मैदान में होता था।

उस वर्ष के धवन पार्टी के उत्सव में श्री डाक्टर लक्ष्मीदत्त जी आर्य मुसाफिर, पं० तारादत्त जी आर्य मुसाफिर (वकील) (दोनों श्री पं० भोजदत्त जी आर्य मुसाफिर के पुत्र थे) और श्री शर्मा जी आये थे।

मैं इन सबको मिलने को गया, वेदामृत नामक पुस्तक पं० सातव-लेकर जी की लिखी हुई जो तभी प्रकाशित हुई थी, मेरे पास थी, वह शर्मा जी को बहुत पसन्द आई, वह पुस्तकें लेते और पढ़ते थे, मैंने वह पुस्तक दे दी। मैंने देखा कि शर्मा जी सारा दिन पढ़ते थे और जब बैठे बैठे पढ़ते हुए थक जाते थे तब पुस्तक हाथ में लेकर धीरे धीरे घूमते हुए देर देर तक पढ़ते रहते थे।

(७) अन्तर्जातीय विवाह बिल (इन्टर नेशनल मैरिज बिल)

मुझको ठीक याद नहीं रहा उसी उत्सव में या १९१९ के उत्सव में इस बिल पर विचार करने के लिये आर्य समाज बच्छोवाली की दोनों पार्टियों के पण्डालों में दो सम्मेलन हुए थे।

कृष्णपार्टी के पण्डाल वाटर वर्क्स वाले में सम्मेलन के सभापति थे महात्मा स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज, और धवन पार्टी के पण्डाल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में सम्मेलन के सभापति थे पं० तारादत्त जी (वकील) आर्य मुसाफ़िर। इस सम्मेलन में शर्माजी ने भाषण करते हुए कहा कि "अन्तर्जातीय विवाह" यह नाम ही ग़लत है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये चार वर्ण हैं जाति नहीं। जाति तो मनुष्य जाति, पशु जाति, पक्षी जाति आदि हैं। इस प्रकार अन्तर्जातीय नाम तब सार्थक होगा कि मनुष्य का विवाह भैंस, ऊँटनी या गधी के साथ हो। ब्राह्मण भी मनुष्य जाति में है और शूद्र भी, फिर इनका विवाह अन्तर्जातीय कैसे होगा? यदि ब्राह्मणादि वर्णों का नाम भी जाति ही मान लिया जाय तो यह बिल आर्य समाज के सिद्धान्तों के विरुद्ध है।

यदि गुण कर्म स्वभाव के ब्राह्मण का गुण कर्म स्वभाव की ब्राह्मणी कन्या के साथ विवाह हो तो अन्तर्जातीय नाम ग़लत, वह तो जाति में ही हुआ, और यदि गुणकर्म स्वभाव से जो ब्राह्मण है वह गुणकर्म स्वभाव की शूद्रा से या गुणकर्म स्वभाव के शूद्र का गुणकर्म स्वभाव की ब्राह्मणी से विवाह होगा तो आर्य सिद्धान्तों के विरुद्ध है।

उस दिन कृष्णपार्टी वाले सम्मेलन में इस बिल के पक्ष में प्रस्ताव पारित हुआ, और धवन पार्टी के सम्मेलन में बिल के विरुद्ध प्रस्ताव पारित हुआ। शर्मा जी के तर्कों का लाहौर के श्रोताओं पर बहुत प्रभाव पड़ा।

(८) सन् १९२२ और १९२३ में मलकानों की शुद्धि का कार्य हो रहा था। शर्मा जी ने सारे शुद्धि क्षेत्रमें काम किया, पर ज़िला बुलन्द शहर और ज़िला अलीगढ़ की तो हर एक शुद्धि तथा हर एक शुद्धि पंचायत में शर्मा जी पहुँचते थे, इन ज़िलों में उन्होंने बहुत काम किया था। मैं भी सभी शुद्धियों और सभी राजपूत पंचायतों में सम्मिलित रहता था। पंचायतों में जो प्रतिनिधि लिये जाते थे वे सब राजपूत ही होते थे, क्योंकि शुद्धियाँ राजपूतों की ही होती थीं और राजपूत ही राजपूतों को अपनी बिरादरी में मिला सकते थे।

इन पंचायतों में भी शर्मा जी को अवश्य लिया जाया करता था। पंजाब से आये कार्यकर्त्ता भी पंचायतों में भीतर घुसने की इच्छा करते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे, पर राजपूत न होने के कारण उनको भीतर नहीं लिया जाता था। कहा जाता था कि राजपूतों के रस्मों रवाज़ों और राजपूतों की समस्याओं को राजपूत ही जानते हैं, दूसरे नहीं। यह सुनकर वे लोग कहते थे कि फिर शर्मा जी को पंचायतों में क्यों लिया जाता है? तो राजपूत लोग कहते थे कि राजपूतों के रस्मों रवाजों और राजपूतों की समस्याओं को शर्मा जी राजपूतों से भी अधिक जानते हैं क्योंकि ये सारे राजपूतों के पुरोहित और गुरु हैं।

इन सभी बातों से शर्मा जी की विद्वत्ता अदम्य साहस, हाज़िर जवाबी, स्वाध्याय शीलता और अत्यन्त यशस्वी होने का परिचय मिलता है।

—:०:—

८५ वर्षीय श्री स्वामी विवेकानन्द जी
महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार के
संस्मरण

१. लगभग ५०-५२ वर्ष पूर्व गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के आश्रम में आम्र वृक्ष के नीचे पादरी फ्रेन्क से आवागमन के विषय पर शास्त्रार्थ हुआ। स्व० श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा ने ललकार कर कहा कि बाइबिल में मुक्ति का कहीं वर्णन नहीं है। पादरी महोदय ने कहा कि ईसामसीह पर विश्वास करना ही हमारे यहाँ मुक्ति माना जाता है। पं० जी ने कहा किसी व्यक्ति पर ईमान लाना मुक्ति नहीं कही जा सकती क्योंकि मनुष्य अल्पज्ञ है पादरी निरुत्तर हो गए और उनकी आँखों से अश्रु धारा बह निकली, और बोले कि यदि उस समय आर्य समाज का जन्म हो गया होता, जबकि मेरे बाबा श्री नीलकण्ठ शास्त्री कलकत्ते में ईसाई बने थे, तो वे ईसाई न होते और हम भी ईसामसीह के मानने वाले न होते। श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा ने कहा कि अब दर्वाज़ा खुला हुआ है ख़ुशी से आप आ सकते हैं किन्तु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपनी लाचारी को अनुभव करते हुए पादरी चुप रहे और शास्त्रार्थ समाप्त हो गया। उपस्थित व्यक्तियोंपर इसकाबड़ा अच्छा प्रभावपड़ा।

२. महाविद्यालय ज्वालापुर में पं० शंकरदत्त जी शर्मा मुरादाबाद वाले महाविद्यालय के मन्त्री थे और चौ० रघुराजसिंह जी प्रधान थे। अनेक गण्यमान्य व्यक्तियों के समक्ष पं० शंकरदत्त जी ने श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा से प्रश्न किया कि आप विधवा विवाह का बड़ा समर्थन करते हैं तो पं० जी ने मुस्कराते हुए झट से उत्तर दिया कि तुम विधवा बनकर इसका अनुभव करो तो पता लगे।

३. लगभग ५१-५२ वर्ष पूर्व महाविद्यालय ज्वालापुर के उत्सव पर मुसलमानों से शास्त्रार्थ था, मुसलमानों ने अपने मौलवी बुलाये हुए थे, आर्य समाज की तरफ़से धर्मभिक्षु जी को बोलना था, और सदारत श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा को करनी थी, किन्तु धर्मभिक्षु जी के आने में देर के कारण पं० जी स्वयं ही शास्त्रार्थ के वास्ते खड़े हो गए, और आए हुए मौलवियों से कहा कि आप प्रश्न करें। उन्होंने कहा कि आपके यहाँ किसने मोक्ष प्राप्त किया है और कौन लौटकर आया है ? तब पं० जी ने यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् का हवाला देकर कहा कि हमारे यहाँ तो मुक्तात्माएँ धर्म की रक्षार्थ आती ही रहती हैं किन्तु कृपा कर आप यह बताइये कि हज़रत मुहम्मद पर आप किस दृष्टि से ईमान लाते हैं, जबकि आपके क़लमे लाइलाहि लिल्लिल्लाह मुहम्मदरसूलिल्लाह के अनुसार बिना रसूल के ख़ुदा पर भी ईमान नहीं लाया जा सकता। इस प्रकार आपके यहाँ तो ख़ुदा से भी ऊपर अल्पज्ञ इन्सान को प्रतिष्ठित कर दिया गया है, जिनकी अनेक बीबियाँ थीं, क्या इसी को ख़ुदा परस्ती कहते हैं ? हमारे यहाँ पारब्रह्म परमात्मा को ही सर्व शक्तिमान् तथा अद्वितीय कहा है उसमें किसी की भी शिरकत नहीं है। इस पर मौलवी निरुत्तर हो गए।

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री आचार्य, वेदशिरोमणि पं० बृहस्पति जी शास्त्री एम० ए०

उपकुलपति विश्वविद्यालय वृन्दावन के

सद्विचार

ऋषि दयानन्द कहते थे कि समस्त आर्य समाजों को ही मेरे पीठ स्थान समझो और आर्य समाज के सदस्यों को ही मैं अपना शिष्य समझता हूँ। उन्हीं से मुझे आशा है कि वे सच्चे शिष्यों की भाँति मेरे द्वारा निर्दिष्ट रीति से वेदों की सच्ची शिक्षाओं का संसार भर में प्रचार करेंगे क्योंकि वेद ही मानव मात्र का कल्याण करने वाली ईश्वर द्वारा प्रदत्त कल्याणी वाणी है। इन्हीं विचारों को चरितार्थ करने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती के धर्म प्रचारक शिष्यों में से अन्यतम स्व० श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा थे।
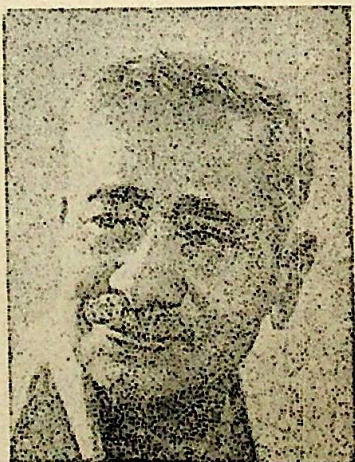
महर्षि का यह दृढ़ विश्वास था कि वेद की शिक्षा मानव के केवल व्यक्तिगत जीवन को ही उन्नत और पवित्र बनाने का उपदेश नहीं करती है, अपितु सामाजिक व्यवस्था को भी दृढ़ और संगठित तथा समन्वित करने का उपदेश भी वह करती है। इसलिये महर्षि अन्ध परम्परा युक्त गुरुडम और एक तन्त्री सम्प्रदायवाद के पक्षपाती नहीं थे। वे नहीं चाहते थे कि जरदुस्ती, बौद्ध, जैन, मूसी, ईसाई, मुहम्मदी नेताओं की भाँति वेद का ईश्वर प्रतिपादित धर्म भी, किसी एक व्यक्ति विशेष द्वारा प्रवर्तित कोरा सम्प्रदाय बनकर रह जावे, इस ही लिये उन्होंने अपनी संस्था आर्य समाज के नाम के साथ समाज शब्द को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ा था। इन विचारों को रखते हुए महर्षि की इसी इच्छा की पूर्ति के लिये उनके भक्त पं० गुरुदत्त जी विद्यार्थी एम० ए० तथा महात्मा हंसराज जी आदि ने सच्चे शिष्यों की भाँति ऋषि की जीवन लीला समाप्त होने के पश्चात् उनकी स्मृति में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य दुहरा था। नवयुवकों में शिक्षण संस्थाओं द्वारा, और प्रौढ़ नर नारियों में, प्रचार मालाओं द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार करना कराना। एक ओर नवयुवकों की शिक्षा के लिये डी० ए० वी० स्कूल और कालेज एक के पश्चात् एक खोले जा रहे थे और दूसरी ओर स्वा० दर्शनानन्द जी और महात्मा मुन्शीरामजी तथा श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा आदि इस विचार के थे कि वेदशास्त्रों के पठन पाठन और तदनुसार जीवनयापन की पद्धति की व्यवस्था किये बिना वैदिक विचारों और आचारों का पूर्णतया प्रचार नहीं हो सकता। शिक्षा के प्रचार तथा आचार विचार की पवित्रता के प्रसार के सम्बन्ध में सबके विचार एक थे किन्तु म० हंसराज जी कालेजों के द्वारा, स्वामी श्रद्धानन्द जी सशुल्क गुरुकुलीय शिक्षा के द्वारा, तथा स्वा० दर्शनानन्द जी और पं० मुरारिलाल जी शर्मा निःशुल्क गुरुकुलीय शिक्षा द्वारा ही देश कल्याण की भावना रखते थे। अतः इस प्रकार के विचार वाले ऋषि भक्तों ने महर्षि द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित शिक्षा प्रणाली के आदर्शों के आधार पर गुरुकुलों की स्थापना करने का निश्चय किया। तदनुसार सर्वप्रथम सन् १८६८ ई० में सच्चे परिव्राजक श्री स्वामी दशनानन्द जी तथा कर्मवीर श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा ने सिकन्दराबाद ज़िला बुलन्दशहर में एक गुरुकुल की स्थापना की और इसके सञ्चालन के लिए एक कमेटी बना दी गई किन्तु इसका सारा भार, स्वर्गीय श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा ही सारे जीवन बड़ी निष्ठा और योग्यता पूर्वक वहन करते रहे। पं० मुरारि-लाल जी शर्मा और स्वा० दर्शनानन्द जी महाराज निश्शुल्क शिक्षा के ही पूर्ण समर्थक थे, और पूर्ण सहयोगी थे। उन्होंने अपने पुत्रों को भी गुरुकुल में शिक्षित होने के लिये सर्वप्रथम प्रविष्ट किया जो बड़े

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्वान् और वाग्मी होकर गुरुकुल से निकले। स्वा० श्रद्धानन्द जी ने भी अपने पुत्रों को गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट किया था। पं० मुरारिलाल जी शर्मा के ही काल में सिकन्दराबाद गुरुकुल में डा० मंगलदेव जी शास्त्री, पं० रत्नाकर जी शास्त्री· पं० उदयवीर जी शास्त्री, डा० धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री, पं० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री, कविवर आचार्य मेधाव्रत जी और लेखक (बृहस्पति शास्त्री) भी उनके ही काल में प्रारम्भ में इसी गुरुकुल सिकन्दराबाद में प्रविष्ट होकर शिक्षा प्राप्त करते रहे थे। ये सभी अपने निर्माता एवं संस्था संचालन के कुशल शिल्पी शर्मा जी का सादर स्मरण और श्रद्धासिक्त प्रणाम करते रहे हैं। समस्त आर्य जगत् अपने गुरु महर्षि के उस सच्चे शिष्य महा पुरुष की सेवाओं के लिये चिर ऋणी रहेगा। यह तो उनके एक पहलू की कहानी है। प्रचार मालाओंद्वारा अपने व्याख्यानों, शास्त्रार्थों और उपदेशों द्वारा जो महान् सेवा वे मृत्यु से दस दिन पूर्व तक करते रहे हैं उसकी गौरवमय गाथाएँ अब भी स्थानीय आर्य जन बड़े आत्मविभोर होकर सुनाया करते हैं। उनका व्यक्तित्व इन दोनों पहलुओं से भी अधिक उज्ज्वल और पवित्र था। वे परम उदार मिलनसार और प्रेमी तथा विनोदी भी थे।

एतावानस्य महिमा अतोज्यायाँश्च पूरुषः

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पं० सूर्यकान्त जी शास्त्री बी० ए० विद्याभूषण

भूतपूर्वप्रधान आर्यसमाज सोहनगंज देहली तथा भूतपूर्वप्रधान हिन्दी संस्कृत अध्यापक परिषद् देहली का

मार्मिक स्मरण

सन् १९१४ की बात है जब मैं गुरुकुल सिकन्दराबाद में पढ़ता था। वहाँ बड़ी कक्षाओं को व्याकरण तथा न्याय पढ़ाने वाला कोई अच्छा अध्यापक नहीं मिल रहा था। पिता जी (श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा) ने कई अच्छे विद्वानों को अध्यापन कार्य के लिये बुलाया किन्तु बड़ी कक्षा के छात्र उनके अध्यापन से सन्तुष्ट न हुए और वे थोड़े थोड़े समय तक गुरुकुल में रहकर ही चले गए। अपने अध्ययन की हानि होते देख मैंने और मेरे दूसरे साथी भूदेव जी ने यह मन्त्रणा की कि हम दोनों गुरुकुल से भाग चलें और जहाँ अध्ययन का उचित प्रबन्ध हो वहाँ अध्ययन करें। ऐसा विचार कर अपने सामान के साथ हम प्रातःकाल के अंधेरे में ही दनकौर स्टेशन पर पहुँच गए जहाँसे ग़ाज़ियाबाद की तरफ़ हमें यात्रा करनी थी। अकस्मात् छात्रावास के संरक्षक ने देखा कि दो तख्त ख़ाली पड़े हैं उनके दो ब्रह्मचारी सामान के साथ कहीं चले गए हैं। पिता जी उस समय गुरुकुल में ही थे। उन्होंने लालटेन लेकर कुछ ब्रह्मचारियों को कर्मचारियों के साथ स्टेशन पर भेजा कि दोनों ब्रह्मचारी स्टेशन पर हों तो उन्हें वापस ले आवें। जब हम दोनों ने गुरुकुल वासियों को लालटेन के प्रकाश के साथ देखा तो हम लोग पैदल ही सामान को छोड़कर भाग खड़े हुए। उन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
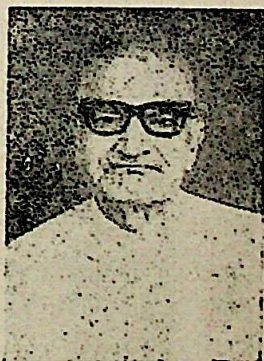
लोगों ने सारी गाड़ी में हमें देखा, जब हम न मिले तो हमारे सामान को गुरुकुल वापस ले जाकर शर्मा जी से कहा कि दोनों ब्रह्मचारी कहीं भाग गए हैं। शर्माजी ने आज्ञा दी कि अगली गाड़ी से कुछ लोग अजायबपुर स्टेशन पहुँच कर उन्हें रोक लें और वापस ले आवें। हम भी उसही गाड़ी से आगे जाने के विचार से स्टेशन पर थे ही, उन्होंने दूसरी गाड़ी से पहुँचकर वहाँ हमको देख लिया और गुरुकुल वापस ले आए। हमें बड़ी लज्जा थी और हम अपने को अपराधी अनुभव कर रहे थे। पिता जी ने हमें स्नेहभरे शब्दों में बहुत डाटा डपटा और कहा कि भागने की क्या आवश्यकता थी, तुम्हें हमसे कहना चाहिये था, हम अन्य पण्डित का प्रबन्ध करते। अस्तु अब हम शीघ्र ही प्रबन्ध किये देते हैं क्योंकि अन्य पण्डितों से पत्र व्यवहार चल रहा है। पिता जी ने एक सप्ताह के अन्दर ही, मैथिल ब्राह्मण पं० कपिलेश्वर जी झा को गुरुकुल बुला लिया, जो व्याकरण और न्याय शास्त्र के बड़े अच्छे विद्वान् थे। उनसे सन्तुष्ट होकर हम लोग अध्ययन करने लगे। उस दिन हमने यह अनुभव किया कि हमारे वास्तविक पिता तो ये ही हैं, जो हमारे लालन पालन और शिक्षा का इतना ध्यान रखते हैं।

यद्यपि हमारे ही साथ शर्मा जी के द्वितीय पुत्र महेन्द्रदेव जी भी पढ़ते थे किन्तु मैंने १० वर्ष गुरुकुल में अध्ययन करते हुए पिता जी के व्यवहार में यही बात पाई कि वो अपने पुत्र से भी अधिक हम ब्रह्मचारियों पर अधिक स्नेह की दृष्टि रखते थे। हम अपने अपने घरों से मँगाकर घृत आदि वस्तुओं का सेवन कर लेते थे, किन्तु पिता जी अपने पुत्र महेन्द्रदेव जी को एक पैसा भी कभी नहीं देते थे। सच्चे अर्थों में वे ही हमारे पिता थे। हमारे माता पिता तो जनक मात्र ही थे, किन्तु जिनकी कृपा से हमारा जीवन धर्मनिष्ठ बना, जिनकी महती कृपा से हमें निश्शुल्क विद्या प्राप्त हुई और जिनके पवित्राचरण को देखकर, उन्हीं का अनुकरण कर हम अपने सदाचार को क़ायम रख सके, ये सारी कृपाएँ उसही महात्मा तपस्वी पिता की थीं। हमारा हृदय उनके चरणों में सदा झुका रहेगा और पुनीत श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता रहेगा। हम जीवन भर उस पिता के ही ऋणी बने रहेंगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्या भूषण श्री पं० भूदेव जी शास्त्री एम० ए० द्वारा

श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा को श्रद्धाञ्जलि

कुलपिता

कर्मवीर तपस्वी, परमश्रद्धेय, परमादरणीय स्व० श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा गुरुकुल के केवल आदि संस्थापक ही नहीं थे अपितु वे गुरुकुल के सर्वसर्वा ही थे। पूज्य श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज और श्री पं०मुरारिलालजी शर्मा के समान विचार थे। दोनोंही गुरुकुल में निश्शुल्क शिक्षा चाहते थे। इन विचारों के समर्थकों ने अपने बच्चों को गुरुकुल सिकन्दराबाद में ही रहने दिया,उन्हें फ़र्रुखाबाद नहीं भेजा। अपनी सन्तानों से भी अधिक गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को स्नेहमयी दृष्टि से देखने के कारण ही समस्त गुरुकुलीय छात्र तथा कर्मचारी भी उन्हें पिता के नामसे ही पुकारते थे जिनमें मैं भी एक छात्रथा। यह गौरव शायद महात्मा गांधीजी को ही साबरमती आश्रम में प्राप्त था, वे भी वहाँ बापू नाम से पुकारे जाते थे किन्तु शर्मा जी तो बहुत पूर्व समय से ही इस पवित्र नाम से अलंकृत थे। शर्मा जी सही अर्थों में पिता ही थे, क्योंकि जो वात्सल्य और प्रेम शर्मा जी से छात्रों को मिलता था, वैसा कदाचित् उन्हें अपने माता पिता से भी न मिला होगा। पिता जी सच्चे अर्थों में आर्य थे, निडर थे, साहसी थे, और स्पष्टवादी थे। आर्य सिद्धान्तों के वे जितने ज्ञाता तथा मर्मज्ञ
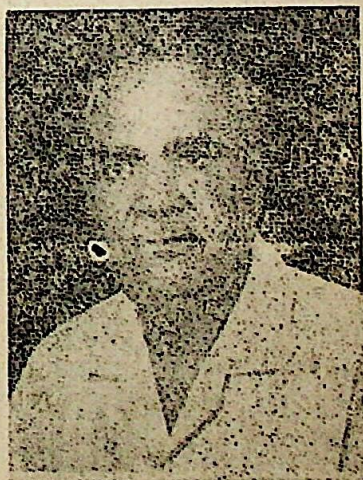
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे वैसे उस समय भी कम थे, अबकी तो बात ही क्या! उनसा शास्त्रार्थ महारथी, तार्किक, एवं प्रत्युत्पन्नमति मैंने अपने जीवन में नहीं देखा। अपने छोटे छोटे चुटकलों से बड़े से बड़े विद्वानों के मुँह बन्द करके रख देते थे। बहुत से आर्य समाजों के उत्सवों की तिथियाँ वही रखी जाती थीं जो शर्मा जी के अनुकूल होती थीं। उनके बिना आर्य समाजों के उत्सव फीके पड़ जाते थे। वे हम छात्रों को अपना जैसा ही तार्किक एवं विद्वान् बनाना चाहते थे। एक बार मुसलमानों से शास्त्रार्थ के समय एक मौलाना ने ताना मारा कि शर्मा जी ? वेदों की बड़ी डींग मारते हो, किन्तु आप लोगों में कितने ऐसे हैं जिन्हें वेद याद हैं। हममें सैकड़ों ऐसे हैं, जिन्हें क़ुरान शरीफ़ याद है। शर्मा जी को यह बात चुभ गई और उन्होंने गुरुकुल में आते ही आज्ञा दी कि ब्रह्मचारी वेद को कण्ठस्थ कर डालें। उनकी आज्ञा पाकर अनेक ब्रह्मचारियों ने वेदों को कण्ठस्थ कर डाला, मैंने भी पूरा यजुर्वेद याद किया और अनेक अवसरों पर वेदमन्त्रों को सुनाने का अवसर भी मिला, किन्तु फिर किसी मौलाना ने इस प्रकार का आक्षेप करने की धृष्टता नहीं की, यह पूज्य शर्मा जी की कृपा से ही हुआ। उन्हीं की छत्रछाया में लालन, पालन और शिक्षा प्राप्त करते हुए सन् १९१८ में जब मैं गुरुकुल से स्नातक होकर निकला तो श्री पूज्य शर्मा जी के विचारों की ही छाप मुझ पर पड़ी हुई थी और मैंने निश्चय किया कि जीवन पर्यन्त मैं उन्हीं आदर्शों के अनुरूप आर्य समाज की सेवा करता रहूँगा।

उसी समय आर्य समाज में बाबू पार्टी, घास पार्टी तथा मांस पार्टी बनने लगी। विद्वानों का निरादर होने लगा, वे किराये के टट्टू समझे जाने लगे। आर्य समाज की आत्मा ह्रासोन्मुख होने लगी, लेकिन पिता जी सच्चे ब्राह्मण थे, मान अपमान की चिन्ता न करने वाले जागरूक, निस्पृह, कर्मठ थे, किन्तु मेरे जैसा स्नातक उस गिरावट को सहन न कर सका और तभी मैंने प्रण किया कि वैसे मैं आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार करूँगा परन्तु सवैतनिक प्रचारक के रूप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में नहीं, और इसी तथ्य को ध्यान में रख कर मैंने कानपुर में आकर लगभग ४० वर्ष तक प्रोफ़ेसरी की। स्थानीय क्राइस्ट चर्च कालेज में हिन्दी संस्कृत के अध्यक्ष पद को सम्हालते हुए अध्यापन के साथ हजारों छात्रों को पथ भ्रष्ट न होने दिया। उन्हीं छात्रों में से अब अनेक छात्र बड़े बड़े सरकारी पदों पर आसीन हैं। कोई बड़ा नेता है, तो कोई मिनिस्टर, कलक्टर तथा कोई बड़ा भारी व्यापारी आदि हैं। पिछले दिनों हमारे एक छात्र श्री डी० एस० राठौर कानपुर में ही कलक्टर होकर आ गए। वे अपनी सच्चाई, साहस, निर्भीकता तथा कुशल शासक के रूप में प्रसिद्ध थे। एक बार एक स्थानीय संस्था के पारितोषिक वितरण के अवसर पर किसी प्रसंग में अपने में पाए जाने वाले गुणों के लिये उन्होंने हमें ही खुले अधिवेशन में श्रेय दे डाला। किसी ने इसकी चर्चा जब हमसे की तो इन विचारों के आदि स्रोत श्री पिता जी (शर्मा जी) की भव्य मूर्ति ही हृदय पर अंकित हो गई और बार बार हृदय से उन्हें प्रणाम किया। श्रद्धावनत हृदय में उनकी याद आती रही, वे किस प्रकार हम छात्रों के अन्तःकरण में अपने पवित्र विचारों को भरते थे इसकी स्मृतियाँ जागृत हो गईं। प्रभु को लाख लाख धन्यवाद दिया कि ऐसे पवित्रात्मा के चरणों में बैठकर शिक्षा और सद्विचार पाने का अवसर मिला, और जिसकी कृपा से यश, प्रतिष्ठा और ख्याति मुझे प्राप्त हुई, उसका सारा श्रेय पिता आपको ही है। हम ग़रीबों के उद्धारक आप ही बने, आपने ही ज्ञान का प्रकाश हमारे अन्दर पैदा करके अज्ञान का अन्धकार मिटाया। हम, हमारे बच्चे, और हमारा कुल, सदैव आपके यशस्वी चरणों का स्मरण करता हुआ आपको श्रद्धा के फूल समर्पित करता रहेगा। हमारे परिवार में आपकी गौरव गाथाएँ सदा गाई जाती रहें और हम सदैव आपका कुल पिता के रूप में ही चिन्तन करते रहें यही प्रभु से प्रार्थना है।

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री डा० सूर्यदेव जी शर्मा साहित्यालंकार एम० ए० एल० टी० डी० लिट् अजमेर द्वारा

परमश्रद्धास्पद पं० मुरारिलाल जी शर्मा के प्रति

प्रशस्ति कीर्तन

धन्य श्री पूज्य मुरारीलाल ।
आर्य समाज रूप नभ के,
तेजो मय "सूर्य" विशाल ॥
धन्य श्री पूज्य मुरारीलाल ॥१॥

वेद शास्त्र के सम्यक् ज्ञाता,
जाति-धर्म के तन्मय त्राता ।
मृत समाज के जीवन दाता,
ज्ञान-सरवर के मंजु मराल ॥
धन्य श्री पूज्य मुरारीलाल ॥२॥

शास्त्रार्थ के जमे अखाड़े,
दिग्गज सिंह समान दहाड़े ।
मुल्ला पण्डित पोप पछाड़े,
तर्क के तीर चला विकराल ॥
धन्य श्री पूज्य मुरारीलाल ॥३॥
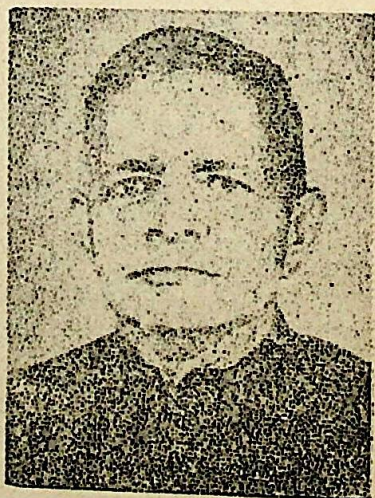
वाल्य काल से लक्ष्य बनाया,
धर्म-प्रचार-क्षेत्र अपनाया ।
जीवन भर फिर उसे निभाया,
रोक नहीं सका उन्हें दिक्काल ॥
धन्य श्री पूज्य मुरारीलाल ॥४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सादा जीवन, उच्च विचारी,
तपसी मुनिव्रत शुद्धाचारी।
किन्तु विपक्षी हेतु अंगारी,
दम्भ का दुर्ग जला जंजाल ॥
धन्य श्री पूज्य मुरारीलाल ॥५॥

गुरुकुल के आचार्य यशस्वी,
रहे कुल-पिता मान्य मनस्वी।
विदुषाम्बर चिर तरुण तपस्वी,
धर्म-रत कर्मवीर श्रुतिपाल ॥
धन्य श्री पूज्य मुरारीलाल ॥६॥

श्रुति-शिक्षा के प्रबल प्रवर्तक,
हिन्दु जाति हित शुद्धि समर्थक।
जीवन अर्पण किया तदर्थक,
विज्ञवर छोड़ गये त्रय लाल ॥
धन्य श्री पूज्य मुरारीलाल ॥७॥

"सूर्य" सम प्रखर प्रभा के पुंज,
"मुरारी" मुरली थी श्रुति-कुंज।
"भोज" सम बने, विपक्षी "मुंज",
धर्म रक्षार्थ सुदृढ़तम ढाल ॥
धन्य श्री पूज्य मुरारीलाल ॥८॥

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री ला० रामगोपाल जी शाल वाले देहली की श्रद्धा स्मृति

आर्य समाज के प्रतिवादी भयंकर, श्रद्धेय पं० मुरारीलालजी शर्मा।

सर्व प्रथम मैंने अमृतसर में आज से ५५ वर्ष पूर्व पं० मुरारीलाल जी शर्मा के दर्शन किये—सिर पर सफ़ेद पगड़ी, भरे हुए चेहरे पर तनी हुयी मूछें, प्रभावशाली व्यक्तित्व-आर्य समाज बाज़ार पशमवाला के वार्षिकोत्सव के मन्च से जब शर्मा जी भाषण देने के लिये खड़े हुये तो, करतल ध्वनि से आर्य जनता ने उनका स्वागत किया। मेरी आयु उस समय ११ वर्ष की थी, मैं नया नया आर्य समाजी बना था अतः आर्य विद्वानों के उपदेशादि बड़े ध्यान से सुनता था, और मुझे आज तक शर्मा जी का वह प्रभाव शाली भाषण याद है और उनकी ओजस्वी वाणी आज भी कानों में गूँज रही है।

भाषण का विषय था कर्तव्य पालन

श्री शर्मा जी ने अनेकों उदाहरण देकर सिद्ध किया कि जो व्यक्ति अपना कर्तव्य पालन करता हुआ जीवन व्यतीत करता है उसकी मृत्यु भी सुखदायिनी बन जाती है। श्री शर्मा जी ने कहा कि महाराणा प्रताप मृत्यु शैया पर पड़े हुए थे, किन्तु उनके प्राण नहीं निकलते थे, बार बार मेवाड़ के सूर्यांकित ध्वज को देख कर आँखें गीली कर लेते थे, महाराणा के सामन्तों ने करबद्ध प्रार्थना करके पूछा राणा जी आपको अन्तिम समय में इतना कष्ट क्यों हो रहा है? तो महाराणा प्रताप धीमे स्वर में बोले, मेरे प्यारे सामन्तों! मुझे डर है कि मेरी मौत के पश्चात् मेरा पुत्र अमरसिंह मेरे जैसा कठोर जीवन छोड़कर कहीं आराम तलबी स्वीकार करके बड़े बड़े बाग़, सुन्दर महल, तालाब आदि बनवा कर मेरी प्रतिज्ञा भंग न कर दे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री शर्मा जी ने गम्भीर मुद्रा में ऊँचे स्वर से दोनों हाथ उठा कर कहा कि उस समय महाराणा के सामन्तों ने अपनी तलवारें म्यान से निकालकर प्रतिज्ञा की—कि महाराणा जी आपकी मृत्यु के उपरान्त हम युवराज अमरसिंह को आराम का जीवन व्यतीत नहीं करने देंगे। विदेशी आक्रमणकारियों से देश की एक एक इंच भूमि लेने तक आपके वंशज सोने चाँदी के बर्तनों में भोजन नहीं करेंगे, मखमली गदेलों पर नहीं सोयेंगे, कठोर जीवन व्यतीत करते हुए दुश्मनों को हमेशा खदेड़ते रहेंगे।

पंडित मुरारिलाल शर्मा ने उस भाषण से अमृतसर की जनता पर अद्वितीय प्रभाव डालते हुए कहा कि मृत्यु को सुखदायिनी बनाने के लिये सदा कर्तव्य पालन करते रहो।

कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफ़िर जैसे अनेकों युवकों को आर्य समाज का श्रेष्ठ प्रचारक बनाने का सौभाग्य भी पूज्य शर्मा जी को है।

मैं अब आर्यसमाज से शास्त्रार्थ नहीं करूँगा

पूज्य स्वामी दर्शनन्द जी के दिवंगत होने के पश्चात् पादरी ज्वालासिंह ने आर्य समाज को खुले शास्त्रार्थ की चुनौती दी। उस समय दो युवक महारथियों ने पादरी का चेलेञ्ज स्वीकार किया। शाहदरा दिल्ली में शास्त्रार्थ का अखाड़ा जमा—पादरी का सामना करनेके लिये पं०मुरारिलाल शर्मा और पं० रामचन्द्रदेहलवी रंगमंच पर आ गये। शर्मा जी प्रधान पद पर आसीन हुए और देहलवी जी पादरी ज्वालासिंह के तर्कों का उत्तर देने के लिये खड़े हुए। तीसरी बारी में पादरी ज्वालासिंह ने इन दोनों युवक विद्वानों के सामने नत मस्तक होकर कहा कि मैंने सोचा था कि स्वामी दर्शनानन्द के मरने के पश्चात् मेरे तर्कों का उत्तर देने वाला कोई न होगा। लेकिन मुझे लगता है कि स्वामी दर्शनानन्द की रूह (आत्मा) इन दोनों नौजवानों में समा गई है।पादरी ज्वालासिंह ने घोषणा कर दी कि "मैं भविष्य में आर्य समाज से शास्त्रार्थ नही करूँगा।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूज्य शर्मा जी का देहावसान सन् १९२७ में हुआ मुझे याद है उनकी शव यात्रा कटरा बड़ियान से चाँदनी चौक होती हुई श्मशान घाट ले जाई गई।

आर्य समाज के महान् योद्धा की अन्तिम यात्रा में मैं भी पीछे पीछे चलता हुआ सोच रहा था कि अब विधर्मियों के आक्रमण से वैदिक धर्म की रक्षा कौन करेगा।

—:o:—

राजवैद्य श्री मूलचन्द जी आर्य अध्यक्ष नारायणदत्त नगर निगम आयुर्वेदिक औषधालय

रामनगर नई देहली द्वारा

श्रद्धाञ्जलियाँ

(गद्य तथा पद्य में)

आर्य जगत् के रत्न, पूज्यपाद, श्री १०८ पण्डित मुरारिलाल जी शर्मा, जिनके पाण्डित्य तथा वाक्पटुता से हर्षित होकर आर्य जगत् का कौन व्यक्ति है जो नतमस्तक होकर उनका स्मरण नहीं करता। उनकी शास्त्रार्थ शैली अद्भुत गौरवगरिमा से ओतप्रोत थी। शास्त्रकी सरिता से सत्यका संचार करने वाली थी। जिनके मुखारविन्द के अमृत वाक्यों द्वारा आर्य (हिन्दु) जगत् के हृदय हर्षितहोकर सुविद्या के स्रोत स्नेह से प्रवाहित होतेथे, और विधर्मियों सेशास्त्रार्थ करने को उद्यत बड़े बड़े बलवान् जिनके सन्मुख हिन्दु जाति के पण्डित कहलाने वाले भयभीत हो जाते थे। वे हँसते हँसते बोली की गोली का निशाना विपक्षियों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
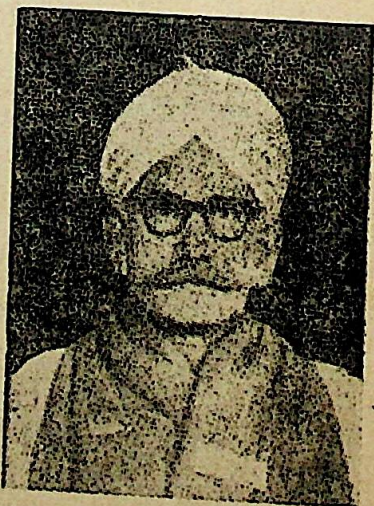
के हृदय पर मार कर पुनरपि उसे शान्ति के स्रोत से सिंचन कर देते थे।

उनके शास्त्रार्थों से आर्यों को वह उत्साह मिलता था कि विधर्मियों के सन्मुख ताल ठोक कर आह्वान करते तनिक भी संकोच नहीं करते थे। उन्होंने विद्वत्ता के बल से वाक् पटु विद्वान् पूज्य पण्डित रामचन्द्र जी देहलवी जैसे शान्ति के सरोवर पैदा किये।

जिन्होंने जाति को जीवन प्रदान कर मातृ भूमि का भाल ऊँचा किया। उन्होंने ही अपने कर कमलों से संस्कृत साहित्य का प्रसार करने हेतु सिकन्दराबाद में गुरुकुल स्थापित किया, और अपने तीनों पुत्रों को भी उस ही में प्रविष्ट कर प्रकाण्ड पण्डित बनाया, जो समाज सेवा के लिए सदैव बलिदान देने और यत्न करने वाले बने। हम इन तीनों को भी अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखते हैं।

मुरारिलाल मुल्लों के मुक़ाबले में मोदित हुए
मोहनी मुद्रा को लिये मन्द मुस्काते थे।
क़ाज़ी थे कठोर, शोर करते थे कुचाली क्रूर
कायरता के शब्द उनके काटने को आते थे
देख भुज दण्ड थे विशाल ताल ठोक करके
वेद की हुँकार से शृंगालों को भगाते थे
बिछुड़े हुए भाई, जो प्रेम का प्रभाव देख
दोनों हाथ जोड़ करके शुद्ध होने आते थे
धन्य हो मुरारिलाल! तेरे संग वृद्ध बाल
शुद्ध करके धर्म हेतु गले से लगाते थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को २३ दिसम्बर १९२६ को अब्दुल रशीद नामक मुसलमान ने अपनी गोली का निशाना बना कर अमर कर दिया। जब यह सूचना श्री पण्डित जी को मिली तो उन्होंने अपना जीवन इसी शुद्धि कार्य के लिये अर्पित कर दिया और आगरा जाकर सांधन गाँव के मुसलमानों के हृदयों को एक ही व्याख्यान के प्रभाव से बदल कर रख दिया। मुझ पर पण्डित जी की बड़ी कृपा और स्नेह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रहता था। उनकी मृत्यु का समाचार पाकर शोकाकुल हृदय के साथ ओ३म् का झंडा लेकर सारे शहर में मैं ही ऐलान करने गया था। उनकी शव यात्रा में लोग पवित्र वेद मन्त्रों का उच्चारण करते चल रहे थे। हज़ारों नर नारी आँसू बहाते हुए कह रहे थे कि आज आर्य समाज का शास्त्रार्थमहारथी, तपस्वी, विद्वान् भी अपना कार्य पूरा कर स्वर्ग सिधार गया। जो हँस हँस कर शास्त्रार्थ में विपक्षियों को निरुत्तर कर दिया करता था। उसके स्थान की पूर्ति अब कैसे होगी आदि शब्दों से दुःख प्रकट करते जाते थे। ऐसे अनेक शक्ति सम्पन्न महामानव के चरणों में [illegible]र बार प्रणाम है।

१. यः शास्त्रार्थमहार[illegible] निरुपमोयस्तर्क पञ्चाननो
योनैयायिकतल्लजा ऽप्रतिरथो योवाग्मि वीराग्रणीः
स्थातुंयस्यपुरोनशेकुररयः शास्त्रार्थ वाक् संगरे
प्रत्युत्पन्नमतिर्गतो नरवरोवन्द्यो मुरारिः सुधीः

२. शान्तोऽभूत्स विधर्मिकम्पकरणो गम्भीर मन्द्रस्वरः
लुप्तासा परिहास रम्य रुचिरा मूर्तिः प्रसन्नासदा
तेजस्व्यार्यसमाज अभ्यनभसो नक्षत्रमन्तर्दधौ
जाताचाद्य विनाथदुःखविधुरा शास्त्रार्थ विद्यापरा

३. यत्तीव्रोग्र सुतर्क वाण पतनं नापारि सोढुं परैः
यद्गम्भीर रवं विपक्ष सुभटैः श्रुत्वारणाद्विद्रुतम्
तुङ्गं वैदिकधर्म गौरवमयं केतुंच योऽदीधरत्
हा! हा! हन्त!! गतस्स पण्डितवरो वन्द्योमुरारिः सुधीः

तेषाम् गुणगान कर्ता
पीयूष पाणी, राजवैद्यो, मूलचन्द्रार्यः
(इन्द्रप्रस्थीयः)

अनुवाद

(१) श्री पं० मुरारिलाल जी, शास्त्रार्थ महारथी, निरुपम (बेमिसाल) तार्किकों में सिंह के सदृश थे। वे महान् नैयायिक, उनकी गति अबाध थी। (गति उनकी रुकने वाली न थी) वे वक्ताओं में वीर, अग्रणी थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रार्थ के युद्ध में शत्रुजन उनके सम्मुख नहीं ठहर सकते थे। वे बड़े बुद्धिमान्, वक्ता और प्रत्युत्पन्नमतिथे, अर्थात् समय की सूझ बूझ उनकी हुत अच्छी थी। वे अब इस संसार को त्याग कर चले गये। उनकी म वन्दना करते हैं।

(२) वे बड़े शान्त स्वभाव थे। विधर्मियों को वे कम्पायमान करते । गम्भीर प्रकृति और मन्द स्वर के व्यक्ति थे। वे सदा प्रसन्न वदन, हँसमुख, सुन्दर मूर्ति संसार को छोड़ कर लु... गए।

आर्य समाज रूपी सुन्दर आकाश के ...्यमान नक्षत्र, तेजस्वी, श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा अन्तर्ध्यान हो गये। और उनके बिना ...स्त्रार्थरूपी अपरा विद्या, आज दुःख के साथ अनाथ होकर विधुरा (विधवा) हो गई है।

(३) विपक्षी लोग उनके तीव्र और उग्र तर्क रूपी बाणों के प्रहार ...हन न कर सकते थे। उनकी गम्भीर वाणी को सुन कर विपक्षी ...ास्त्रार्थ रूपी युद्ध को छोड़ कर भाग जाते थे। उन्होंने वैदिक ...ी ध्वजा को उच्च स्थान देकर धारण किया। बुद्धिमान् पण्डितों श्रेष्ठ श्री मुरारिलाल जी शर्मा इस संसार को छोड़ कर चल बसे। ...ह महान् दुःख की बात है। उस महापुरुष की हम वन्दना करते हैं।

—:o:—

...ी पं० शिवदयालु जी पूर्व मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

आर्य-वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर हरिद्वार की

श्रद्धाञ्जलियाँ

लगभग ४७-४८ वर्षों से अधिक पुरानी बात है एक दीपमालिका ...र्षि निर्वाण-पर्व पर स्व० श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा आर्य समाज ...रठ में पधारे हुए थे। उनके भोजन की व्यवस्था मेरे यहाँ ... पण्डित जी से पूछा कि रोटी कच्ची खाएँगे या पक्की? ...ले कि कच्ची रोटी तो मैं पचा न सकूँगा और कहा कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज तो दिवाली है दिन में चूरमा पूरी कचौड़ी बनी होंगी वही खा लूँगा। मेरे लिये अब चूल्हा जलाने की ज़रूरत नहीं। अपनी माता जी को वृथा कष्ट क्यों देते हो। पण्डित जी में अपने अभीष्ट को व्यक्त करने की सुन्दर कला थी, उनकी इच्छानुसार भोजन कराया। बाद में बोले कि देखो आज महर्षि दयानन्द का निर्वाण पर्व है। उस ऋषि ने हमारी खातिर अपने जीवन का बलिदान किया है और हँसते हँसते तथा परमात्मा का स्मरण करते करते वह जगज्जननी की अमृतमयी गोद में समा गया है। तुम आर्य हो। तुम्हें उस ऋषि का ऋण चुकाना है। रात्रि को सोने से पहले गायत्री का जाप करना और सोचना कि ऋणसे उद्धार पाने के लिये तुम्हें क्या करना है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और सत्यार्थ प्रकाश का आज से गहन अध्ययन करने का व्रत लो। श्री पण्डित जी का वह उपदेश मुझे निरन्तर याद रहता है। अपनी जेल यात्राओं में भी मैंने सत्यार्थ प्रकाश सदा अपने साथ रखा, और आज दिन तक उसको कम से कम १० बार आलोचनात्मक दृष्टि से ध्यानपूर्वक पढ़ा। तभी सनातनी पण्डित की लिखी दयानन्द तिमिर-प्रकाश पुस्तक पढ़ी, फिर तिमिर भास्कर प्रकाश पढ़ा और स्वामी जी के विचारों का गहन अध्ययन किया। यह सब स्वर्गीय पण्डित मुरारिलाल जी शर्मा के उस दिन के उपदेश का ही प्रभाव है। मैं स्वर्गीय पण्डित जी के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत करता हूँ।

—:०:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. प्रति ग्राम झंडा ओम् का जिन करों की शोभा बना।
कर दीं अनेकानेक आर्य समाज की स्थापना॥
उन आर्य हाथों की धरोहर सी अनोखी याद है।
फूली फली सुमनस्थली गुरुकुल सिकन्दराबाद है॥

७. स्वामी दर्शनानन्द का सांनिध्य उनको प्राप्त था।
आदर्श ऋषियों का सदा उनके हृदय में व्याप्त था॥
श्रद्धेय श्रद्धानन्द-पथ के, पथिक थे माने हुए।
उनकी तपस्या से हज़ारों, शुद्ध मलकाने हुए॥

८. निर्भीक योधा थे कभी डरते न थे वे काल से।
सीखा न समझौता कभी, पाखण्ड से भ्रम जाल से॥
संसार की चिन्ता न थी, व्यापार की चिन्ता न थी।
वह लगन थी जिसमें कभी घर बार की चिन्ता न थी॥

९. पावन पताका ओम् की सर्वत्र लहराते रहे।
आदेश आर्य समाज का प्रति ग्राम पहुँचाते रहे॥

१०, ऊँचा उठा कर आर्य जननी जन्म भू के भाल को।
शोभित हुए हर काल में, धारण किये जयमाल को॥
उन सत्य वक्ता, सत्य पोषक, सरल हृदय विशाल को।
श्रद्धाञ्जलि सादर समर्पित श्री मुरारीलाल को॥

—:०:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महोपदेशक पं० रामदयालु जी शास्त्री

तर्क शिरोमणि, शास्त्रार्थ महारथी अलीगढ़ का

संस्मरण

समय पचास वर्ष से अधिक हो रहा है, जब मैं खुर्जा में पूज्य गुरुवर श्री पं० चण्डी प्रसादजी शुक्ल के चरणों में बैठकर व्याकरण मध्यमा परीक्षा दे रहा था। गुरुजी महाराज वास्तव में विद्या के सूर्य थे किन्तु कट्टर पौराणिक थे। आर्य समाज के प्रशंसक नहीं थे, और यथासंभव छात्रों को आर्य समाज के सम्पर्क में जाने से रोकते थे।

मुझे जहाँतक स्मरणहै श्रावण भाद्रपद के दिन थे कि खुर्जे के बाज़ार में बड़े ज़ोरं-शोरसे मुनादी हो रही थी, श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा के भाषण की। यह मुनादी अन्य मतावलम्बियों को चैलेंज का रूप था। मैं अपने एक सहपाठी चन्द्रशेखर के साथ श्री पंडितजी के भाषण में पहुँच गया। मैं यह कह सकता हूँ कि इस प्रकार का भाषण मैंने प्रथम बार सुना था। खुर्जा शहर को विद्या की दृष्टि से छोटी काशी कहा जा सकता है, किन्तु श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा की दहाड़ के आगे पाठशालाओं के धुरन्धर विद्वानों के भी होश उड़ जाते थे। सामने आने की हिम्मत नहीं होती थी। श्री पंडितजी के भाषण में आकर्षण था, और मैं आकर्षित हुआ। पूज्य गुरुदेव शु[illegible] जी असन्तुष्ट हो गये, मुझे डांट डपट भी करते रहे, किन्तु जो ब[illegible] श्री पंडितजी के भाषण में सुन के आता गुरुजी से और छा[illegible]

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
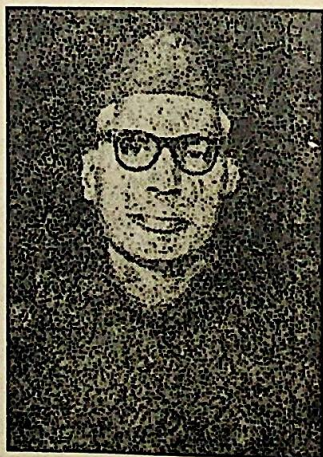
प्रश्न करता। पूज्य गुरुजी ने नटखट के नाम से मुझे प्रसिद्ध कर दिया। अब जब कोई आर्य समाज का प्रचारक आता, उसे सुनने मैं अवश्य जाता था। श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा के भाषणों में तो कभी अनुपस्थित नहीं होता था। श्री पंडितजी की प्रेरणा से मैंने सत्यार्थ प्रकाश ले लिया। इससे गुरुजी से मुझे बहुत सुनना पड़ा, और साथी विद्यार्थियों ने भी मेरी बुरी हालत कर दी। किन्तु मैं बोलने में निर्भय हो गया था। संयोगवश सेठ गौरीशंकरजी के विद्यालय में श्री गुरुजी की अध्यक्षता में एक सभा हुई। सभा की समाप्ति पर अध्यक्ष को भाषण करना था, किन्तु गुरुजी काँपने लगे, और एक शब्द भी न बोल सके। मैं खड़ा हो गया और कहा कि जब गुरुजी के शिष्य बैठे हैं तो गुरुजी महाराज को बोलने की क्या आवश्यकता है। मैंने उस समय वह सब कुछ कह दिया जो गुरुजी को कहना चाहिये था। गुरुजी ने प्यार करते हुए कहा, तू एक दिन अच्छा वक्ता बनेगा। मैंने उसी उद्दण्डता से कहा—गुरुजी यह सत्यार्थ प्रकाश की और श्री पंडित मुरारिलालजी शर्मा की ही कृपा है।

वास्तव में आर्य समाज में मेरे आने का श्रेय श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा के भाषणों को है। मैं कई बार अपने प्रवचनों में कह देता हूँ कि आर्य समाज की दीक्षा देने के लिये मैं स्वर्गीय श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा को अपना गुरु मानता हूँ। श्री पंडितजी अधिक तो इस्लाम और ईसाइयत का खण्डन करते थे, किन्तु पौराणिक साहित्य पर भी उनका उतना ही अधिकार था। वे बड़े निर्भीक और [illegible]जस्वी वक्ता थे। उनकी तर्क शैली इतनी विलक्षण थी कि सुनने [illegible]ले प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते थे। स्वर्गीय पंडितजी ने उन [illegible]नों में आर्य समाज का कार्य किया जब चारों ओर से विरोध हो रहा था। श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा एक कर्मठ बिद्वान् प्रभावशाली व[illegible] और अथक कार्यकर्ता थे। उनकी यशोगाथा गाई नहीं जा [illegible] मैं नतमस्तक होकर अपनी श्रद्धाञ्जलि स्वर्गीय पंडितजी के अ[illegible]र्पित करता हूँ।

—:०:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक
श्री विष्णुदेवशास्त्री बम्बई

तस्मै नमोगुरुवराय पुनः पुनर्नः

(१)

विज्ञानवेद विमुखान् सकलान् विजित्य,
वेदार्थमेव भुवि सत्यमिदं विविच्य,
छात्रान् बहून् गुरुकुले सुधियो विधाय,
कीर्तिंससर्ज तमहँ सततं नमामि,

(२)

जात्या विरोधमपि यः कृतवान् मनस्वी,
धर्मं सदैव सुहितं प्रसभं ररक्ष,
स्वीयं विहाय परिवारहितं समस्तम्,
तस्मै नमो गुरुवराय पुनः पुनर्मे,

(३)

स्वार्थं निहत्य मतिमान्श्रुतिमात्रमिच्छन्,
सर्वत्र वेदवचनानि समर्थयँश्च,
विस्मृत्य सौख्यमपि जीवन रक्षणाय,
कीर्तिं ससर्ज तमहं सततं नमामि,

(४)

अद्यापि तद्गुरुकुलं यदिजीवितंनः,
अत्रास्ति कार्यमखिलं भवतो निदानम्,
देशे विशिष्ट पदवीं कवयोदधानाः,
विद्वन् ! तवैव गुरुतां विशदां वदन्ति,

(५)

पुण्यानि सन्ति तनया भवतां पवित्राः,
विद्वान्स ऐहिक सुखैर्भरिता महान्तः,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोड़ उत्तर देने वाले, शास्त्रार्थ महारथी, श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा को कौन नहीं जानता।

(२)

जिनकी स्मित पूर्वाऽभिभाषिता से प्रभावित होकर जनता में नया उत्साह संचारित हो जाता था। जिनकी तर्क शक्ति से अच्छे अच्छे ईसाई प्रचारक परास्त हो जाते थे, उन्हें कौन नहीं जानता।

(३)

जो मुस्लिम मतावलम्बी, मौलवियों को निरस्त करने में चतुर थे, जिनका सारे भारतवर्ष तथा विदेशों में नाम था—उन्हें हम शोकाकुल होकर श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं॥

(४)

जो गुरुकुल सिकन्दराबाद के संचालक तथा परिपोषक थे, जो अतिथि सेवा में निपुण थे, तथा जो गुरुकुल के संरक्षण के लिये अपना जीवन अर्पित कर चुके थे, उन्हें कौन नहीं जानता।

(५)

जिन्होंने आर्य जनता के उपकार के लिये तथा महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रचार के लिए अनेक पुस्तकों की रचना की उनको कौन नहीं जानता।

(६)

जो सदा प्रसन्न मुख रहते थे, जिन्हें घोर से घोर आपत्तियों में भी मुस्कराते ही देखा गया, जिन्हें विषाद रेखा छू भी न सकी, जिन्होंने सर्व प्रथम उपजाति बन्धन को तोड़कर ब्राह्मण मात्र के ऐक्य की उच्चध्वनि की उन्हें कौन नहीं जानता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७)

जिनकी मधुर वाणी रसपूर्ण थी, तथा जिनकी ललित कलायुक्त व्याख्यानमाला को सुनकर विधर्मी भी अपनी शुद्धि कराके आर्य मत दीक्षित हो जाते थे, उन्हें कौन नहीं जानता।

(८)

श्री पं० मुरारिलाल जी शर्मा, शास्त्रार्थ में सूर्य सदृश, श्रेष्ट वचनों के कथन में चन्द्र के समान, व्याख्यान में चतुर, पुराणों के ज्ञान में दिव्य प्रतिमा वाले थे, विश्व में जिनके गुण प्रख्यात हैं। सदा ही गुरुकुल सिकन्दराबाद के लालन पालन में उन्होंने अपनी समस्त आयु व्यतीत की ऐसे श्रेष्ठ बुद्धिमान् पुरुष श्री शर्मा जी को हम बारम्बार नमस्कार करते हैं तथा वे सभी के वन्दनीय हैं।

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.